चालाक खरगोश अफ्रीका में

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता
2022

Cover Title : Chalak Khargosh Africa Mein (Cunning Rabbit in Africa)
Cover Page picture: Rabbit
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Africa

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

चालाक खरगोश अफ्रीका में 7

1 चालाक खरगोश 9

2 खरगोश और अनाजघर 15

3 शेर का राज्य मन्त्री 21

4 हमेशा के लिये गया पेड़ 27

5 मूटला और फिरी 33

6 बन्दर और खरगोश 43

7 टर्की और खरगोश को न्याय मिला 50

8 सबसे बड़ा योद्धा 59

9 शेर, बड़ा खरगोश और हयीना 68

10 सुलतान सूले 74

11 कछुए और बड़े खरगोश की दौड़ 90

12 शिकारी और शेर 94

13 चीते हिरन को क्यों ढूँढते रहते हैं 101

14 खरगोश अक्लमन्द कैसे बना 114

15 बादलों में माँ 119

16 बड़ा खरगोश और आत्मा 128

17 बद्दुआ वाली बद्दुआ 135

18 बड़े खरगोश की गन्दी चालें 142

19 बादल की राजकुमारी 166

20 शेर हयीना और खरगोश 184

21 बन्दर, शार्क और धोबी की गधी 189

22 खरगोश और शेर 199

23 खरगोश का बदला 210

24 बड़े खरगोश की कहानी 216

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

चालाक खरगोश अफ्रीका में

दुनियॉ के हर समाज की लोक कथाओं में कोई न कोई चालाक होता है। यह चालाक कोई जानवर भी हो सकता है और कोई आदमी भी हो सकता है। भारत में खरगोश और लोमड़ी बहुत चालाक जानवर माने जाते हैं और गीदड़ बहुत ही डरपोक। पश्चिमी अफ्रीका के नाइजीरिया और घाना आदि देशों में यह काम अक्सर अनन्सी मकड़ा और अजापा कछुआ करते हैं।

उत्तरी अमेरिका के आदिवासियों की अलग अलग जातियों में अलग अलग चालाक होते हैं कहीं खरगोश होता है तो कहीं भेड़िया, तो कहीं लोमड़ी अक्सर यह काम करती है पर उसके पश्चिम की ओर जाने पर यह काम कायोटी, एक छोटा सा रेगिस्तानी भेड़िया, करता है। उल्लू, कछुआ, सॉप आदि भी यह काम करते हैं परन्तु अमेरिका में दक्षिण पश्चिम की ओर जाने पर यह काम टारनटूला और निहानकन मकड़े[1] करते है।

खरगोश एक ऐसा जानवर है जिसकी लोक कथाएॅ सारी दुनियॉ में पायी जातीं हैं – अमेरिका में, एशिया में, अफ्रीका में। सारी दुनियॉ में पायी जाने की वजह से इसकी लोक कथाऐं हैं भी बहुत सारी। अधिकतर कथाओं में यह चालाक और होशियार दोनों प्रकार का जानवर दिखायी देता है। जो काम बड़े बड़े जानवर नहीं कर सकते वह यह काम बिना किसी मुश्किल के और जल्दी से कर देता है। अपना काम करने में यह होशियार भी बहुत है।

इस पुस्तक में हम अफ्रीका के अलग अलग देशों से ली गयी खरगोश की कई कथाऐं दे रहे हैं। अक्सर तो यह बिना नाम के ही आता है पर कहीं कहीं इसका नाम भी है जैसे दक्षिण अफ्रीका में इसका नाम सॅूगूरू है। वहॉ के बड़े खरगोश[2] का नाम ऐमवॅूडला[3] है।

आशा है कि खरगोश की ये कथाऐं तुम लोगों को पसन्द आयेंगीं और तुम्हें कुछ सिखायेंगी भी।

---

[1] Tarantula and Nihankan Spiders

[2] Translated for the word “Hare”. Hare is a bit bigger than ordinary rabbit.

[3] Mvundla is the name of hare there in South Africa.

1 चालाक खरगोश[4]

यह लोक कथा खरगोश की चालाकी की एक सुन्दर लोक कथा है जिसे हमने अफ्रीका की लोक कथाओं से लिया है।

एक बार की बात है कि एक खरगोश और एक आदमी दोनों एक ही गॉव में रहते थे। इस आदमी का मकान बहुत सुन्दर था। गॉव के सभी लोग उस आदमी के मकान से ईर्ष्या करते थे।

और खास तौर पर यह खरगोश तो उसके मकान से बहुत ही ज़्यादा ईर्ष्या करता था क्योंकि उसको उस आदमी का मकान बेहद पसन्द था। वह इस मकान को देख कर हमेशा यही सोचता कि किस तरह इस आदमी का मकान हड़पा जाये।

एक दिन वह खरगोश उस आदमी के पास पहुॅचा और बोला — "आदमी भाई, तुम्हारा मकान तो बहुत ही बेकार है।"

आदमी को उस खरगोश के मुॅह से यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि उसको मालूम था कि गॉव भर में उसका मकान सबसे सुन्दर है और सभी उसके मकान से जलते हैं और यह खरगोश उसके मकान को बेकार कह रहा है।

फिर भी वह धीरज रख कर बोला — "क्यों खरगोश भाई, मेरा मकान बेकार क्यों है?"

[4] The Cunning Rabbit – a folktale of Africa

खरगोश बोला — "इसलिये कि तुम्हारे मकान में केवल एक ही दरवाजा है। मान लो कि अगर तुम्हारे मकान में कोई दुश्मन घुस आये तो तुम किस रास्ते से भागोगे?

मेरा मकान देखो, यह तुम्हारे मकान से कहीं ज़्यादा सुरक्षित है। मेरे मकान में छह दरवाजे हैं। किसी भी दरवाजे से मेरा दुश्मन आये मेरे पास पॉच दरवाजे हैं भागने के लिये। पर तुम्हारे घर में तो केवल एक ही दरवाजा है, तुम किधर से भागोगे?"

उस आदमी ने तो इस बारे में कभी सोचा भी नहीं था। वह यह सब सुन कर सोच में पड़ गया कि खरगोश तो ठीक कह रहा है। मेरे दुश्मनों की गिनती तो खरगोश के दुश्मनों से भी ज़्यादा है। मुझे तो सचमुच में खरगोश से भी कहीं ज़्यादा दरवाजों की जरूरत है।

वह खरगोश से बोला — "खरगोश भाई, यह तो तुम ठीक कह रहे हो। मेरे दुश्मन तो तुम्हारे दुश्मनों से भी बहुत ज़्यादा हैं। तो अगर तुम बुरा न मानो तो क्यों न हम आपस में अपने घर बदल लें?"

खरगोश तो इसी मौके की तलाश में था पर आदमी को दिखाने के लिये उसने ऐसे बहाने बनाये जैसे कि उस आदमी का घर बिल्कुल ही बेकार हो और वह उसको अपना घर देना ही न चाहता हो।

पर बाद में वह यह कहते हुए राजी हो गया — "आदमी भाई, तुमने ठीक ही सोचा। तुमको मेरे मकान की मुझसे ज़्यादा ज़रूरत है। मेरा क्या है, मैं तो किसी तरह तुम्हारे मकान में गुज़ारा कर लूँगा। इसलिये तुम मेरा मकान ले लो और मैं तुम्हारा मकान ले लेता हूँ।"

और इस तरह से खरगोश ने उस आदमी का मकान हड़प लिया। अब वह आदमी खरगोश के छह दरवाजे वाले मकान में आ गया और खरगोश आदमी के एक दरवाजे वाले मकान में चला गया।

पर खरगोश को हमेशा यही डर लगा रहता कि कहीं आदमी उससे अपना मकान वापस न माँग ले। उसने अपने इस डर की भी तरकीब सोच ली। उसने सोचा कि क्यों न आदमी को हमेशा के लिये खत्म कर दिया जाये। न होगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

उस आदमी के पास एक भेड़ थी। एक दिन खरगोश उस आदमी से बोला — "आदमी भाई, तुमको तो भेड़ पालना भी नहीं आता। देखो न तुम्हारी यह भेड़ कितनी कमजोर है। अगर तुम इस भेड़ को कुछ दिन के लिये मुझे दे दो तो मैं तुमको इसे मोटा कर के दे सकता हूँ।"

आदमी बोला — "खरगोश भाई, मैं तो तुम्हारे एहसान तले पहले से ही कितना दबा हुआ हूँ। यह तो तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी कि तुम मेरी भेड़ को मोटा कर दोगे।

पता नहीं मैं तुम्हारा कर्जा कैसे चुका पाऊँगा। पहले तुमने मुझे अपना यह छह दरवाजों वाला मकान दिया और अब तुम बिना कुछ लिये दिये मेरी भेड़ को भी मोटा करने के लिये कह रहे हो।"

खरगोश मन ही मन खुश होता हुआ बोला — "नहीं आदमी भाई, इसमें इतना कर्जदार होने की कोई बात नहीं है। दुनियॉ में एक दूसरे के काम आना ही सच्ची इन्सानियत है और मैं इसी का पालन करने की कोशिश कर रहा हूँ।

अगर मैं किसी तरह भी तुम्हारे काम आ सकूँ तो इससे अच्छी मेरे लिये और क्या बात होगी।"

खरगोश की ऐसी अच्छी बातें सुन कर आदमी तो बहुत ही खुश हो गया। उसने खुशी खुशी अपनी भेड़ खरगोश को दे दी और खरगोश भी खुशी खुशी उस भेड़ को ले कर अपने घर आ गया।

उस दिन खरगोश के घर में उस भेड़ से एक बहुत बड़ी दावत हुई। बहुत दिनों बाद खरगोश ने इतना स्वाददार खाना पेट भर खाया सो खा पी कर वह तान कर सो गया।

कुछ दिन बाद आदमी ने सोचा कि अब तो उसकी भेड़ खूब मोटी हो गयी होगी अब उसको जा कर उसे ले आना चाहिये। सो एक दिन वह खरगोश के घर पहुँचा और उससे अपनी भेड़ के बारे में पूछा।

खरगोश बोला — "कहो आदमी भाई, कैसे हो? तुम्हारी भेड़ तो अब खूब मोटी हो गयी है और देखने में भी खूब ताकतवर हो गयी है। अभी वह घास चरने गयी है, फिर किसी दिन आ कर ले जाना उसे।" आदमी यह सुन कर खुशी खुशी घर वापस आ गया।

कुछ दिन बाद आदमी फिर लौटा। इस बार खरगोश ने बताया कि उसकी भेड़ तो अब इतनी मोटी और ताकतवर हो गयी है जैसे शेर। वह अभी अभी रस्सी तुड़ा कर भाग गयी है।

ऐसा करो कि तुम कल सुबह चार बजे आ जाओ। अबकी बार मैं उसे बॉध कर रखूँगा और कल सुबह तुम्हें उसे दे दूँगा।"

यह सुन कर तो आदमी बहुत खुश हुआ कि अब उसे उसकी भेड़ कल मिल जायेगी और वह अपने घर चला गया।

अब खरगोश अपने काम में लग गया। उसने अपने घर के सामने एक बड़ा सा गड्ढा खोदा और एक बड़ा सा रोलर उसके किनारे पर रख दिया।

अगली सुबह वह आदमी सुबह सवेरे चार बजे ही खरगोश के घर आ पहुँचा। खरगोश ने उसे गड्ढे में छिप जाने के लिये कहा ताकि भेड़ उसे देख कर रस्सी तुड़ा कर फिर से न भाग जाये।

वह बेवकूफ आदमी उस गड्ढे में छिप गया। उधर खरगोश ने वह बड़ा रोलर गड्ढे पर चला दिया जिससे वह आदमी मर गया। जब उसकी पत्नी उसके बारे में पूछने आयी तो उसने उसको भी इसी तरह मार डाला।

बस अब क्या था, चालाक खरगोश आराम से उस आदमी के मकान में बिना किसी रोक टोक के रहने लगा। इस तरह उसने उस आदमी का मकान भी ले लिया और उसकी भेड़ भी खा ली।

2 खरगोश और अनाजघर[5]

यह बहुत पुरानी बात है जब जानवरों के भी वैसे ही खेत हुआ करते थे जैसे आजकल आदमियों के होते हैं।

उन दिनों जानवर भी जमीन जोतते थे, बीज बोते थे, फसल उगाते थे और फसल काटते थे फिर उस अनाज को छोटी छोटी मिट्टी की झोंपड़ियों में भर कर बन्द कर के रख लेते थे।

उन झोंपड़ियों में दरवाजा नहीं होता था बल्कि नीचे की ओर जमीन के पास एक गोल छेद होता था। वे लोग उसी छेद में से अपना अनाज निकालते थे।

एक बार एक खरगोश और कुछ दूसरे जानवरों ने मिल कर अपने खेत पर बड़ी मेहनत से काम किया। बारिश का मौसम निकल जाने पर फसल पक गयी तो उन्होंने अनाज काटा और इकट्ठा कर के अपने छोटे छोटे अनाजघरों में रख दिया।

एक दिन जब वे आग के चारों ओर बैठ कर अपनी थकान दूर कर रहे थे तो उन्होंने आपस में कहा — "हमारा काम तो खत्म हो गया अब यह गर्मी का मौसम हम कहाँ बितायेंगे?"

[5] Rabbit and Grain House – a folktale of Africa

खरगोश चालाकी से अपनी उँगलियाँ और आँखें नचाता हुआ बोला — "मैं तो बहुत दूर अपने एक रिश्तेदार के पास जा रहा हूँ उस जगह का नाम है सिट इन काउबिन[6]। मैं अपनी छुट्टियाँ वहीं बिताऊँगा और मैं वहाँ अकेला ही जाऊँगा।"

दूसरे जानवरों ने भी अपनी अपनी जगहें सोच कर तय कर रखी थीं कि वे अपना गर्मी का मौसम कहाँ बितायेंगे।

सो अगले दिन उन्होंने अपने अपने बैलों को बाँधा और अपनी अपनी जगहों को चल दिये। उनको यह मालूम था कि उनकी फसल बहुत अच्छी हुई थी और वे अपने अपने बैलों को ठीक से खिला पिला पायेंगें सो उसकी उनको चिन्ता नहीं थी।

"अच्छा विदा, अब जब हम लौटेंगे तो हमारे पास खूब तो खाने के लिये होगा और खूब सारा बीज होगा फसल उगाने के लिये।" यह कह कर खरगोश वहाँ से चल दिया।

पर वह कहीं गया नहीं बल्कि वह कुछ दूर जा कर एक पेड़ के पीछे छिप कर बैठ गया और दूर से ही दूसरे जानवरों को वहाँ से जाते हुए देखता रहा।

जैसे ही वे सारे जानवर वहाँ से चले गये वह पेड़ के पीछे से निकल आया और एक अनाजघर में जा कर बैठ गया। अब क्या था खरगोश था और खाना था।

[6] Sit in Cowbin

खाना और सोना, खरगोश को भी बस अब वहॉ दो ही काम थे। कुछ दिनों में ही उसने पहला अनाजघर खाली कर दिया।

पहले अनाजघर का अनाज खा कर और फिर उस अनाजघर को कूड़े कबाड़ से भर कर वह दूसरे अनाजघर की तरफ चला गया।

वहॉ भी उसने कई दिन आराम से बिताये और फिर उस अनाजघर को भी खाली करने के बाद उसने उसे भी कूड़े कबाड़ से भर दिया।

इस तरह गर्मी खत्म होने और पहली बारिश शुरू होने तक उस खरगोश ने सब जानवरों के सारे अनाजघर खाली कर दिये और उन सभी को कूड़े कबाड़ से भर दिया। इस तरह वह चालाक जानवर गर्मी भर में वह सारा अनाज खा गया जो उसका नहीं था।

कुछ दिनों बाद सभी जानवर गर्मी बिता कर वहॉ लौटने लगे पर खरगोश का कहीं पता नहीं था। उन्होंने आपस में एक दूसरे से पूछा भी कि वह कहॉ हो सकता था परन्तु किसी को उसका पता ही नहीं था।

वैसे हर बार वह पहली बारिश के साथ ही वापस आ जाया करता था पर इस बार उसका कहीं पता नहीं था।

उन जानवरों में से एक बोला — "शायद वह कहीं बहुत दूर चला गया है, उसने उस जगह का नाम सिट इन काउबिन बताया

था। अगर हम उसे ज़ोर से पुकारें तो वह अगर कहीं रास्ते में होगा तो जरूर बोल पड़ेगा।"

यह सुन कर सभी जानवर ज़ोर से चिल्लाये — "खरगोश भाई, खरगोश भाई, तुम कहॉ हो?"

अब खरगोश तो बहुत दूर था नहीं, वह तो पास की झाड़ी में ही छिपा बैठा था सो वहीं से वह ऐसे बोला जैसे कहीं बहुत दूर से बोल रहा हो — "मैं आ रहा हूॅ भाइयो मैं आ रहा हूॅ।"

सभी जानवर खुशी से बोले — "देखा, वह अभी दूर है मगर उसने हमारी आवाज़ सुन ली है।"

वे फिर ज़ोर से चिल्लाये — "खरगोश भाई, तुम कहॉ हो?"

खरगोश भी ज़ोर से बोला — "मैं आ रहा हूॅ भाइयो मैं आ रहा हूं।" और कहते के साथ ही वह हॉफता सा उनके सामने आ खड़ा हुआ मानो वह बहुत दूर से आ रहा हो।

तभी एक जानवर बोला — "हम सभी यहॉ हैं इसलिये हमें चल कर अपने अपने अनाजघर देख लेने चाहिये कि वहॉ हमारा अनाज ठीक से रखा है या नहीं।"

खरगोश बोला — "भाई मैं तो बहुत दूर से आ रहा हूॅ, थका हुआ हूॅ अभी कुछ नहीं कर सकता, अभी तो मैं केवल लेटना और आराम करना चाहूॅगा।" कह कर वह थोड़ी दूर पर लगे एक घने पेड़ की छॉह में लेट गया।

अब क्या हल्ला गुल्ला मचा जब सब जानवरों ने अपने अपने अनाजघरों में झॉक कर देखा। किसी भी जानवर के किसी भी अनाजघर में अनाज नहीं था सभी अनाजघरों में कूड़ा कबाड़ भरा पड़ा था।

"कौन चुरा सकता है हमारा अनाज?"

"अब हम अपने खेत बिना बीज के कैसे बोयेंगे?"

"यह चोर तो हममें से ही कोई हो सकता है क्योंकि दूसरा तो कोई यहॉ आ ही नहीं सकता।"

जितने मुँह उतनी ही बातें। वे सब आपस में खूब लड़े, खूब झगड़े, मारा, पीटा, काटा, नोचा, फिर थक कर लेट गये। इतने में रात हो गयी।

गीदड़ बोला — "चलो भाई, सोने चलो, अभी तो नींद आ रही है। चोर को पहचानने की अब बस एक ही तरीका है जिस जानवर पर चॉद सबसे पहले चमकेगा वही चोर होगा।"

वे सभी इस बात पर राजी हो गये क्योंकि वे सब जानते थे कि चॉद धरती पर होने वाली सभी बातें जानता है और वह कभी झूठ नहीं बोलता।

खरगोश ने गिलहरी से प्रार्थना की कि आओ बहिन, तुम यहॉ मेरे पास सो जाओ। मैं आज बहुत थका हुआ हूँ यदि कोई मुझे थोड़ी थोड़ी देर बाद

हिलाता न रहा तो मैं अकड़ जाऊँगा। भली गिलहरी खरगोश के पास आ कर लेट गयी।

सभी थके थे इसलिये सब जल्दी ही सो गये पर खरगोश को तो न थकान थी न नींद। वह तो कई महीनों से हिला भी नहीं था। उसे डर था कि चॉद सबसे पहले उसी पर चमकेगा क्योंकि अनाज की चोरी तो उसी ने की थी। इसलिये वह उसी की तरफ मुँह किये लेटा रहा।

रात को बादल थे सो चॉद देर से निकला पर यकायक उसकी किरनें तीर की भॉति आयीं और लेटे हुए खरगोश पर पड़ीं। वह किरनें गिलहरी पर भी पड़ीं पर खरगोश चुपचाप वहॉ से खिसक गया।

अब खरगोश ने गाना शुरू किया। उसका गाना पहले धीरे था फिर तेज़ हुआ और फिर और तेज़ होता गया। सभी जानवर जाग गये। खरगोश ने ऑखें मलते हुए गिलहरी की तरफ इशारा किया जो अभी भी चॉदनी में बेखबर पड़ी सो रही थी।

जानवरों ने पल भर में उस गिलहरी को पत्थर मार मार कर मार डाला। किसी को भी यह पता न चला कि चोर गिलहरी नहीं खरगोश था।

अब जब भी कोई सिट इन काउबिन के बारे में बात करता तो चालाक खरगोश वहॉ से चुपके से खिसक जाता।

3 शेर का राज्य मन्त्री[7]

खरगोश की अफ्रीका की इस कथा में उसकी अक्लमन्दी साफ झलकती है। यह लोक कथा हमें बताती है कि अपने से ताकतवर के साथ हमें किस तरह से बात करनी चाहिये।

किस तरह अपनी अक्लमन्दी से शेर से अपनी जान बचायी और फिर उसका मन्त्री बन गया। तो लो पढ़ो यह लोक कथा खरगोश की चालाकी की।

बच्चो यह तो तुम जानते ही हो कि शेर जंगल का राजा होता है। पर शायद तुमने यह नहीं सुना होगा कि शेर अपने राज्य के लिये एक नया मन्त्री खोज रहा है। क्यों?

क्योंकि उसका पहला वाला मन्त्री अचानक गायब हो गया। और जानवरों को मालूम था कि वह इस तरह अचानक क्यों गायब हो गया। क्योंकि खास कर के तबसे शेर का वजन भी बढ़ गया था और वह अक्सर अपने दॉत बजाता पाया जाता था।

जानवरों के राज्य में केवल तीन जानवरों की ही हिम्मत थी कि वे शेर के मन्त्री पद के लिये अपनी अरजी दे सकें।

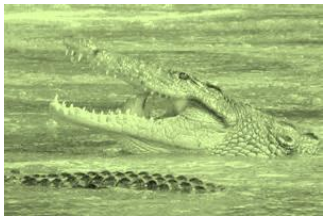

एक तो था मगर – लम्बा, हरा, खूँख्वार और भयानक जबड़े वाला।

[7] Lion's Minister of State – a folktale from Africa. Taken from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=25

दूसरा था भालू – ऊँचा, कत्थई और ताकतवर, खाल में घुस जाने वाले पंजों वाला। और तीसरा था छोटा सा भूरे रंग का बनी खरगोश जो हमेशा जंगल के नियमों का पालन करता था।

शेर ने तीनों को इन्टरव्यू के लिये बुलाया। शेर बोला — "जैसा कि ऐसी नौकरियों में होता है तुम लोगों को इस नौकरी को पाने के लिये एक इम्तिहान पास करना पड़ेगा। अब क्योंकि तुम लोगों में से यहाँ से कोई वापस नहीं जा सकता इसलिये मैं तुम लोगों से केवल एक ही सवाल पूछूँगा।"

शेर ने पुकारा — "मगर, पहले तुम इधर आओ। आओ और मेरी साँस को सूँघो।" कह कर शेर आगे की तरफ झुका और उसने अपनी साँस मगर के मुँह पर छोड़ी।

वह फिर बोला — "क्या यह वैसी ही मीठी है जैसे घास के मैदान में फूल सुबह सुबह खिल रहे हों, या फिर वैसी बदबूदार है जैसे दोपहर के समय सड़ा हुआ माँस?"

मगर का कहने का अपना तरीका था। वह चीज़ें जैसी होती थीं ठीक वैसी ही बोलता था। कोई उससे अपने लिये बहुत अच्छी बात नहीं कहलवा सकता था। सो वह बोला —

ओ जहाँपनाह, अगर आप खुश हैं तो आपकी साँस तो सैंकड़ों पेड़ गिरा सकती है
वह तो हाथी को भी झुका सकती है
पर मैं अपनी नाक मधुमक्खियों से बन्द करना ज़्यादा पसन्द करूँगा
बजाय आपकी बदबूदार साँस सूँघने के।

शेर किसी तरह अपने आपको काबू में रखते हुए बहुत ही शान्ति से बोला — "गलत जवाब मिस्टर मगर, बिल्कुल गलत।"

फिर वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई कि तुम मेरी सॉस को बदबूदार कहो? मैं तुमको अपने राज्य का मन्त्री नहीं रख सकता।

तुम तो हम सबका अपमान कर दोगे और तुम्हारे इस अपमान की वजह से सब हमारे दुश्मन हो जायेंगे और हमारे राज्य में लड़ाई करवा देंगे।" कह कर शेर मगर पर कूद पड़ा और उसे खा गया।

शेर फिर से शान्त हो कर बैठ गया और अबकी बार उसने भालू को बुलाया — "भालू, अब तुम आओ। अब तुम्हारी बारी है और अब तुम्हारा इम्तिहान है। तुम भी मेरी मेरी सॉस को सूँघो।"

कह कर शेर अपना मुँह भालू के पास ले गया और उसके चेहरे पर ज़ोर से अपनी सॉस छोड़ी और उससे पूछा — "क्या मेरी सॉस जंगल के मीठे फूलों की खुशबू जैसी है या फिर यह उन मरी हुई और सड़ी हुई मछलियों की तरह बदबूदार है जो किसी जंगल के रुके हुए पानी वाले तालाब में तैरती रहती है?"

भालू वह सब देख चुका था जो मगर के साथ हुआ था। इसके अलावा वह यह जानता भी था कि शेर की सॉस कैसी है सो उसने झूठ बोलने का निश्चय किया —

ओ जहॉपनाह, कितना अच्छा है आपकी सॉस को सूँघना
यह तो बहुत ही मीठी है जैसे कि बहुत ही स्वादिष्ट मिठाई होती है

आप की सॉस... ओह, अब मैं बिल्कुल झूठ नही बोल सकता
आपकी सॉस तो बहुत बदबूदार है

शेर बोला — "भालू, बिल्कुल गलत जवाब। मुझे अफसोस है कि तुम्हारा जवाब भी बिल्कुल गलत।"

फिर वह चिल्ला कर बोला — "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इतना बड़ा झूठ बोलने की। जब हर आदमी तुम्हारा झूठ सुनेगा तो वह समझेगा कि तुम डर रहे हो। लोग यह समझेंगे कि हम कमजोर हैं और हमारे राज्य पर हमला कर देंगे।"

यह कह कर वह भालू पर कूद पड़ा और उसको भी खा गया।

अब उसने खरगोश को बुलाया और बोला — "अब तुम्हारी बारी है बनी खरगोश। यहॉ आओ और अपना इम्तिहान दो। मेरी सॉस को सूँघो।"

इस बार शेर खरगोश की तरफ झुका और उसने अपनी सॉस उसके ऊपर कुछ आवाज करते हुए फेंकी और पूछा — "क्या यह उन फूलों की तरह से मीठी है जिनसे उनका पराग नीचे गिरता रहता है ताकि मधुमक्खी उससे शहद बना सकें, या फिर यह गिद्ध की चोंच पर लगे सड़े हुए मॉस की तरह बदबूदार है?"

खरगोश अब तक मगर और भालू दोनों का हाल देख चुका था। उसने हवा में अपनी नाक सिकोड़ी, उसको ऊपर हिलाया,

उसको नीचे हिलाया, उसको दॉये हिलाया, उसको बॉये हिलाया और बोला —

ओ जहॉपनाह, मुझे विश्वास है
कि मुझे सच बोलना है मगर इससे पहले कि मैं आपको जवाब दूॅ
मैं आपको बता दूॅ कि आज मुझे बहुत ज़ोर का जुकाम है

अपनी नाक सिकोड़ता हुआ वह आगे बोला — "हॉ मैं ठीक कह रहा हूॅ जहॉपनाह, मुझे जुकाम है। मुझे बहुत ही अफसोस है कि मुझे जुकाम है। शायद जहॉपनाह खुद मुझे यह बतायें कि उनकी क्या राय है तब मैं खुशी से जवाब दे सकूॅगा।"

शेर बोला — "बहुत अच्छा जवाब है। मगर की तरह तुम किसी का अपमान नहीं करोगे और भालू की तरह तुम किसी से वह नहीं कहोगे जो वे सुनना चाहते हैं।

तुम दूसरों की बातों को सुनने के लिये तैयार हो और तुरत सोचते हो। तुम ही मेरे राज्य के नये मन्त्री हो। मैं आज से तुम्हें ही अपने राज्य का नया मन्त्री घोषित करता हूॅ। बधाई हो।"

और उस दिन से बनी खरगोश शेर का राज्य मन्त्री बन गया। बधाई हो चतुर खरगोश।

आजकल तुम लोगों ने छोटे से बनी खरगोश को इधर से उधर कूदते देखा होगा। उस समय वह घूम घूम कर असल में शेर के राज्य के मन्त्री का ही काम कर रहा होता है।

पर जब भी वह रुकता है तो रुक कर अपनी नाक सिकोड़ता है तो वह ऐसा इसलिये करता है क्योंकि उसको जुकाम है।

4 हमेशा के लिये गया पेड़[8]

खरगोश की यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के बोट्सवाना देश में कही सुनी जाती है। हमेशा की तरह से यह कथा भी उसकी अक्लमन्दी की है।

शेर चिल्लाया — "जल्दी भाग शेर, जल्दी भाग। तुझे बहुत जल्दी जल्दी दौड़ना चाहिये। वे जंगली कुत्ते तो तेरे पीछे ही भागे चले आ रहे हैं।"

वे जंगली कुत्ते सारा दिन उस शेर का पीछा करते रहे – चट्टानों के ऊपर हो कर, नदियों में से हो कर, झाड़ियों के बीच में से हो कर, रास्ते पर चल कर।

बेचारे शेर को आराम करने का कहीं कोई मौका ही नहीं मिला। उसको ऐसा लग रहा था कि जैसे ही वह एक तरफ मुड़ता था वहाँ पर कुछ और कुत्ते उसका इन्तजार कर रहे होते थे।

पर आखिर उसने उन कुत्तों से बचने के लिये कुछ समय निकाल ही लिया और किस्मत से उसने उसी समय एक आदमी को एक बड़े से पेड़ के नीचे बैठा देखा।

[8] The Gone Forever Tree – a folktale from Botswana, Southern Africa. Adopted from the Web Site : http://folktales.phillipmartin.info/home_gone_forever01.htm
Collected and retold by Phillip Martin

डरे हुए शेर ने आदमी से प्रार्थना की — "जनाब, क्या आप मेरी कुछ सहायता कर सकते हैं? ये जंगली कुत्ते सुबह से मेरा पीछा करते चले आ रहे हैं। मैं इनसे बचने के लिये भागते भागते इतना थक गया हूँ कि अब मैं एक कदम भी और आगे नहीं जा सकता।"

आदमी बोला — "तुम जल्दी से इस पेड़ के पीछे छिप जाओ। मैं कुत्तों को दूसरी तरफ भेज दूँगा। जल्दी करो तुम जल्दी से इस पेड़ के पीछे छिप जाओ। मुझे उनके पैरों की आवाज साफ सुनायी पड़ रही है। वे बस आते ही होंगे।"

जैसे ही शेर पेड़ के पीछे छिपा कि सामने की झाड़ियों में से कुत्तों का एक झुंड निकल कर आदमी की तरफ बढ़ा।

उनमें से एक कुत्ते ने आदमी से पूछा — "क्या तुमने किसी शेर को यहाँ से जाते हुए देखा है?"

आदमी बोला — "हाँ देखा तो है। वह उधर पहाड़ी की तरफ भाग गया है। अगर तुम जल्दी से उधर भाग कर जाओगे तो मुझे यकीन है कि तुम उसको जरूर ही पकड़ लोगे। वह बहुत थका हुआ लगता था।"

कुत्ते चिल्लाये — "बहुत बहुत धन्यवाद।" और तुरन्त ही वे सब पहाड़ी की तरफ भाग गये।

आदमी अपने मन में हँसते हुए बोला — "मुझे तुम्हारी सहायता कर के बड़ी खुशी हुई।"

जब शेर ने देखा कि कुत्तों का झुंड उसके रास्ते से हट गया है तो वह बहुत खुश हुआ और उसके अन्दर एक नयी हिम्मत आ गयी।

उसने सन्तोष की एक साँस ली और पेड़ के पीछे से निकल आया और अपने पंजों में उस आदमी को जकड़ लिया।

आदमी चिल्लाया — "अरे यह तुम क्या कर रहे हो?"

शेर बोला — "यह तो साफ दिखायी दे रहा है कि मैं तुमको खाने वाला हूँ।"

आदमी बोला — "पर अभी अभी तो मैंने तुम्हारी जान बचायी है।"

शेर बोला — "इसके लिये मैं तुम्हारी बहुत तारीफ करता हूँ और आभारी भी हूँ पर मैं भूखा भी बहुत हूँ और मै अब इतना थक गया हूँ कि मैं अपना खाना ढूँढने कहीं और नहीं जा सकता। और फिर मैं कहीं और जाऊँ भी क्यों? तुम जो मेरे सामने हो।"

आदमी गिड़गिड़ाया — "मगर तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि मैंने तुम्हारी जान बचायी है।"

शेर चिंघाड़ा — "हाँ मैं ऐसा कर सकता हूँ और मैं ऐसा ही करूँगा।"

उसी समय एक बड़ा खरगोश[9] सामने से आता दिखायी दिया। उसने उन दोनों को आपस में बहस करते देखा तो पूछा — "क्या बात है, तुम लोग आपस में क्यों लड़ रहे हो?"

आदमी ने जितनी जल्दी हो सकता था सब कुछ उस बड़े खरगोश को बता दिया।

बड़ा खरगोश मुस्कुराया और बोला — "अगर तुम लोगों को मेरे ऊपर भरोसा हो तो मैं जानता हूँ कि इस समस्या को कैसे सुलझाना है।

ओ भाई आदमी, इस समस्या को सुलझाने के लिये मुझे "हमेशा के लिये गया पेड़"[10] की एक डंडी चाहिये। क्या तुम मुझे उस पेड़ की एक डंडी ला कर दे सकते हो?"

आदमी यह सुन कर वह डंडी लाने के लिये एक झाड़ी की तरफ चला गया पर उसने इस पेड़ का नाम तो पहले कभी सुना नहीं था, सो वह मोफेन के पेड़ की एक डंडी ले कर आ गया।

उस डंडी को देख कर बड़ा खरगोश चिल्लाया — "नहीं नहीं नहीं। अरे आदमी भाई, यह उस पेड़ की डंडी नहीं है जिस पेड़ की

[9] Translated for the word "Hare" - Hare is different from Rabbit in size and look. Hare is not a domestic animal and live on the ground as opposed to Rabbit who is a domestic animal and lives in burrows. See its picture above.

[10] Gone Forever Tree – in fact there was no such tree. The Hare meant that the man should run away from there forever that is why he said this.

डंडी मैं चाहता हूँ। मेरा मतलब उसी से था जो मैंने तुमसे कहा था – यानी "हमेशा के लिये गया पेड़" की डंडी।"

वह आदमी बड़े खरगोश के लिये वह डंडी लाने के लिये एक बार फिर झाड़ियों की तरफ चला गया पर अभी भी उसने उस पेड़ के बारे न कुछ सुना था और न कभी उसे देखा था। सो अबकी बार वह मोकगालो पेड़ की एक डंडी ले आया।

इस बार खरगोश उस आदमी के ऊपर बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "तुम मेरी बात ही नहीं सुन रहे हो आदमी भाई। मुझे "हमेशा के लिये गया पेड़" की एक डंडी चाहिये।

और अबकी बार अगर तुमको उस पेड़ की डंडी न मिले तो "कभी वापस न आओ पेड़"[11] की डंडी भी काम करेगी।"

एक बार फिर से वह आदमी डंडी लाने के लिये झाड़ियों की तरफ बढ़ा।

उस आदमी के जाते ही बड़ा खरगोश शेर से बोला — "यह बेवकूफ आदमी तो सादी सी बात भी नहीं समझता जैसे कि हम और तुम समझते हैं। अगर तुमको कोई ऐतराज न हो तो मैं उसके साथ जा कर उसको वह पेड़ दिखा आऊँ?"

[11] Never Come Back Tree – by saying this the hare meant that "the man should never come back there".

शेर बोला — "नहीं नहीं, मुझे कोई ऐतराज नहीं है। मैं भी तुम्हारे साथ उस पेड़ को देखने चला चलता पर मैं बहुत थका हुआ हूँ।"

"कोई बात नहीं, तुम यहीं आराम करो मैं उसको वह पेड़ दिखा कर आता हूँ।" सो वह बड़ा खरगोश भी आदमी के पीछे पीछे उसको वह पेड़ दिखाने के लिये चल दिया।

शेर वहीं उस पेड़ के नीचे खड़ा खड़ा दोनों का इन्तजार करता रहा पर वे तो दोनों तो जो एक बार गये सो लौटे ही नहीं। वे तो हमेशा के लिये चले गये थे।

शेर अभी भी उन दोनों का वहीं बैठा बैठा इन्तजार कर रहा है। तुम लोगों को अगर वह कहीं मिल जाये तो ज़रा उससे बच कर रहना। ऐसे धोखा देखने वाले का क्या भरोसा। अगर तुम उसके सामने आ गये तो क्या पता वह तुम्हीं को खा जाये।

इस तरह बड़े खरगोश ने अपनी होशियारी से शेर से उस आदमी की और अपनी जान बचायी। इसी लिये कहते हैं कि होशियारी ताकत से बड़ी होती है।

5 मूटला और फिरी[12]

यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के बोट्सवाना देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह उन दिनों की बात है जब जानवर भी एक दूसरे से बात किया करते थे कि कालाहारी रेगिस्तान[13] की प्यासी जमीन पर दो डाक्टर रहा करते थे – एक का नाम था फिरी हयीना और दूसरे का नाम था मूटला खरगोश[14]।

वे लोग ऊपर से तो एक दूसरे के दोस्त थे पर दोनों की आपस में उनके काम के बारे में बहुत लड़ाई रहती थी। उनमें आपस में अक्सर लम्बी और गरम बहसें हुआ करतीं जिनमें दोनों एक दूसरे से ज़्यादा अच्छा डाक्टर होने का दावा करते थे।

एक दिन ऐसी ही एक बहस के बीच हयीना बोला — "क्योंकि मैं तुमसे उम्र में बड़ा हूँ इसलिये मेरे पास तुमसे ज़्यादा दिमाग है।"

खरगोश ने बहस की — "ऐसा नहीं है। आदमी की होशियारी और मेहनत बहुत काम करती है। और देखो उम्र में बड़ा होने से किसी का दिमाग ज़्यादा नहीं हो जाता। अच्छा यह बताओ कि जैसे

---

[12] Mmutla and Phiri – a Hare and a Hyena folktale from Botswana, Southern Africa. Adapted from the Book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela. This tale is retold by Phyllis Savory. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

[13] Kalahari Desert is a famous desert in Africa, after Sahara, in its southern part.

[14] Phiri Hyena – hyena is a tiger-like animal. See its picture above.

आग की गर्मी से ज़्यादा देर तक बचने के लिये हममें से कौन ज़्यादा अच्छी दवा बनाता है?"

हयीना बोला — "तुम बेवकूफी का सवाल कर रहे हो क्योंकि मेरे पास जंगल के बहुत सारे जानवर ऐसी खास दवा के लिये आते ही नहीं जबकि जाड़े की घास के सूखेपन की बीमारी का डर और दूसरी बीमारियों से कहीं बहुत ज़्यादा है तो मैं उसकी दवा बहुत अच्छी बनाता हूँ।"

खरगोश चालाकी से बोला — "चलो तो हम अपनी अपनी अपनी होशियारियों की जॉच कर लेते हैं। हम एक गड्ढा खोदते हैं और उसकी तली में हम दोनों अपनी अपनी रक्षा के लिये एक छिपने वाली जगह बनाते हैं।

उसके बाद हम उस गड्ढे की तली में आग लगाते हैं फिर उसी गड्ढे में बारी बारी से एक रात बिताते हैं। वहीं हम अपनी अपनी दवा की जॉच करेंगे। जो भी सारी रात बिना किसी तकलीफ के गुजार लेगा वही ज़्यादा अच्छा डाक्टर होगा।"

हयीना बोला — "यह तो बड़ा अच्छा विचार है।"

सो दोनों ने अपने अपने लिये एक एक गहरा गड्ढा खोदा। दोनों ने अपने लिये उन गड्ढों मे अपने तरीके से अपने रहने लायक एक छिपने वाली जगह बनायी जहॉ वे आग की लपटों की गर्मी से बच सकें।

हयीना ने अपनी पुरानी आदत के अनुसार एक उथला गड्ढा खोदा जबकि खरगोश ने अपने तरीके के अनुसार एक बहुत गहरा गड्ढा खोदा और उस गड्ढे में कई सुरंगें बनायीं।

जब दोनों के गड्ढे खुद गये और वे अपने अपने काम से सन्तुष्ट हो गये तो दोनों ने बहुत सारी लकड़ियॉ इकट्ठी कीं और उनको अपने अपने गड्ढों की तली में ले गये जहॉ वे उनमें आग लगाने वाले थे।

खरगोश बोला — "अब फिरी जैसा कि तुम कहते थे कि तुम मुझसे उम्रमें बड़े हो और तुम मुझसे ज़्यादा अक्लमन्द हो और मैं क्योंकि तुमसे छोटा हूॅ और मेरी कोई कीमत नहीं है इसलिये पहले मैं अपने गड्ढे में जाता हूॅ।"

"ठीक है।"

दोनों अपने अपने गड्ढों मे उतर गये और खरगोश अपनी एक सुरंग के मुॅह के पास बैठ गया जबकि हयीना ने यह देखने के लिये अब क्या होता है गड्ढे के किनारे पर वापस कूदने से पहले ही आग लगा ली।

खरगोश की सुरंग का मुॅह नीचा था सो जैसे ही गड्ढे में धुॅआ भरा वह अपनी सुरंग में घुस गया जहॉ आग की लपटें और गर्मी नहीं पहुॅच सकते थे।

पर फिर वह अपनी सुरंग के मुॅह पर वापस आ गया और चिल्लाया — "फिरी मैं तो जला जा रहा हूॅ।"

हयीना बोला — "अपने सिर पर खड़े हो जाओ।"

खरगोश बोला — "मैं तो अभी भी जला जा रहा हूँ।"

हयीना ने सलाह दी — "तो तुम बैठ जाओ।"

खरगोश ने प्रगट में परेशानी दिखाते हुए कहा — "पर मैं तो अभी भी जला जा रहा हूँ।"

हयीना ने फिर सलाह दी — "तो फिर तुम खड़े हो जाओ।"

खरगोश चिल्लाया — "खड़े होना तो बैठने से भी खराब है फिरी। मैं तो अभी भी जल रहा हूँ।"

मूटला यह सब कहते कहते सुबकियाँ भरता जा रहा था पर सचमुच में तो उसने अपना पंजा अपने मुँह पर अपनी हँसी रोकने के लिये रखा हुआ था।

आखीर में हयीना ने कहा — "तो करवट से लेट जाओ।"

इसके बाद बहुत देर तक शान्ति रही। जब आग बुझ गयी तो हयीना ने गड्ढे में झाँका पर वहाँ तो खरगोश का कोई नामो निशान ही नहीं था।

फिरी हयीना मन ही मन हँसा और बोला लगता है कि मूटला तो जल कर मर गया। सो वह खुश होता हुआ अपने घर चला गया कि अब डाक्टरी में उसका कोई मुकाबला करने वाला कोई नहीं रहेगा।

अगली सुबह फिरी उस गड्ढे की राख साफ करने के लिये उस गड्ढे पर गया तो वह मूटला को उस गड्ढे की एक सुरंग के मुँह पर

बैठा देख कर दंग रह गया। वह मुस्कुरा रहा था और उसके ऊपर उस घटना का कोई असर ही नजर नहीं आ रहा था।

मूटला खरगोश मुस्कुराता हुआ बोला — "शुरू शुरू में तो मेरा बड़ा अच्छा समय बीता पर बाद में मेरी आग की दवा अच्छा काम नहीं कर सकी। आओ फिरी अब तुम्हारी बारी है।"

उन्होंने फिरी हयीना के गड्ढे में आग जलाने के लिये लकड़ियॉ डालीं। जब लकड़ियॉ उनकी इच्छा अनुसार ठीक से रख दीं गयीं तो हयीना अपनी आग की दवा की जॉच के लिये अपने उथले गड्ढे में उतर गया।

जैसे ही फिरी हयीना उस गड्ढे में ठीक से बैठ गया मूटला खरगोश ने ऊपर आने से पहले ही उन लकड़ियों में आग लगा दी।

फिरी हयीना चिल्लाया — "मूटला मैं जल रहा हूॅ।"

मूटला खरगोश बोला — "अपने सिर पर खड़े हो जाओ।"

फिरी हयीना बहुत दर्द में चिल्लाया — "मूटला भाई मैं तो अभी भी जल रहा हूॅ।"

मूटला खरगोश बोला — "तो बैठ जाओ।

फिरी हयीना फिर चिल्लाया — "मूटला मैं तो अभी भी जल रहा हूॅ।"

मूटला खरगोश हॅस कर बोला — "तो फिर खड़े हो कर देखो।"

"मूटला, खड़े होना तो बैठने से भी ज़्यादा खराब है।" फिरी हयीना फिर दर्द से चिल्लाया।

मूटला खरगोश अपने दुश्मन की दर्द भरी आवाजों पर ताली बजाते हुए बोला — "तो फिर तुम वैसा ही करो जैसा मैंने किया था। करवट से लेट जाओ।"

उसके बाद एक बहुत तेज़ चीख आयी और फिर सब शान्त हो गया। मूटला खरगोश अपनी तरकीब पर खुश होते हुए अपने घर चला गया कि अब उसके दुश्मन का काम तमाम हो गया और अब वह अकेला ही वहॉ का डाक्टर रहेगा।

अगले दिन जब मूटला खरगोश उस गड्ढे पर लौटा तो उसको उस गड्ढे में हयीना का जला हुआ शरीर पड़ा मिला जो उसने अपने लिये खोदा था।

खुश हो कर उसने फिरी हयीना का एक कान काटा और उसकी सीटी बना ली। बस अब क्या था मूटला खरगोश अपनी नयी बनायी हुई सीटी बजाता हुआ ऊपर नीचे चलता गया चलता गया। बहुत सारे जानवर उसकी नयी धुन सुनने आ गये।

जब उसको लगा कि वहॉ काफी लोग उसको सुनने के लिये आ गये तो उसने अपनी तारीफ में गाया —

मैं मूटला धरती पर सबसे बड़ा डाक्टर हूँ
फिरी मेरा दुश्मन तो केवल एक बच्चा था
यह मेरे इस संगीत में सुनो जो उसके कान से आ रहा है

जैसे जैसे वह अपनी आवाज को उपर नीचे कर के गा रहा था वह फिरी हयीना के मुकाबले में अपने आपको उससे अच्छा बताता जा रहा था।

इतने में लाडी[15] नाम का एक काला चिड़ा जो सूरज की तरह चमकता था आसमान में से उतर कर नीचे आया और मूटला खरगोश से बोला — "मूटला भाई मुझे तुम्हारा संगीत बहुत अच्छा लगा। तुम मुझे अपनी यह सीटी उधार दे दो ताकि मैं भी ऐसी खुशी वाली आवाजें निकाल सकूँ।"

खरगोश हँसा और बोला — "क्या? मैं तुम्हें अपनी सीटी दे दूँ? नहीं नहीं, मैं तुमको अपनी सीटी नहीं दूँगा। तुम इसको ले कर यकीनन वापस आसमान में उड़ जाओगे और फिर मैं तुम्हारे पीछे पीछे कैसे जा सकता हूँ?"

लेकिन लाडी उसके पीछे पड़ा रहा और उसने खरगोश से वायदा किया कि उसको बजाते समय वह उसके बराबर में ही खड़ा रहेगा कहीं नहीं जायेगा।

मूटला की इच्छा तो नहीं थी पर वह राजी हो गया और उसने वह सीटी लाडी को दे दी।

तुरन्त ही लाडी ने अपना वायदा तोड़ दिया और उसको बजाते हुए वह आसमान में उड़ गया। तुरन्त ही यह भी साफ हो गया कि

[15] Tladi – name of a black lightning bird

उसका उस सीटी को उसके मालिक को लौटाने का कोई इरादा भी नहीं था।

इस बात पर मूटला बहुत गुस्सा हुआ खास कर जब जबकि उसके सामने खड़े हुए लोग जिन्होंने उसकी तारीफ सुनी थी वे अब उस पर हॅस रहे थे।

मूटला कुछ देर तक तो इधर उधर बिना किसी मतलब के घूमता रहा और सोचता रहा कि कैसे वह अपनी सीटी उस चिड़े से वापस ले पर आखीर में उसने सैकगोगो[16] मकड़े की सलाह लेनी ठीक समझी।

सो वह सैकगोगो मकड़े के पास गया और उसको अपनी परेशानी बतायी। सैकगोगो मकड़ा बोला — "मैं तुम्हारे चारों तरफ एक थैला बुन दूँगा और तुमको लाडी तक पहुँचा दूँगा। उसके बाद तुम देख लेना।"

तुरन्त ही उसने मूटला के चारों तरफ अपना पतला बारीक मजबूत जाला बुनना शुरू कर दिया और वह उसे तब तक बुनता रहा जब तक कि मूटला उसके अन्दर पूरी तरह से सुरक्षित नहीं हो गया।

[16] Sekgogo – name of a spider. Spiders are also considered very intelligent animals in African folktales. Read "Anansi Makada Africa Mein" available in Hindi from hindifolktales@gmail.com .

उसके बाद सैकगोगो मकड़ा हवा की सहायता से आसमान में पहुँच गया और वहाँ जा कर वह एक बादल पर उतर गया। वहाँ से उसने मूटला को ऊपर खींच लिया।

लाडी चिड़े ने जब अपने घर से नीचे की तरफ देखा तो देखा कि मूटला तो ऊपर चला आ रहा था। और यह देख कर तो उसको और भी ज़्यादा ताज्जुब हुआ जब मूटला बादल पर बैठे मकड़े के पास आ कर बैठ गया।

उसके मुँह से आश्चर्य से निकला — "क्या मूटला ने उड़ना सीख लिया जैसे मैं उड़ता हूँ? मुझे उसकी सीटी वापस दे देनी चाहिये क्योंकि वह मुझसे ज़्यादा होशियार लगता है।"

सो उसने उसकी सीटी उसको वापस दे दी और फिर बहुत धीरे धीरे सैकगोगो मकड़े ने मूटला को धरती पर वापस उतार दिया।

खुशकिस्मती से मकड़े ने जो धागा बुना था वह नीचे वाले लोगों को भी उसी तरह से दिखायी नहीं दे रहा था जैसे लाडी चिड़े को वह धागा दिखायी नहीं दिया था।

सो नीचे वाले जानवरों ने भी यही सोचा कि मूटला उड़ रहा था और उसके इस नये हुनर पर उन्होंने उसकी बहुत तारीफ की।

मूटला ने उस भीड़ को सिर झुकाया जो कुछ देर पहले उस पर हँस रही थी और बोला — "जैसा कि तुम लोगों ने देखा लाडी चिड़ा भी मेरे मुकाबले का नहीं है। अब मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि कोई भी मेरे जितना होशियार नहीं है।"

मूटला खरगोश सैकगोगो मकड़े का उसकी मेहरबानी के लिये बहुत ही शुक्रगुजार था जो उसने लाडी चिड़े से उसकी सीटी वापस लेने के लिये उसके ऊपर की थी। और यह उन दोनों की दोस्ती की शुरूआत थी जो आज तक चली आ रही है।

6 बन्दर और खरगोश[17]

यह लोक कथा मध्य अफ्रीका के कौंगो देश में बड़े लोग अपने बच्चों को यह सिखाने के लिये सुनाते हैं कि उनको भी बन्दर और खरगोश की तरह से आपस में अलग अलग स्वभाव का होते हुए भी एक दूसरे को सहते हुए प्यार से रहना चाहिये।

एक बन्दर और एक खरगोश बहुत अच्छे दोस्त थे। वे अक्सर साथ रहते थे और बहुत बात करते थे। वे एक दूसरे से बात करना पसन्द भी बहुत करते थे और उनकी दोस्ती भी बहुत अच्छी थी सिवाय दो बातों के।

बन्दर का साथ बहुत अच्छा था। वह बहुत अच्छी कहानी सुनाता था। पेड़ पर जहॉ वह बैठता था वहॉ से वह सारे जंगल को देख सकता था। उसको यह भी पता था कि किस जानवर के साथ क्या हो रहा था और वह उसे खरगोश को बताना चाहता था।

पर उसकी एक बुरी आदत थी और वह यह कि बात करते समय वह हमेशा अपना शरीर खुजलाता रहता था। कभी वह अपना सिर खुजलाता, तो कभी वह अपना पेट खुजलाता, कभी वह अपनी बॉह खुजलाता और कभी अपना पिछवाड़ा।

[17] Monkey and Rabbit Together – a folktale from Congo, Central Africa. Adopted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=88

इस तरह वह बात करते समय कुछ न कुछ खुजलाता रहता, और खुजलाता ही रहता। यह उसकी एक बहुत ही बुरी आदत थी और खरगोश को इस बात से बहुत परेशानी होती थी।

उधर खरगोश सारे मैदान में घूमता रहता। तो उसको हर घर में, हर घास के हर छेद में क्या होता रहता, यह सब मालूम रहता। और वह भी अपने दोस्त बन्दर से यह सब कहने के लिये बेताब रहता।

बन्दर की तरह खरगोश भी बहुत अच्छी कहानी सुनाता था पर बन्दर की तरह खरगोश की भी एक बुरी आदत थी और वह थी कि वह जब भी बात करता तो वह हमेशा हिलता रहता और इधर उधर घूमता रहता।

वह एक जगह बिना हिले बैठ ही नहीं सकता था। वह अपने कान भी हिलाता रहता। वह अपना सिर भी हमेशा हिलाता रहता क्योंकि उसको कभी आगे देखना होता था तो कभी पीछे।

पहले वह एक तरफ देखता, फिर दूसरी तरफ देखता। वह बात करते समय अपनी नाक भी सिकोड़ता रहता जैसे कुछ सूँघने की कोशिश कर रहा हो।

उसका यह बार बार हिलना बन्दर को बहुत परेशान करता। वह जब खरगोश से बात करता तो उसको खरगोश के इस हिलने से बहुत परेशानी होती।

एक दिन आखिर बन्दर से रहा नहीं गया। सो एक दिन जब वे बात कर रहे थे तो बन्दर बोला — "बन्द करो यह सब।"

खरगोश बोला — "क्या यह सब बन्द करूँ?"

बन्दर बोला — "यही चारों तरफ देखना और हवा में चारों तरफ सूँघना। तुम हमेशा अपने कान फड़फड़ाते रहते हो और आगे पीछे देखते रहते हो। तुम अपनी इस बुरी आदत से मुझे बहुत परेशान करते हो।"

"तुमने क्या कहा? मैं तुमको परेशान करता हूँ? और तुम तो बिना खुजलाये बात ही नहीं कर सकते हो। ज़रा अपनी तरफ तो देखो। तुम्हारी भी तो खुजलाने की बुरी आदत है।

तुम तो हमेशा ही खुजलाते रहते हो। देखो तुम तो अभी भी खुजला रहे हो। तुम अपना सिर खुजलाते हो, तुम अपना पेट खुजलाते हो, तुम अपनी बाँहें खुजलाते हो, यहाँ तक कि तुम तो अपना पिछवाड़ा भी खुजलाते हो। तुम एक जगह बिना खुजलाये बैठ ही नहीं सकते।"

बन्दर बोला — "मैं जब चाहूँ तब बिना हिले बैठ सकता हूँ। समझे।"

खरगोश बोला — "वह तो मैं भी बैठ सकता हूँ। मुझे हमेशा सूँघने और हिलने की जरूरत नहीं होती। मैं यह सब जब भी चाहूँ छोड़ सकता हूँ।"

तब बन्दर ने उसको एक मुकाबले के लिये कहा। वह बोला — "मैं सारा दिन बिना खुजलाये रह सकता हूँ अगर तुम बिना सूँघे और बिना हिले रहो तो। हम अभी इसी समय से अपनी बुरी आदतें छोड़ देते हैं।"

और दोनों एक दूसरे की तरफ देखते हुए दुखी से बैठ गये। बन्दर बिना खुजलाये चुपचाप बैठा रहा और खरगोश भी बिना हिले और बिना सूँघे बैठा रहा। दोनों में से कोई भी नहीं हिला।

बन्दर कुछ परेशान सा हो उठा उसकी उँगलियाँ जहाँ रखी थीं वहीं हिलने लगीं क्योंकि वह अपना सिर खुजलाना चाहता था। उसके पेट पर भी खुजली आ रही थी, उसकी बाँहों पर भी खुजली आ रही थी पर फिर भी वह चुपचाप बैठा रहा।

खरगोश भी बिना हिले बैठा था। वह अपनी नाक हिलाना चाह रहा था, हवा में सूँघना चाह रहा था कि कोई खतरा है या नहीं। वह इधर उधर यह भी देखना चाह रहा था कि कोई जंगली जानवर शिकार तो नहीं कर रहा था।

पर उसके बाद खरगोश ने बिल्कुल भी नही सूँघा और वह हिला भी नहीं।

आखिर खरगोश बोला — "बन्दर भाई। मुझे एक विचार आया है। जब तक हम यहाँ अपनी बुरी आदतों को छोड़ कर बैठे हुए हैं तब तक हम एक दूसरे से कहानी ही क्यों न कहें ताकि हमारा दिन जल्दी कट जाये।"

बन्दर बोला — "यह तो बड़ा अच्छा विचार है। तो चलो तो पहली कहानी तुम सुनाओ।"

खरगोश बोला — "मैं एक बार तुमसे मिलने के लिये आने के लिये घास में से गुजर रहा था तो मैंने घास को सूँघा। मुझे पता चला कि घास में एक शेर था। मैं वहीं का वहीं रुक गया। पहले मैंने अपने बॉयी तरफ देखा फिर मैंने अपनी दॉयी तरफ देखा।

फिर मैंने हवा में सूँघा कि देखूँ कि शेर की खुशबू हवा में भी है या नहीं। फिर मैंने अपने कान हिलाये और सुनने की कोशिश की कि वहॉ शेर था कि नहीं।

पर वहॉ तो कोई शेर नहीं था सो फिर मैं नदी की तरफ चला जहॉ मुझे तुम मिल गये और फिर हम लोगों ने खूब बातें कीं।"

इसके बाद वह फिर से चुपचाप बैठ गया। पर इस बीच बन्दर ने देख लिया कि कहानी सुनाते समय खरगोश हिला भी, उसने सूँघा भी और इधर उधर देखा भी।

सो बन्दर ने भी कुछ ऐसी ही कहानी सुनाने का विचार किया जिसमें वह खुजला सकता।

अब बन्दर ने अपनी कहानी शुरू की — "कल जब मैं नदी के किनारे की तरफ जा रहा था तो रास्ते में मुझे गॉव के कुछ लोग मिल गये। उन्होंने सोचा कि मैंने उनके खेतों से उनका खाना चुराया है सो उन्होंने मेरे ऊपर पत्थर फेंकने शुरू कर दिये। एक पत्थर मेरे यहॉ लगा।"

जैसे ही उसने यह कहा तो खरगोश ने देखा कि उसने अपना सिर छुआ और वहाँ खुजलाया।

"दूसरा मुझे यहाँ लगा, फिर एक यहाँ लगा, एक यहाँ लगा।" यह सब कहते हुए उसने उन उन जगहों को छुआ जहाँ जहाँ उसको पत्थर लगे थे क्योंकि वहाँ वहाँ उसको खुजली आ रही थी और वहाँ वहाँ खुजलाया।

जब वह खुजला चुका तो वह बोला — "जब मुझे लगा कि अब सब खत्म हो गया तो फिर मैंने अपने सारे शरीर पर हाथ फेर कर देखा कि मुझे कहीं कोई चोट तो नहीं आयी थी। यह पक्का करने के बाद कि मैं बिल्कुल ठीक था मैं तुम्हारे पास चला आया।"

यह सुन कर खरगोश मुस्कुराया और साथ में बन्दर भी। फिर उसके बाद दोनों ज़ोर से हँस पड़े। खरगोश जान गया था कि बन्दर क्या कर रहा था और बन्दर को भी पता चल गया था कि खरगोश क्या कर रहा था।

खरगोश बोला — "तुम यह मुकाबला हार गये। तुम अपनी सारी कहानी में खुजलाते रहे।"

बन्दर बोला — "और तुम भी यह मुकाबला हार गये क्योंकि तुम भी अपनी कहानी में सारा समय सूँघते रहे, हिलते रहे और कूदते रहे।"

खरगोश बोला — "मेरा ख्याल है कि हम दोनों में से कोई भी सारा दिन चुपचाप नहीं बैठ सकता। सूँघना, हिलना और कूदना यह खरगोश की आदत में है।"

बन्दर बोला — "और खुजलाना एक ऐसी चीज है जो बन्दर लोग करते ही हैं। सो अगर हम एक दूसरे के दोस्त बने रहना चाहते हैं तो हम लोगों को एक दूसरे की बुरी आदतों की आदत डालनी ही पड़ेगी।"

और फिर ऐसा ही हुआ। दोनों साथ साथ खुजलाते रहे, हिलते रहे, सूँघते रहे, कूदते रहे और एक दूसरे के दोस्त बने रहे।

7 टर्की और खरगोश को न्याय मिला[18]

अफ्रीका के घाना देश में कौंग पहाड़ों[19] और समुद्र के बीच में एक जगह एक टर्की[20] रहता था। वहॉ उसका एक बहुत बड़ा खेत था। उसका वह खेत बहुत अच्छा था क्योंकि वह अपने खेत पर बड़ी मेहनत से काम करता था।

वह अपने खेत पर याम[21] और केला उगाता था। उसके खेत पर बीन्स, भिंडी, बाजरा और तम्बाकू[22] भी उगते थे। उसका खेत हमेशा भरा भरा और हरा भरा रहता था। शायद इसलिये कि वह टर्की अपने खेत पर बहुत मेहनत से काम करता था।

उससे कुछ दूरी पर एक खरगोश भी रहता था। उसका भी वहॉ एक खेत था। पर वह खेत कुछ बहुत

---

[18] Guinea Fowl and Rabbit Get Justice – a folktale from Ghana, West Africa. Taken from the Book : "The Cow-Tail Swich and Other West African Stories", by Harold Courlander. George Herzog. NY: Henry Holt and Company. 1947. 143 p. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com

[19] Cong Mountains are in Ghana

[20] Translated for the word "Guinea Fowl". It is native to Northern Africa. Its feminine is Guineahen. See its picture above.

[21] Yam is a root vegetable grown in tropical regions. One yam may weigh up to 5-10 pounds. It is staple diet in Western African countries. See its picture above.

[22] Beans, Okra (Ladies Finger), Millet and Tobacco

ज़्यादा अच्छा नहीं था क्योंकि वह उस पर ज़्यादा मेहनत से काम नहीं करता था।

जब पौधे बोने का मौसम आता तो वह वहाँ बीज तो लगा देता पर वह कभी अपनी फसल की गुड़ाई आदि कभी नहीं करता। जब फसल काटने का समय आता तो बस वह उसमें से अपनी फसल काटने पहुँच जाता।

इसी लिये उसके खेत में कोई भी चीज़ जैसे बीन्स, भिंडी या बाजरा कुछ भी ज़्यादा और ज़्यादा अच्छा नहीं होता था।

एक दिन खरगोश बाहर घूमने निकला तो उसको टर्की का खेत दिखायी दे गया। वह तो उसके अपने खेत से कितना ज़्यादा अच्छा खेत था। उसको लगा कि उसका खेत भी ऐसा ही होना चाहिये था।

वह उस खेत के बारे में सोचता ही रहा और फिर कुछ नाराज सा होता हुआ बोला — "ऐसा क्यों होता है कि बारिश केवल इस टर्की के खेत पर ही पड़ती है मेरे खेत पर नहीं और इसी लिये उसकी फसल ज्यादा अच्छी उगती है मेरी नहीं। यह तो न्याय नहीं है।"

वह इस बारे में सारे दिन सोचता रहा तो एक बहुत ही बढ़िया विचार उसके दिमाग में आया।

उस रात वह अपनी पत्नी और बच्चों को बाहर ले कर आया और उनको टर्की के खेत पर ले गया और वहाँ से फिर उनको

वापस भी ले आया। वह उनको दोबारा वहॉ तक ले गया और फिर वापस ले आया।

ऐसा वह सारी रात करता रहा जिससे उसके घर से टर्की के खेत तक एक रास्ता बन गया। बस इसके बाद में उन सबने टर्की के खेत से सब्जियॉ तोड़नी शुरू कर दीं। उन्होंने उनको टोकरी में रखा और घर ले आये। अगले दिन सुबह वे लोग फिर सब्जियॉ तोड़ने चले गये।

जब सुबह को टर्की अपने खेत पर काम करने आया तो उसने देखा कि वहॉ तो खरगोश अपने परिवार के साथ उसकी इतनी बढ़िया फसल तोड़ कर ले जा रहा है जो उसने कितना समय लगा कर उगायी थी।

टर्की बोला — "यह तुम मेरे याम और भिंडी का क्या कर रहे हो? और वैसे भी तुम मेरे खेत पर यहॉ कर क्या रहे हो?"

खरगोश बोला — "तुम्हारा खेत? मुझे लगता है कि तुमसे कहीं गलती हुई है। यह तो मेरा खेत है।"

"हॉ मुझे भी कुछ ऐसा ही लगता है कि कहीं तो कुछ गलती हुई है क्योंकि यह तो मेरा खेत है। मैंने इसमें बीज बोया, मैंने इसकी घास निकाली, मैंने इसमें हल चलाया, इसलिये यह तुम्हारा खेत हो भी कैसे सकता है?"

खरगोश बोला — "तुम इस खेत में कैसे बीज बो सकते थे या कैसे इसकी घास काट सकते थे या कैसे इसमें हल चला सकते थे जबकि इसमें यह सारा काम तो मैंने किया।"

यह सुन कर टर्की बहुत नाराज हुआ। वह खरगोश से ज़ोर से बोला — "अच्छा हो कि तुम मेरे खेत से चले जाओ।"

खरगोश भी ज़ोर से बोला — "मैं कहता हूँ कि तुम मेरे खेत से चले जाओ।"

टर्की बोला — "यह तो तुम बेकार की बात कर रहे हो।"

खरगोश बोला — "वह तो है ही। जब कोई बूढ़ा टर्की आ कर किसी दूसरे के खेत को अपना खेत कहे तो वह बेकार की बात तो होती ही है।"

टर्की फिर बोला — "खरगोश, देखो मैं फिर कह रहा हूँ कि यह खेत मेरा है तुम यहाँ से चले जाओ।"

खरगोश बोला — "नहीं, यह खेत मेरा है मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा।"

टर्की बोला — "मैं इस मामले को सरदार के पास ले जाऊँगा।

खरगोश बोला — "ठीक है। चलो सरदार के पास चलते हैं।"

सो दोनों ने अपने अपने हल उठाये और गाँव के सरदार के घर जा पहुँचे।

वहाँ पहुँच कर टर्की बोला — "यह मेरी सब्जियाँ तोड़ रहा था और मेरे खेत पर से हट ही नहीं रहा था।"

खरगोश बोला — "यह मेरा फायदा उठाना चाहता है। मैंने इतनी मेहनत कर के उसमें इतने बढ़िया याम उगाये और यह वहाँ आ कर उनको अपना कह रहा है।"

वे दोनों सरदार को अपनी अपनी दलीलें देते रहे और सरदार उनको सुनता रहा। आखीर में वे तीनों टर्की के खेत पर वहाँ के हालात देखने गये।

सरदार ने खरगोश से पूछा — "तुम्हारे घर से इस खेत को आता हुआ रास्ता कहाँ है?"

खरगोश ने हाल की बनी हुई सड़क की तरफ इशारा करते हुए कहा — "वह रहा।"

फिर सरदार ने टर्की से पूछा — "और तुम्हारे घर से इस खेत को आता हुआ रास्ता कहाँ है?"

टर्की बोला — "रास्ता? मेरा तो कोई रास्ता नहीं है।"

सरदार बोला — पर जब किसी का खेत होता है तो उसका उसके घर से उस खेत तक पहुँचने का रास्ता तो होता ही है न?"

टर्की कुछ परेशान होता हुआ बोला — "हाँ होता तो है पर मैं तो जब भी अपने खेत पर काम करने आता हूँ तो बस उड़ कर आ जाता हूँ। मुझे रास्ते की जरूरत ही नहीं होती।"

सरदार ने कुछ सोचा और अपना सिर ना में हिलाया और बोला — "जब कोई आदमी अपना खेत बनाता है तो उसको अपने घर से उस खेत तक जाने का रास्ता तो बनाना ही पड़ता है न?

अब क्योंकि इस खेत का रास्ता खरगोश के घर से आता है इस लिये यह खेत तो खरगोश का ही हुआ न।"

और यह कह कर वह वहॉ से चला गया।

खरगोश और उसके परिवार ने फिर से उस खेत में से याम उखाड़ने शुरू कर दिये। टर्की इस फैसले से बहुत गुस्सा हुआ और गुस्सा हो कर अपने घर चला गया।

जब खरगोश की बड़ी सी टोकरी सब्जियों से भर गयी तो वह उसको ले कर बाजार चला। टोकरी भारी थी और वह बहुत भारी काम करने का आदी नहीं था क्योंकि वह बहुत आलसी था।

जब वह अपना भारी बोझ ले कर सड़क पर जा रहा था तो वह बीच में थक गया सो उसने अपना वह बोझ जमीन पर रख दिया और सुस्ताने के लिये वहीं सड़क के किनारे बैठ गया।

तभी वहॉ टर्की आ गया और खरगोश से बोला — "आह, दोस्त खरगोश, तुम्हारा बोझ तो बहुत भारी है। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।"

यह सुन कर खरगोश को बहुत अच्छा लगा। उसको लगा कि टर्की अब उससे गुस्सा नहीं था क्योंकि वह उससे दोस्ती का बर्ताव कर रहा था।

वह बोला — "ओह टर्की, तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। तुम तो मेरी सब्जियों को ले जाने में एक सच्चे दोस्त की तरह से सहायता कर रहे हो।"

यह सुन कर टर्की ने वह बोझा अपने सिर पर रखा, खरगोश की तरफ देख कर मुस्कुराया, अपने पंख फड़फड़ाये और वह बोझ ले कर उड़ गया – बाजार की तरफ नहीं बल्कि अपने घर की तरफ।

खरगोश चिल्लाता हुआ टर्की के पीछे भागा पर वह उसको पकड़ नहीं सका। क्योंकि टर्की तो मैदानों के ऊपर से तेज़ी से उड़ कर वहॉ से चला गया था और खरगोश तो उड़ नहीं सकता था।

इससे खरगोश बहुत नाराज हो गया और सरदार के पास वापस गॉव गया। वहॉ जा कर वह सरदार से बोला — "सरदार, टर्की ने मुझे लूट लिया। वह मेरी सब्जी की टोकरी ले कर उड़ गया।"

सरदार ने टर्की को बुलाया और उससे पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया तो टर्की बोला — "वह मेरी सब्जियॉ थीं मैं ले गया।"

खरगोश चिल्ला कर बोला — "वे मेरी सब्जियॉ थीं। मैंने उनको अपने हाथ से तोड़ा था।"

वे फिर आपस में बहस करने लगे और सरदार फिर से सोचने लगा। सोच कर वह बोला — "जब लोग बहुत सारा सामान अपने सिर पर ढोते हैं तो उनके सिर के बाल रोज रोज उतना बोझ ढोने की वजह से कम हो जाते हैं।"

वहाँ बैठे गाँव के लोग बोले — "हाँ यह तो है।"

सरदार ने फिर खरगोश को बुलाया और कहा — "यहाँ तो आओ खरगोश में तुम्हारा सिर देखूँ।"

खरगोश सरदार के पास गया तो सरदार ने उसके सिर पर हाथ फेरा और मुँह से ना की आवाज निकालते हुए कहा — "नहीं नहीं। तुम्हारे बाल तो काफी मोटे और लम्बे हैं यह तुम्हारा बोझ नहीं हो सकता।"

फिर सरदार ने टर्की को बुलाया और कहा — "आओ टर्की अब मैं तुम्हारा सिर देखता हूँ।"

टर्की ने अपना सिर सरदार को दिखाया। सरदार ने उसके सिर पर भी हाथ फेरा तो उसके सिर पर तो ज़रा से भी बाल नहीं थे।

सरदार बोला — "यह बोझ तुम्हारा है क्योंकि तुम्हारा सिर तो बिल्कुल ही गंजा है।"

खरगोश ने शिकायत की — "पर टर्की के सिर पर तो पहले से ही कोई बाल नहीं हैं। वह तो हमेशा से ही गंजा है।"

सरदार बोला — "जब लोग बहुत सारा सामान अपने सिर पर ढोते हैं तो उनके सिर के बाल रोज रोज उतना बोझ ढोने की वजह से कम हो जाते हैं इसी लिये टर्की का सिर गंजा है। और इसी लिये सब्जी की यह टोकरी भी टर्की की ही है।"

यह फैसला सुन कर वे दोनों वहाँ से चले गये।

खरगोश ने खेत पर जा कर सब्जी की दूसरी टोकरी तैयार की और उसको ले कर वह फिर से बाजार चला। वह फिर बीच में सड़क के किनारे आराम करने के लिये बैठ गया। टर्की फिर ऊपर से कूद लगा कर नीचे आया और उस टोकरी को ले कर उड़ गया।

खरगोश ने फिर एक और टोकरी तैयार की और उसको ले कर वह फिर बाजार चला। वह फिर बीच में सड़क के किनारे आराम करने के लिये बैठ गया। फिर वैसा ही हुआ। टर्की फिर से आया और फिर से अपनी सब्जी ले कर उड़ गया।

खरगोश ने सोचा कि अब सरदार के पास जाने से कोई फायदा नहीं था क्योंकि टर्की का सिर तो बिल्कुल ही गंजा था और वह अपना फैसला सुना ही चुका था कि रोज रोज भारी बोझा ढोने से सिर के बाल बहुत पतले हो जाते हैं और उसके बाल तो बहुत मोटे और लम्बे थे सो वह टोकरी तो किसी भी हालत में उसकी हो ही नहीं सकती थी।

आखिर खरगोश टर्की की सब्जियॉ तोड़ते तोड़ते थक गया और वह अपने ही खेत पर काम करने चला गया।

इसी लिये कभी कभी लोग कहते हैं कि "सबसे छोटा रास्ता कहीं नहीं जाता।"

8 सबसे बड़ा योद्धा[23]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के केन्या देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इत्तफाक से यह कथा खरगोश की अक्लमन्दी की नहीं बल्कि उसके डरपोक होने की है।

एक बार एक कैटरपिलर[24] एक बड़े खरगोश[25] का घर देखने के लिये उसके घर में घुस गया। यह देख कर कि वहाँ कोई भी नहीं है वह उसके घर में अन्दर की तरफ चलता चला गया और एक सबसे अँधेरी और सुरक्षित जगह में जा कर बैठ गया।

कुछ देर बाद ही बड़ा खरगोश अपने घर वापस आया तो उसने देखा कि उसके घर के दरवाजे पर छोटे छोटे पैरों के निशान बने हैं तो उसने सोचा कि ये इतने छोटे छोटे पैरों के निशान किसके हो सकते हैं।

काफी देर सोचने पर भी वह कुछ नहीं सोच सका कि वे इतने छोटे छोटे पैरों के निशान किसके हो सकते हैं तो वह ज़ोर से बोला — "मेरे घर में कौन है?"

---

[23] The Greatest Warrior of All – a folktale from Masai Tribe, Kenya, Eastern Africa.
Adapted from the book : "African Folktales" by A Ceni. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com .

[24] Caterpillar is the common name for the larvae of the butterflies or moths. See its picture above.

[25] Translated for the word "Hare". Hare is a little bit bigger than the rabbit. See its picture above.

कैटरपिलर भी जो अपनी बहुत शेखी बघारता था ज़ोर से बोला — "मैं हूँ सबसे बड़ा लड़ने वाला। मैं तो राइनोसिरोस[26] को भी कुचल सकता हूँ। और हाथी तक का मॉस निकाल सकता हूँ। मैं वाकई बहुत ही भयानक हूँ।"

यह सुन कर बड़ा खरगोश तो डर के मारे कॉप गया और वहॉ से भाग गया। उसने सोचा — "इस पवित्र जंगल की कसम मैं इसके लिये क्या करूँ जो अपने आपको यह कहता है कि वह सबसे बड़ा लड़ने वाला है।

जब वह भाग रहा था तो रास्ते में उसको एक गीदड़ मिला। उसने गीदड़ से पूछा — "गीदड़ भाई, क्या तुम मेरी सहायता करोगे?"

गीदड़ बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं, अगर कर सका तो।"

"तो मेरे घर चलो तो वहॉ चल कर ज़रा उससे मिलो और बात करो जो मेरे घर में बैठा है।"

गीदड़ राजी हो गया और बड़े खरगोश के साथ उसके घर चल दिया। जब वे दोनों बड़े खरगोश के घर के दरवाजे पर पहुँचे तो गीदड़ अपनी सबसे ऊँची आवाज में बोला — "वह कौन है जो मेरे दोस्त बड़े खरगोश के घर में छिपा बैठा है?"

[26] Rhinoceros is a huge animal. See its picture above

कैटरपिलर यह सुन कर बिल्कुल भी नहीं डरा बल्कि निडर हो कर बोला — "मैं छिपा हुआ नहीं हूँ। मैं तो सबसे बड़ा लड़ने वाला हूँ। मैं तो राइनोसिरोस को भी कुचल सकता हूँ। और हाथी तक का मॉस निकाल सकता हूँ। मैं वाकई बहुत ही भयानक हूँ।"

यह सुन कर गीदड़ का साहस टूट गया और वह बड़े खरगोश से माफी मॉगते हुए यह कह कर वहॉ से चला गया कि मैं तो उस बड़े लड़ने वाले के सामने बहुत छोटा हूँ मैं उसके सामने कुछ नहीं कर सकता।

बड़ा खरगोश भी नाउम्मीद हो कर आगे बढ़ा। अब वह चीते[27] की खोज में था। चीता उसके एक पेड़ के नीचे बैठा मिल गया'

उसने जा कर उससे भी अपनी परेशानी कही कि क्या वह उसके साथ उसके घर चल कर इस बात का पता लगा सकता है कि उसके घर में कौन छिपा बैठा है?

चीता भी तुरन्त ही तैयार हो गया और जब वह उस बड़े खरगोश के घर के दरवाजे पर आया तो वह भी ज़ोर से बोला — "वह कौन है जो मेरे दोस्त बड़े खरगोश के घर में छिपा बैठा है?"

और एक बार फिर कैटरपिलर निडर हो कर बोला — "मैं छिपा हुआ नहीं हूँ। मैं तो सबसे बड़ा लड़ने वाला हूँ। मैं तो

[27] Translated for the word "Leopard". See its picture above.

राइनोसिरोस को भी कुचल सकता हूँ। और हाथी तक का मॉस निकाल सकता हूँ। मैं वाकई बहुत ही भयानक हूँ।"

यह सुन कर चीता भी कुछ परेशान हो गया। उसने बड़े खरगोश की तरफ देखा और बोला — "मेरे प्यारे बड़े खरगोश अगर यह जानवर यह सब कुछ कर सकता है तो मुझे नहीं पता कि इतना बड़ा चीता होते हुए भी मैं ऐसे जानवर से अपनी जान कैसे बचा सकता हूँ।

मुझे बड़ा दुख है कि मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सका। अच्छा तो यही है कि मैं ही यहॉ से चला जाऊँ।" और वह वहॉ से चला गया।

बड़ा खरगोश सोचता रहा सोचता रहा कि अब वह क्या करे फिर आखीर में उसने यह निश्चय किया कि जिन जिन जानवरों के नाम उस सबसे बड़े लड़ने वाले जानवर ने लिये थे उन्हीं जानवरों के पास चला जाये।

सो वह सबसे पहले राइनोसिरोस के पास गया और उसको जा कर अपनी सारी कहानी बतायी। वह बड़ा जानवर जिसको अपनी ताकत और अपने सींग पर बड़ा नाज़ था बड़े खरगोश के पीछे पीछे उसके घर चल दिया।

वहॉ जा कर वह भी अपनी भयानक आवाज में चिल्लाया — "वह कौन है जो मेरे दोस्त बड़े खरगोश के घर में छिपा बैठा है?"

अबकी बार कैटरपिलर ने ऐसी आवाज में उसको जवाब दिया जो उस बड़े से छेद में बहुत ज़ोर से गूँज गयी। इस ज़ोर की गूँज से ऐसा लगा जैसे कि वह आवाज किसी बड़े साइज़ के आदमी[28] की आवाज हो।

वह बोला — "मैं छिपा हुआ नहीं हूँ। अगर तुम्हारी हिम्मत हो तो आओ पर ओ राइनोसिरोस, पर तुम यह मत भूलना कि मैं सबसे बड़ा लड़ने वाला हूँ। मैं तो राइनोसिरोस को भी कुचल सकता हूँ।"

राइनोसिरोस की तो यह सुन कर बोलती ही बन्द हो गयी। उसने सोचा कि अब तो सब कुछ खत्म हो गया।

सो वह बड़े खरगोश से बोला — "उसने कहा है कि वह राइनोसिरोस को मिट्टी में मसल देगा। हुँह। हालाँकि मुझे लगता है कि वह शेखी बघार रहा है, पर फिर भी... । अच्छा है कि हम इसे यहीं छोड़ दें। प्यारे बड़े खरगोश, अब तुम अपना ख्याल रखना।"

कह कर वह वहाँ से चला गया।

बड़ा खरगोश अपने घर के सामने फिर अकेला खड़ा रह गया। अब वह हाथी को देखने चला।

जल्दी ही उसे हाथी भी मिल गया तो वह उससे बोला — "ओ जंगल के राजा, शेर के नम्बर दो हाथी, मेरी सहायता करो। मेरे घर में एक बहुत ही भयानक लड़ने वाला बैठा है जिसने राइनोसिरोस को

[28] Translated for the word "Giant".

बहुत बुरा भला कहा है और वह तो आपका भी मॉस निकालने की बात करता है।"

हाथी ने अपनी बड़ी सूँड़ से अपना सिर खुजलाया, अपने बड़े बड़े कान इधर उधर हिलाये और अपना शरीर हिलाया और फिर अपना गला साफ कर के बड़े खरगोश से बोला — "ओ मेरे प्यारे बड़े खरगोश, मैं तुम्हारे इस बड़े लड़ने वाले से जरूर बात करता पर इस समय मेरा नहाने का समय हो गया है और मैं उस समय को अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहता।

इसके अलावा तुम मुझे कल भी नहीं ढूँढना क्योंकि मैं कल ज़रा बाहर जा रहा हूँ। आ कर मैं तुमसे फिर जल्दी ही मिलता हूँ।" कह कर वह मुड़ा और कूद कर घने जंगल में अपने रास्ते चला गया।

अब बड़ा खरगोश बिल्कुल ही नाउम्मीद हो चुका था। अब वह क्या करे। वह वहीं घास पर बैठ गया और सुबकने लगा।

कुछ देर बाद वहॉ से एक मेंढक गुजरा तो बड़े खरगोश को सुबकते देख कर वहॉ रुक गया और उससे पूछा — "बड़े खरगोश भाई, तुम इतना क्यों सुबक रहे हो? तुम्हें क्या हो गया है? क्या बात है कुछ बोलो तो।"

बड़ा खरगोश सुबकते हुए बोला — "काश तुम जान सकते मेंढक भाई। मेरे घर में एक सबसे बड़ा लड़ने वाला आ कर बैठ गया है। वह बहुत ही भयानक लड़ने वाला है।

ज़रा सोचो कि उसने गीदड़, चीता, राइनोसिरोस और हाथी जैसे बड़े बड़े जानवरों को भी बिना लड़े और बिना मेरे घर में से बाहर निकले भगा दिया है और मैं अब इस हालत में हूँ कि मैं अपने ही घर के अन्दर नहीं घुस सकता।"

मेंढक बोला — "यह तो बड़ी अजीब सी बात है। वह तो लड़ने वाला है। वह राइनोसिरोस को भी कुचल सकता है और हाथी का भी मॉस निकाल सकता है तो वह कोई मजाक नहीं कर रहा। इसको तो मैं जरूर देखूँगा कि वह ऐसा गन्दा जानवर कौन सा है जो यह सब कर सकता है।"

कह कर वह तुरन्त ही बड़े बड़े कदम उठाता हुआ बड़े खरगोश के घर की तरफ चल दिया। जब वह मेंढक बड़े खरगोश के घर के पास पहुँचा तो वह उसके घर के दरवाजे में खड़ा हो कर चिल्लाया — "वह कौन है जो मेरे दोस्त बड़े खरगोश के घर में छिपा बैठा है?"

गीदड़, चीता और राइनोसिरोस को भगाते भगाते अब कैटरपिलर का सिर कुछ सूज गया था फिर भी वह अपनी ज़ोर की आवाज में निडर हो कर बोला — "मैं छिपा हुआ नहीं हूँ। मैं सबसे बड़ा लड़ने वाला हूँ।

मैंने घास के मैदान ओर जंगल के सारे जानवरों को भगा दिया है। मैंने तो राइनोसिरोस को भी कुचल दिया और हाथी का भी मॉस निकाल लिया।"

मेंढक ने जिसको हर एक जानता है कि जितना ही वह बदसूरत होता है उतना ही वह बहादुर और अक्लमन्द भी है कैटरपिलर के इन शब्दों पर ध्यान नहीं दिया और एक ही कूद में बड़े खरगोश के घर में घुस गया।

वह उस अँधेरे में यह कहते हुए आगे बढ़ता गया "कहाँ हो तुम ओ सबसे बड़े लड़ने वाले। मुझे आज बहुत खुशी है कि आज मैं अपने जोड़ीदार से मिलने आ रहा हूँ।"

और फिर कैटरपिलर ने पास आते देखा मेंढक को, उसके बड़े से हरे सिर को, उसकी पीली आँखों को। इस सबको देख कर तो कैटरपिलर डर ही गया।

बड़े खरगोश के घर में पीछे के एक कोने में को छिपते हुए वह कमजोर सी आवाज में बोला — "मेंढक भाई मैं तो बेचारा छोटा सा कैटरपिलर हूँ।"

यह सुन कर मेंढक मुस्कुरा दिया। उसने कैटरपिलर को उठाया और बाहर ले गया ओर उसे बड़े खरगोश को दिखाते हुए बोला — "लो यह है तुम्हारा घर घुसपैठिया।"

बड़ा खरगोश तो उस छोटे से कीड़े को देख कर बहुत ही शर्मिन्दा हुआ।

पर वह जल्दी ही यह सोच कर खुश भी हो गया कि जिन जानवरों के पास वह सहायता के लिये गया था उन्होंने उसके साथ

किस तरह का बर्ताव किया था – वे बड़े थे, ताकतवर थे, पर डरे हुए थे। और यह काम एक छोटे से मेंढक ने कर दिया।

बड़ा खरगोश बोला — "ओ मेरे दोस्त मेंढक तुमको बहुत बहुत धन्यवाद। तुमको जिसको हर जानवर बदसूरत और छोटा और यह कह कर चिढ़ाता है कि तुम तो अपनी रक्षा अपने आप ही नहीं कर सकते वही आज सबसे बहादुर और चतुर जानवर निकला। मैं तुम्हारी यह बात आज सब जानवरों में फैला दूँगा।"

जब बड़ा खरगोश यह सब कह रहा था तो मैदानों और जंगल के सारे जानवर बड़े खरगोश के घर के पास आ गये और आ कर बहुत हँसे जब उनको पता चला कि बड़े खरगोश के घर में क्या हुआ था।

9 शेर, बड़ा खरगोश और हयीना[29]

खरगोश की यह लोक कथा अफ्रीका के केन्या देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें देखने वाली बात यह है कि एक छोटा सा खरगोश कैसे हयीना जैसे बड़े जानवर को तंग करने में सफल हो सका।

एक बार की बात है कि सिम्बा[30] शेर अपनी गुफा में अकेला रहता था। जब वह जवान था तब तो उसे वहाँ अकेले रहना कुछ ज़्यादा बुरा नहीं लगा पर इस कहानी से पहले उसकी टाँग में इतनी ज़ोर से चोट लग गयी कि वह अपने लिये खाना ही नहीं ला सका। तब उसको लगा कि ज़िन्दगी में एक साथी कितना जरूरी होता है।

उसकी हालत बहुत खराब हो जाती अगर सूँगूरू बड़ा खरगोश[31] एक दिन उसकी गुफा में उससे मिलने न आता।

जब सूँगूरू खरगोश ने सिम्बा शेर की गुफा में झाँका तो उसको लगा कि शेर बहुत भूखा है। वह तुरन्त ही अपने बीमार दोस्त की देखभाल और उसके आराम का इन्तजाम करने के लिये दौड़ गया।

---

[29] The Lion, the Hare and the Hyena – a Hare and Hyena folktale from Kenya, Eastern Africa. Adopted from the Book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela. Retold by Phyllis Savory. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com .

[30] Simba is the name of the lion

[31] Soongooroo is the name of the hare. Hare is a bit bigger than a rabbit. See its picture above.

बड़े खरगोश की अच्छी देखभाल से सिम्बा शेर धीरे धीरे अच्छा हो गया और उसकी ताकत भी वापस आ गयी। अब वह अपने दोनों के लिये छोटे छोटे शिकार पकड़ कर लाने लगा था।

उन शिकारों की वजह से बहुत जल्दी ही शेर की गुफ़ा के दरवाजे पर हड्डियों का ढेर भी जमा होने लगा।

एक दिन न्यान्गौ हयीना[32] अपने लिये खाना ढूँढ रहा था कि उसको हड्डियों की खुशबू आयी। वह खुशबू उसको सिम्बा शेर की गुफा तक ले आयी। पर क्योंकि वे हड्डियाँ गुफा के अन्दर से भी देखी जा सकती थीं इसलिये वह उनको चोरी से चुरा नहीं सकता था।

अपनी जाति के और हयीनाओं की तरह क्योंकि वह भी एक कायर था इसलिये उसने सोचा कि अगर उसको वह स्वादिष्ट खाना खाना है तो उसको सिम्बा शेर से दोस्ती बनानी चाहिये। सो वह उस गुफा में अन्दर घुसा और खाँसा।

इस आवाज को देखने के लिये कि यह आवाज कहाँ से आयी और किसने की सिम्बा शेर बोला — "कौन है जो शाम को यह भयानक आवाज कर रहा है?"

शेर की बोली सुन कर हयीना के पास जितनी हिम्मत थी वह भी जाती रही फिर भी वह बोला — "यह मैं हूँ तुम्हारा दोस्त न्यान्गौ हयीना।

[32] Nyangau Hyena. See its picture above.

मैं तुमसे यह कहने आया हूँ कि जंगल के जानवर तुमको बहुत याद कर रहे हैं और हम सब तुम्हारे अच्छे हो कर अपने बीच में जल्दी आने की दुआ मना रहे हैं।"

शेर गुर्राया — "निकल जाओ यहाँ से। क्योंकि अगर तुम मेरे दोस्त होते तो बजाय इन्तजार करने के मेरी तबियत का हाल बहुत पहले पूछते। चले जाओ यहाँ से। तुम मेरे दोस्त नहीं हो।"

हयीना बेचारे ने अपनी पूँछ अपने पिछले पैरों के बीच में दबायी और वहाँ से भाग लिया। यह देख कर पीछे से वह बड़ा खरगोश हँस रहा था। हयीना वहाँ से चला तो गया पर वह उन हड्डियों के ढेर की खुशबू को नहीं भूल सका जो शेर की गुफा के दरवाजे पर पड़ा था।

हयीना ने सोचा "मैं फिर वहाँ जाने की कोशिश करूँगा जब यह बड़ा खरगोश वहाँ नहीं होगा।"

सो कुछ दिन बाद जब बड़ा खरगोश शाम का खाना पकाने के लिये नदी से पानी लेने गया था तब हयीना ने फिर एक बार शेर के घर आने की सोची। वह जब शेर के घर आया तो शेर अपनी गुफा के दरवाजे पर ही सो रहा था।

न्यान्गौ धीरे से बोला — "दोस्त, मुझे ऐसा लग रहा है कि तुम्हारी टाँग का घाव बहुत ही धीरे धीरे भर रहा है क्योंकि तुम्हारा दोस्त सूँगूरू बड़ा खरगोश ठीक से तुम्हारी देखभाल नहीं कर पा रहा है।"

शेर गुर्राया — "क्या मतलब है तुम्हारा, मुझे तो सूंगूरू का धन्यवाद देना चाहिये कि मुझे अपनी बीमारी के बुरे दिनों में उसकी वजह से भूखा नहीं मरना पड़ा। जबकि तुम और तुम्हारा कोई भी साथी मेरे पास नहीं आये।"

हयीना उसको विश्वास दिलाता हुआ बोला — "पर जो कुछ मैंने तुमसे कहा वह सब सच है। सारे जंगल में यह सभी जानते हैं कि सूँगूरू बड़ा खरगोश तुम्हारा इलाज ठीक से नहीं कर रहा ताकि तुम्हारा घाव देर से भरे।

क्योंकि जब तुम ठीक हो जाओगे तो वह तुम्हारे घर में जो नौकर की तरह काम कर रहा है वहाँ से निकाल दिया जायेगा। और यह नौकर की जगह क्योंकि उसके लिये बड़ी आरामदायक जगह है वह इस जगह को छोड़ना नहीं चाहेगा।

मैं तुमको पहले से बता रहा हूँ कि सूँगूरू बड़ा खरगोश यह सब तुम्हारे अच्छे के लिये नहीं कर रहा है।"

उसी समय सूँगूरू नदी से घड़े[33] में पानी भर कर ले आया। उसने अपना घड़ा नीचे रखा और हयीना से बोला — "उस दिन की घटना के बाद तो मुझे तुमको यहाँ शाम को देखने की बिल्कुल ही उम्मीद नहीं थी। इस समय तुम्हें यहाँ से क्या चाहिये?"

[33] Translated for the word "Gourd". Gourd is the dried outer cover of a pumpkin like fruit. It is made hollow and then is used to keep wet or dry things. See its picture above.

सिम्बा शेर बड़े खरगोश से बोला — "मैं तुम्हारे बारे में न्यान्गौ की कहानियॉ सुन रहा हूॅ। वह कह रहा है कि तुम सारे जंगल में बहुत होशियार और चालाक डाक्टर हो।

उसने मुझसे यह भी कहा कि जो दवा तुम देते हो वे किसी और के पास नहीं हैं। पर साथ में वह यह भी कह रहा था कि तुम मेरा घाव और पहले ठीक कर सकते थे अगर यह तुम्हारी भलाई में होता तो, पर तुमने यह जान बूझ कर नहीं किया। क्या यह सच है?"

सूॅगूरू ने एक पल के लिये सोचा। वह जानता था कि उसको यह मामला बहुत ही सॅभाल कर सुलझाना है क्योंकि उसको पक्का शक था कि यह न्यान्गौ हयीना उसके साथ कोई चाल खेलना चाहता है।

उसने हिचकिचाते हुए शेर को जवाब दिया — "हॉ और ना। आप तो जानते हैं कि मैं एक बहुत छोटा सा जानवर हूॅ और कभी कभी वे दवाएॅ जिनकी मुझे जरूरत पड़ती है बहुत बड़ी होती हैं और मैं उनको नहीं ला सकता हूॅ जैसा कि सिम्बा शेर जी आपके साथ हुआ।"

अब शेर को यह जानने की इच्छा हुई कि उसके साथ क्या हुआ तो वह बैठा हो गया और बड़े खरगोश से पूछा — "क्या मतलब तुम्हारा? क्या हुआ मेरे साथ?"

बड़ा खरगोश बोला — "अब यही ले लो। मुझे तुम्हारे घाव पर लगाने के लिये हयीना की पीठ की खाल के एक टुकड़े की जरूरत

थी ताकि वह जल्दी से भर जाये पर मैं इतना छोटा सा जानवर उसकी खाल कैसे लाता?"

यह सुनते ही इससे पहले कि न्यान्गौ हयीना वहाँ से भागे सिम्बा शेर न्यान्गौ हयीना पर टूट पड़ा और उसने उसकी पीठ से सिर से ले कर पूँछ तक एक लम्बी सी पट्टी फाड़ कर अपनी टाँग के घाव पर बाँध ली।

जैसे ही शेर ने हयीना की पीठ से वह पट्टी फाड़ी उसके शरीर के जो बाल खिंच गये थे वे सारे के सारे बाल खड़े ही रह गये।

तबसे आज तक न्यान्गौ और दूसरे हयीनाओं के बाल लम्बे खुरदरे और खड़े हुए होते हैं।

इस घटना के बाद तो सूँगूरू बड़ा खरगोश डाक्टर की हैसियत से बहुत ही मशहूर हो गया क्योंकि हयीना की खाल की पट्टी बाँधने के बाद तो सिम्बा शेर की टाँग का घाव बहुत ही जल्दी भर गया था।

पर न्यान्गौ हयीना अपना मुँह दूसरे जानवरों के बीच में बहुत दिनों तक नहीं दिखा सका।

10 सुलतान सूले[34]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के उत्तरी नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली है।

बहुत पुरानी बात है किसी जंगल के किनारे एक बहुत ही गरीब आदमी रहता था जिसका नाम हमज़ा[35] था। उसके माता पिता भाई बहिन कोई नहीं था पर वह दयालु बहुत था।

एक दिन उसने जंगल में एक खरगोश के बच्चे को दर्द से कराहते सुना। पास जा कर उसने देखा तो खरगोश के एक छोटे से बच्चे की एक टॉग बुरी तरह से घायल थी।

हमज़ा उसे घर ले आया और कई दिन तक उसकी टॉग की मरहम पट्टी कर के उसे ठीक कर लिया। फिर वह उसे जंगल ले गया ताकि वह अपने साथियों से मिल सके पर उस बच्चे ने जाने से इनकार कर दिया। वह हमज़ा के साथ ही रहा और उसका पालतू खरगोश बन गया।

रोज ही हमज़ा और खरगोश खाने की तलाश में बाहर निकलते थे। किसी दिन उनकी अच्छी किस्मत से उन्हें कोई जानवर पकड़ में आ जाता तो वे जंगली फल, फूलों, और जड़ों के साथ उसे खा लेते

[34] Sultan Sule – a Hausa folktale from Northern Nigeria

[35] Hamza – Hausa Tribe people normally follow Muslim religion, so this name is a Nigerian Muslim name.

पर कभी कभी जब उनको कोई जानवर नहीं मिलता तो उनको खाली फल फूलों पर ही गुजारा करना पड़ता, और कभी कभी तो उनको भूखे पेट भी रहना पड़ जाना पड़ता।

एक दिन वे दोनों पेड़ के नीचे बैठे हुए थे कि हमज़ा बोला — "खरगोश भाई, तुम अपने साथियों से जा कर क्यों नहीं मिलते। मैदानों में तो काफी खाना मिलता है। मैं तो तुम्हें कुछ भी नहीं दे पाता, क्यों तुम मेरे साथ अपना समय बर्बाद कर रहे हो?"

खरगोश बोला — "मालिक, आप क्यों परेशान होते हैं। हम लोग भूखे रहते हैं इसमें आपकी क्या गलती? मैं जंगली खरगोशों के साथ घूमने की बजाय आपके साथ भूखे रहना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

यह सुन कर हमज़ा को आश्चर्य भी हुआ और उस जानवर पर दया भी आयी सो खरगोश उसके साथ ही रहा।

पर यह क्या? यह क्या उसका अपना खरगोश बोला था? हमज़ा ने खरगोश से कहा — "खरगोश भाई, भूख में आदमी कितना पागल सा हो जाता है कि उसे जानवर भी बोलते सुनायी पड़ते हैं।"

खरगोश ने कहा — "मालिक, आप पागल नहीं हुए हैं, आप बिल्कुल ठीक हैं। मैं ही बोला था।"

हमज़ा को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने दिनों में वह यह भी नहीं जान पाया कि उसका पालतू खरगोश करामाती था और वह बोलता भी था।

खरगोश बोलता ही गया — "अभी तक आप मेरे लिये सब कुछ करते रहे अब मेरी बारी है। कल मैं खुद आपके लिये खाने की तलाश में जाऊँगा।

इससे आप अपने खाने का गुजारा कर पायेंगे और यह भी हो सकता है कि मैं अपनी जरूरत से ज़्यादा खाना पा जाऊँ तब मैं वह खाना आपको दे दूँगा।" हमज़ा अपनी इस निराशा की हालत में खरगोश से कुछ भी न कह सका।

अगले दिन सूरज निकलते ही खरगोश अपने सफर पर निकल पड़ा। "मैं शाम को आपसे यहीं मिलूँगा।" कह कर खरगोश दौड़ गया।

काफी दूर चलने के बाद वह एक नदी के किनारे एक घास के मैदान में आ गया। वहाँ उसने खूब पेट भर खाना खाया और फिर थक कर एक पेड़ के नीचे बैठ गया।

बैठे बैठे वह यह सोचता रहा कि वह अपने मालिक की सहायता कैसे करे और यह सोचते सोचते वह अनजाने में अपने अगले पंजों से अपने सामने की जमीन खुरचता रहा।

यकायक उसका एक पंजा किसी सख्त चीज से टकराया। उसने देखा तो कोई चमकीली चीज बाहर झाँक रही थी।

उसने उसको बाहर निकाल लिया — "हीरा? अरे, यह तो आदमी के काम की चीज़ है। पर अगर मैंने इसे हमज़ा को दे दिया तो वह इसे बाजार में बेचने की कोशिश करेगा और गरीब होने की वजह से वह चोरी के इलजाम में पकड़ा जायेगा। सो इसका कोई और रास्ता खोजना होगा।"

कुछ देर तक तो वह चुपचाप सोचता रहा कि वह इसका क्या करे पर फिर वह यकायक उठा और नदी के पार आ कर बड़े शहर की तरफ चल दिया।

वह शहर के बीच में से आदमी की आवाज में चिल्लाता जा रहा था — "मुझे रास्ता दो, मुझे रास्ता दो। मैं यहॉ के अमीर से मिलना चाहता हूँ।"

सभी लोग आश्चर्य से उसको देखने लगे क्योंकि उन्होंने बोलता हुआ खरगोश पहले कभी नहीं देखा था। जल्दी ही खरगोश को अमीर का घर मिल गया और वह उसमें घुस गया।

चौकीदारों ने उसे रोकने की कोशिश भी की तो वह बोला — "अमीर को मुझे अपने मालिक का सन्देश देना है मेरा रास्ता छोड़ो।"

खरगोश के मुँह से आदमी जैसी आवाज सुन कर चौकीदार भी आश्चर्यचकित रह गये और उन्होंने उसको अन्दर जाने दिया। अमीर अपने ऑगन में बैठा हुआ था। उसने दरवाजे पर शोर सुना

तो खरगोश को अन्दर बुलाया और पूछा — "तुम्हारे मालिक कौन हैं? उनका क्या नाम है?"

खरगोश ने सिर झुकाया और बोला — "मेरे मालिक का नाम सुलतान सूले है। आपने यह नाम तो जरूर ही सुना होगा। मैं उनकी तरफ से आपके लिये कुछ भेंट लाया हूँ।" कह कर उसने सावधानी से वह हीरा निकाला और अमीर के पैरों में रख दिया।

उस अमीर ने सुलतान सूले का नाम कभी नहीं सुना था परन्तु वह यह बात कह नहीं सका क्योंकि वह तो यही सोच रहा था जो आदमी इस करामाती खरगोश का मालिक होगा वह कितना अमीर होगा।

फिर उसने हीरा उठा कर देखा तो वह बोला — "यह तो बड़ा कीमती हीरा है। तुम्हारे मालिक ने मुझे इतनी कीमती भेंट क्यों भेजी है?"

खरगोश ने एक बार फिर झुक कर कहा — "उन्होंने सुना है कि आपकी बेटी शादी के लायक है इसलिये उससे शादी की इच्छा रखते हुए उन्होंने आपको यह पहली भेंट भेजी है। अगर आप अपनी बेटी की शादी उनसे करने को तैयार हों तो वह आपको और अधिक कीमती भेंटें भी देंगे।"

अमीर ने पूछा — "क्या तुम्हारे मालिक कहीं दूर रहते हैं?"

"यहाँ से तीन दिन के सफर के बाद उनका महल है। अगर आप शादी के लिये तैयार हों तो मैं सात दिन के अन्दर अन्दर उनको ले कर यहाँ हाजिर हो जाऊँगा।"

अमीर उस हीरे को उलट पलट कर देखता रहा। उसने इतना कीमती हीरा पहले कभी नहीं देखा था। उस हीरे को देख कर वह मोहित सा हो गया और सुलतान सूले का लोहा मानने को तैयार हो गया।

उसने खरगोश से कहा — "जाओ और जा कर अपने मालिक से कहना कि वह हाजिर हों हम सात दिन बाद शादी की दावत के लिये तैयार रहेंगे।" यह सुनते ही खरगोश खुशी से उछलता कूदता वहाँ से भाग गया।

पेड़ के नीचे हमज़ा अभी भी उसका इन्तजार कर रहा था। हमज़ा ने पूछा — "क्या तुम्हें खाना मिला?"

खरगोश बोला — "आज तो मुझे खाने से भी ज़्यादा अच्छी चीज़ मिली है मालिक। अगर आप जैसा मैं कहूँ वैसा ही करें तो मैं आपकी शादी सात दिन के अन्दर अन्दर एक बहुत ही सुन्दर लड़की से करा सकता हूँ।"

यह सुन कर हमज़ा बड़े ज़ोर से हँसा और सोचने लगा कि यह जानवर जरूर ही कुछ पागल हो गया है।

लेकिन खरगोश ने अपनी बात जारी रखी — "छह दिन तक हम लोगों को यहीं छिपे रहना चाहिये। सातवें दिन मैं आपको उस

अमीर के घर ले जाऊँगा जिसकी बेटी से मैं आपकी शादी तय कर के आया हूँ। मगर जैसा मैं कहूँ आपको वैसा ही करना होगा चाहे आपको मेरी बातें बवकूफों जैसी ही क्यों न लगें।"

कुछ सोच कर हमज़ा राजी हो गया।

छह दिन तक वे दोनों जंगली फल मूल खा कर वहीं रहे। सातवें दिन खरगोश और हमज़ा सुबह ही उठ गये।

खरगोश हमज़ा से बोला — "मालिक, आज मैं आपसे जो कुछ भी करने को कहूँ चाहे वह आपको कितना ही बेकार और नापसन्द क्यों न लगे पर आप वही काम करियेगा। आखीर में आप देखेंगें कि जो कुछ भी मैंने किया है वह आपकी भलाई के लिये ही किया है।"

हमज़ा ने कहा — "ठीक है, मैं वही करूँगा जो तुम कहोगे।"

"तब चलें।" और दोनों जंगल की तरफ चल दिये।

नदी के किनारे पहुँच कर खरगोश ने हमज़ा से कहा — "मालिक, आप अभी यहीं रुकें। मैं नदी के पार शहर में हो कर थोड़ी देर में आता हूँ लेकिन जाने से पहले मैं आपकी खूब पिटायी कर जाता हूँ जिससे आप घायल से दिखायी दे सकें।

मुझे मालूम है कि मुझे यह काम आप जैसे नेक और भले आदमी के साथ नहीं करना चाहिये मगर मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आखीर में सब कुछ ठीक हो जायेगा और आप खुश रहेंगे।"

हमज़ा इस पिटायी से बचना चाहता था परन्तु यह सोच कर चुप रह गया कि आखीर में तो उस अमीर की लड़की से उसकी शादी हो ही जायेगी।

खरगोश ने पास से एक पतली लम्बी डंडी तोड़ी और उससे हमज़ा को खूब मारा। जल्दी ही गरीब हमज़ा की पीठ खूब घायल हो गयी।

"अब मालिक आप पत्थरों में छिप कर लेट जाइये और इस बात का ख्याल रखिये कि जब तक मैं न लौटूँ कोई और आपको देख न पाये।"

हमज़ा ने वैसा ही किया और खरगोश एक ही छलाँग में नदी पार कर अमीर के महल में पहुँच गया। वहाँ जा कर वह क्या देखता है कि सभी लोग दावत की तैयारियों में लगे हुए थे, खास कर स्त्रियाँ और नौकर। छत्तीस प्रकार के खाने तैयार किये जा रहे थे। महल सजाया जा रहा था।

खरगोश वहाँ पहुँचते ही बोला — "अमीर कहाँ है? अमीर कहाँ है? हम लोगों के साथ एक भयानक घटना घट गयी है। मैं वह घटना उनको बताना चाहता हूँ।"

अमीर ने उसको बुलाया और पूछा — "क्या बात है? तुम्हारे मालिक कहाँ हैं? तुमने कहा था कि तुम उनको अपने साथ लाओगे पर वह तो कहीं दिखायी नहीं दे रहे?"

ख़रगोश हॉफ़ता सा बोला — "सरकार, मैं और मेरे मालिक हम दोनों अकेले जंगल से आ रहे थे कि कुछ डाकुओं ने हम पर हमला कर दिया। उन्होंने उनका घोड़ा छीन लिया और सब कीमती भेंटें छीन लीं जो हम यहॉ शादी के लिये ले कर आ रहे थे। यहॉ तक कि उन्होंने उनके बदन के कपड़े भी छीन लिये।

अब वह नंगे जंगल में पड़े हैं और इस हालत में यहॉ आ भी नहीं सकते। डाकुओं को यह नहीं मालूम था कि मैं जादू का ख़रगोश हूँ इसलिये उन्होंने मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। मैं तुरन्त ही यहॉ आपको यह बताने चला आया ताकि आप उन्हें यहॉ जल्दी से जल्दी ला सकें।"

अमीर यह सुन कर बहुत दुखी हुआ। उसने अपने नौकरों से कुछ कपड़े मॅगवाये तो वे घर में से सबसे अच्छे कपड़े छॉट कर ले आये।

फिर अमीर ने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि सुलतान सूले बहुत कष्ट में हैं। ये कपड़े और एक अच्छा घोड़ा ले जाओ और उन्हें इज़्ज़त के साथ तुरन्त ही यहॉ ले आओ।

ख़रगोश सिर झुका कर बोला — "अमीर साहब, घोड़े और कपड़ों के साथ पहले आप मुझे जाने दें। मेरे मालिक इनके सामने अपनी उस हालत में शर्मिन्दगी महसूस करेंगे इसलिये आप कुछ देर इन्तजार करें। वह अभी आपके सामने आपके होने वाले दामाद की हैसियत से हाजिर हो जायेंगे।"

"अच्छी बात है लेकिन तुम घोड़ा और कपड़े दोनों एक साथ ले कर कैसे जाओगे?"

"आप अपने नौकरों से मेरी पीठ पर कपड़े बँधवा दें और घोड़े की लगाम मेरे मुँह में दे दें। इस तरह मैं दोनों चीज़ें अपने मालिक के पास ले जाऊँगा।"

नौकरों ने तुरन्त ही कपड़े उसकी पीठ से बाँध दिये और घोड़े की लगाम उसके मुँह में दे दी और खरगोश उछलता कूदता अपने मालिक के पास आ पहुँचा।

आ कर वह बोला — "यह लीजिये कपड़े और घोड़ा, अब आप नदी में नहा धो कर के ये कपड़े पहन लीजिये और बस हम लोग फिर इस घोड़े पर चलेंगे उस अमीर के पास।"

हमज़ा ने इतने बढ़िया कपड़े पहले कभी नहीं देखे थे। उसने तुरन्त ही नदी में नहा कर वे कपड़े पहन लिये।

उसको सजा बजा देख कर खरगोश बहुत खुश हुआ और बोला — "मालिक, इन कपड़ों में तो आप बिल्कुल सुलतान लग रहे हैं। मुझे बहुत दुख है कि मुझे आपको मारना पड़ा परन्तु नौकरों के लिये यह काम बहुत जरूरी था क्योंकि अमीर के घर में वे ही आपको तैयार करेंगे।"

फिर खरगोश ने उसको वहाँ का सब हाल बताया कि किस तरह उसने अमीर को बहकाया और यह भी कहा कि आपका नाम

सुलतान सूले है हमज़ा नहीं है और तीन दिन की यात्रा के बाद आपका राज्य है। सो इन दोनों बातों को भूलियेगा नहीं।

हमज़ा बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला कि वह नहीं भूलेगा और कूद कर घोड़े पर सवार हो गया।

जब वे अमीर के शहर में पहुॅचे तो सभी अपने अपने घरों से निकल कर उन्हें देखने और सलाम करने लगे। महल में भी सबने सिर झुका कर उसको सलाम किया और सुलतान सूले महल के अन्दर दाखिल हुए।

अन्दर के बड़े दरवाजे पर अमीर ने सुलतान सूले का स्वागत किया। अमीर हमज़ा को देख कर बहुत खुश हुआ। उसे अपनी बेटी के लिये ऐसा ही दुलहा चाहिये था।

अमीर ने हमज़ा को बड़ी इज़्ज़त के साथ घोड़े से नीचे उतारा और अपनी बेटी को बुला कर उससे उसे मिलवाया। हमज़ा ने भी इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी।

यह सब देख कर हमज़ा भी बहुत खुश हुआ और खरगोश को थपथपाता हुआ फुसफुसाया — "धन्यवाद खरगोश भाई, तुमने सच में मेरी बड़ी सेवा की है। मुझे खुशी है कि मैंने तुम्हारा कहा माना।"

हमज़ा और अमीर की बेटी की शादी हो गयी। शादी की दावत पॉच दिन तक चली। शादी भर हमज़ा बहुत ही परेशान रहा कि शादी के बाद वह क्या करेगा। उसके पास तो रहने के लिये घर भी नहीं था जहॉ वह अपनी दुलहिन को रख सकता।

पर खरगोश उसे कहीं दिखायी नहीं दे रहा था। फिर भी उसको खरगोश की करामातों पर पूरा भरोसा था इसलिये उसने उसकी ज़्यादा चिन्ता नहीं की।

जब खरगोश ने देखा कि उसके मालिक की शादी उस अमीर की लड़की से ठीक से हो गयी तो वह वहॉ से लौट पड़ा। नदी पार कर जंगल पार कर वह मैदानों में आ गया।

दो दिन और दो रात वह बराबर चलता रहा। अब वह एक ऊॅचे पहाड़ की तलहटी में पहुॅच गया था। वहॉ एक छोटा सा गॉव बसा हुआ था जिसमें एक राजा का महल था और पास में छोटे छोटे घर थे।

वहॉ उसने देखा कि सारा गॉव बहुत शान्त पड़ा था कहीं कोई आवाज सुनायी नहीं पड़ रही थी। खरगोश की समझ में नहीं आ रहा था कि वहॉ ऐसा क्यों है।

खरगोश उस महल के दरवाजे पर जा कर बोला — "अन्दर कोई है?"

एक बुढ़िया ने दरवाजा खोला और पूछा — "तुम कौन हो और इतना शोर क्यों मचा रहे हो? क्या तुम हम लोगों की तरह से डरे हुए नहीं हो?"

अब खरगोश की समझ में आया कि उस गॉव में इतनी शान्ति क्यों थी, फिर भी वह बोला — "नहीं तो। मैं तो केवल यह जानना

चाहता हूँ कि यह मकान किसका है क्योंकि यहाँ मुझे कोई दिखायी ही नहीं दे रहा।"

बुढ़िया बोली — "लगता है तुम कोई अजनबी हो। यह मकान और ये सारे मकान एक सात सिर वाले नाग के हैं। वह अभी खाने की तलाश में बाहर गया हुआ है। अच्छा हो कि तुम उसके आने से पहले पहले ही यहाँ से भाग जाओ।"

खरगोश बोला — "नहीं, मैं यहाँ से भागने के लिये नहीं आया। मैं अन्दर आ जाता हूँ और उस नाग का इन्तजार करता हूँ।"

और बुढ़िया के कुछ कहने से पहले ही वह खरगोश महल के अन्दर घुस गया और दरवाजा बन्द कर लिया। खरगोश ने देखा कि नाग का घर तो कीमती हीरे जवाहरातों से भरा पड़ा था।

उसमें कई कालीन थे जो सोने के खास तारों से बुने गये थे। चाँदी और सोने के अनगिनत बर्तन थे। बहुत सारे नौकर चाकर अपना काम करते इधर उधर घूम रहे थे पर वे सब डरे हुए थे।

खरगोश ने बुढ़िया से कहा — "अब आप जाइये। जब नाग आयेगा तो मैं उसे देख लूँगा।"

जल्दी ही उसे लगा कि बाहर कुछ आँधी सी चल रही है और कुछ आवाजें आ रही हैं।

तभी एक आवाज आयी — "बुढ़िया, बुढ़िया, दरवाजा खोलो, मैं तुम्हारा मालिक सात सिर वाला नाग।"

दीवार पर से एक तलवार उठाते हुए खरगोश ने थोड़ा सा दरवाजा खोला। उसमें से नाग का केवल एक सिर ही अन्दर आ सका।

जैसे ही उस नाग ने सिर अन्दर किया वैसे ही खरगोश ने उस नाग का सिर काट दिया। इस तरह खरगोश ने एक एक कर के उसके सातों सिर काट दिये।

नाग के मरते ही बुढ़िया और नौकर चाकर सब सुखी हो गये। सब बोले — "आपने हमें इस भयानक नाग के चंगुल से छुड़ाया है इसलिये अब आप ही हमारे राजा हैं। आज से हम आप ही का हुकुम मानेंगे।"

खरगोश ने कहा — "नहीं, मैं तुम्हारा राजा नहीं हूँ पर सुलतान सूले अपनी रानी के साथ यहाँ आ रहे हैं वही तुम्हारे राजा होंगे और ये सारे मकान तथा खजाना भी उन्हीं का होगा।"

कह कर खरगोश ने थोड़े से हीरे जवाहरात अपनी पीठ पर बँधवाये और वहाँ से अपने मालिक के पास चल दिया।

पाँचवें दिन की शाम थी और शादी की दावत अब खत्म होने जा रही थी पर खरगोश का कहीं पता नहीं था। इसलिये हमज़ा बहुत परेशान था कि वह अगले दिन अपनी पत्नी को ले कर कहाँ

जायेगा। कई बार उसकी पत्नी ने उससे पूछा भी कि वह कहाँ रहता है पर वह तो कुछ भी बता ही नहीं पा रहा था।

छठे दिन वह अपने ससुर व पत्नी के साथ बैठा था कि खरगोश उछलता कूदता आया और बोला — "मालिक, आपका महल सज गया है और सभी लोग बहू का इन्तजार कर रहे हैं। और जैसा कि आपने मुझसे कहा था मैं अमीर और उसकी बेटी के लिये कुछ भेंट भी ले आया हूँ।"

यह सुन कर हमज़ा ने खरगोश की पीठ पर लदी हीरों की पोटली खोली और अपने ससुर को दे दी और बोला — "यह बचा हुआ दहेज है। क्या मैं अब अपनी पत्नी के साथ अपने राज्य जा सकता हूँ क्योंकि मुझे अपने राज्य से निकले काफी दिन हो गये हैं? वहाँ सभी मेरा और मेरी पत्नी का स्वागत करने के लिये बेचैन हैं।"

अमीर बोला — "जाओ बेटा, अल्लाह तुम्हारी हिफाजत करे। मैं तुम जैसे दामाद[36] को पा कर धन्य हो गया।"

अगले दिन हमज़ा और उसकी पत्नी दोनों काले घोड़ों पर सवार होकर नाग के घर चल दिये। खरगोश आगे आगे जा रहा था। दो दिन और दो रात के बाद जब वे घर पहुँचे तो सभी नौकर चाकर उनके स्वागत में खड़े थे।

[36] Translated for the word "Son-in-Law" – husband of the daughter

हमज़ा और उसकी पत्नी वहॉ बरसों तक आनन्द से रहे। उनके छह बहादुर बेटे और चार सुन्दर बेटियॉ हुईं। उसके बाद खरगोश अपने साथियों के पास वापस चला गया।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमको हमेशा दूसरों पर दया करनी चाहिये और दूसरों की सहायता करनी चाहिये। इसका फल सदा मीठा होता है।

11 कछुए और बड़े खरगोश की दौड़[37]

कछुए और बड़े खरगोश की दौड़ की यह लोक कथा अफ्रीका के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक कछुआ और एक बड़ा खरगोश[38] दोनों बात कर रहे थे कि बातों बातों में कछुआ बोला कि "मैं तुम्हें दौड़ में हरा सकता हूँ।"

पहले तो बड़ा खरगोश यह सुन कर चौंक गया फिर उसने सोचा कि शायद उसने गलत सुना हो सो उसने पक्का करने के लिये पूछा — "कछुए भाई, क्या तुमने कुछ दौड़ के बारे में बात की?"

कछुआ बोला — "हॉ खरगोश भाई, मैंने तुमसे दौड़ के बारे में ही बात की और मैं तुम्हें अपने साथ दौड़ के लिये ललकारता हूँ। बस तुम कोई दिन निश्चित कर लो और मैं यह चाहता हूँ कि उस दिन जंगल के सारे जानवर तुम्हारी हार देखने के लिये वहॉ मौजूद रहें।"

---

[37] Tortoise and Hare – a folktale from Nigeria, Africa. Adapted from the Web Site: http://allfolktales.com/wafrica/tortoise_and_hare.php
[This story is different from Aesop's version where "slow and steady wins the race". Here Tortoise wins by tricking, there he wins just by continuous walking.]

[38] Translated for the word "Hare". It is bigger than rabbit in size. See its picture above.

बड़ा खरगोश बोला — "यह तो आज मैंने सबसे ज़्यादा अजीब बात सुनी। तुमको तो जितनी दूर मैं एक दिन में दौड़ सकता हूँ उतनी दूर पहुँचने में कई साल लगेंगे।

तुम्हारे साथ दौड़ना तो मेरे लिये बड़े अपमान की बात होगी। हर जानवर जानता है कि मैं जीत जाऊँगा। यह दौड़ ठीक नहीं है। मैं तुम्हारे साथ नहीं दौड़ूँगा।"

पर कछुआ तो मानने वाला था नहीं सो दौड़ के लिये एक दिन तय कर लिया गया और सब जानवरों को दौड़ देखने का बुलावा भेज दिया गया।

इधर कछुए ने क्या किया कि अपने कुछ रिश्तेदारों को बुलाया और दौड़ के दिन उनको दौड़ के रास्ते में बीच बीच में खड़ा कर दिया जिससे ऐसा लगे कि कछुआ वहाँ पहले ही पहुँच गया है।

तय किये गये दिन सारे जानवर दौड़ के मैदान में इकट्ठा हुए। कुछ जानवर दौड़ के शुरू में खड़े थे, कुछ बीच बीच में खड़े थे और कुछ आखिरी लाइन पर खड़े थे।

दौड़ शुरू हुई और बड़ा खरगोश दौड़ खत्म करने के चक्कर में तेज़ी से दौड़ गया पर उसको कछुए के साथ दौड़ने में बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था।

बड़ा खरगोश तो अभी भी यही सोच रहा था कि कछुए के साथ उसका दौड़ना उसका अपमान था पर वह यह नहीं जानता था कि कछुआ कितना चालाक है।

कछुए ने अपने भाइयों को रास्ते में कई जगहों पर खड़ा कर रखा था और वह खुद दौड़ की आखिरी लाइन पर खड़ा था।

जैसे ही बड़ा खरगोश जंगल के रास्ते पर आया तो उसने देखा कि कछुआ उससे आगे आगे जा रहा था। "यह तो नामुमकिन है।" बड़े खरगोश ने सोचा। "यह कछुआ मुझसे आगे कैसे दौड़ सकता है?"

बड़े खरगोश ने उसके पास जा कर पूछा — "मैं तो बीच में कहीं रुका भी नहीं और तुमको कहीं देखा भी नहीं, फिर तुम मुझसे आगे कैसे निकल गये?"

कछुआ बोला — "माना कि मैं बहुत धीरे चलता हूँ पर जब मैं भागता हूँ तो कोई मुझे देख भी नहीं सकता है।"

"नामुमकिन।" कह कर बड़ा खरगोश फिर दौड़ गया।

जैसे ही वह जंगल के रास्ते के दूसरे कोने पर पहुँचा तो उसने फिर देखा कि कछुआ फिर से उससे आगे चला जा रहा था। कछुए को फिर से अपने आगे जाते देख कर बड़े खरगोश को बहुत गुस्सा आया।

वह उससे फिर बोला — "यह कैसे हुआ कि तुम फिर मुझसे आगे निकल गये।"

कछुए ने फिर वही जवाब दिया — "माना कि मैं बहुत धीरे चलता हूँ पर जब मैं भागता हूँ तो कोई मुझे देख भी नहीं सकता है।"

"नामुमकिन।" बड़ा खरगोश फिर से यही बोल कर आगे दौड़ गया। अबकी बार वह बहुत तेज़ी से दौड़ रहा था।

तीसरी बार उसे कछुआ फिर रास्ते में दिखायी दिया पर अबकी बार वह बीच में रुका नहीं और भागता ही गया। जैसे ही वह दौड़ की आखिरी लाइन तक पहुँचा तो उसने क्या देखा कि कछुआ तो वह जीत वाली लाइन पार कर रहा था।

बड़े खरगोश ने अपने सिर पर हाथ मार लिया और कछुआ दौड़ में जीत गया। इस तरह कछुए ने अपनी चालाकी से बड़े खरगोश जैसे तेज भागने वाले को भी हरा दिया। सच है कि अक्लमन्दी बड़े बड़ों को हरा देती है।

12 शिकारी और शेर[39]

इस कहानी को अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश के बच्चे बहुत शौक से कहते और सुनते हैं। तो लो तुम भी पढ़ो यह कहानी और बताओ कि तुमको कैसी लगी यह कहानी।

बहुत पहले की बात है कि एक देश के एक गॉव में एक शिकारी रहता था। एक दिन उसने अपना तीर कमान उठाया और जंगल में शिकार करने गया।

जंगल में उसने उस दिन सारे दिन में एक हिरन और दो खरगोश मारे और वह अपने इस शिकार से बहुत खुश था। उसने हिरन अपनी गर्दन में लटका लिया और दोनों खरगोश अपनी कमर में बॉध लिये।

वह खुशी से सीटी बजाता चला जा रहा था और सोचता जा रहा था कि वह अपने शिकार को अपने लोगों में कैसे बॉटेगा कि तभी उसका ध्यान किसी की सहायता के लिये पुकारने की चीख ने खींच लिया।

---

[39] The Hunter and the Lion – a Yoruba folktale from Nigeria. Adapted from the Book : "The Orphan Girl and the Other Stories". by Offodile Buchi. 2001. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com .
[My Note: This story is similar to the story "Aadmee Aur Sher" given above in which hare's role is played by an intelligent man. This story is given in the book "Mere Bachpan Ki Kahaniyan" by Sushma Gupta written in Hindi language available from hindifolktales@gmail.com .]

उसको लगा कि वह चीख किसी शेर की थी। वह चौंक गया और डर भी गया। पहले तो उसने सोचा कि "यह शायद यह मेरे शिकार के पीछे होगा।"

वह जल्दी से चीख आने वाली दिशा की तरफ मुड़ा पर उसको ऐसा कुछ दिखायी नहीं दिया जिससे वह यह जान सके कि वह शेर किस तरह की सहायता के लिये चीख रहा था।

इतनी ही देर में वही चीख फिर सुनायी दी। इस बार वह समझ गया कि यह चीख किस तरफ से आयी थी। यह शेर था यह तो पक्का था पर कहॉ था यह उसको दिखायी नहीं दे रहा था।

उसने ऊपर नीचे देखा तो देखा कि एक शेर एक पेड़ की दो डालों के बीच से तकिये की तरह लटक रहा है।

शिकारी ने बड़ी नाउम्मीदी से अपना सिर हिलाया और बुदबुदाया — "जैसा कि मैंने सोचा था यह तो वही है।"

उसने अपना हिरन तो नीचे जमीन पर रखा और अपना तीर कमान उठाया। शेर को देखते हुए उसने अपना तीर कमान पर चढ़ाया और कमान की रस्सी धीरे से खींची।

उसको लगा कि शेर तो हिल भी नहीं रहा कि तभी शेर बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो आदमी भाई मैं यहॉ फॅस गया हूँ।"

यह सुन कर शिकारी ने अपना तीर कमान नीचे कर लिया और बहुत ही सावधानी से उस पेड़ का चक्कर लगाया।

वह यह देखना चाहता था कि शेर उसके साथ कहीं कोई चाल तो नहीं खेल रहा पर उसने देखा कि नहीं वह चाल नहीं खेल रहा बल्कि वह सचमुच में ही फॅस गया है और दर्द में है।

शिकारी ने पूछा — "अरे तुम यहॉ कैसे आये? और यह सब तुम्हारे साथ किसने किया?"

शेर बोला — "पहले मुझे नीचे उतारो फिर मैं तुम्हें बताता हूॅ।"

शिकारी ने शेर को नीचे उतरने में सहायता की। उसने उसको फॅसने वाली जगह से निकाला और नीचे उतारा।

शेर बोला — "तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। यह उस बदमाश हाथी का काम है। उसी ने मुझे ऊपर फॅसा दिया था और मैं तीन दिन से यहीं लटका हुआ हूॅ।"

शिकारी बोला — "वह तो ठीक है पर अब तो तुम नीचे आ गये हो अब तुम जाओ। मुझे भी अपने परिवार के पास जाना है।"

अब जैसा कि तुमको मालूम है बच्चो, शेर उस पेड़ के ऊपर तीन दिन से फॅसा पड़ा था। वह भूखा था, थका हुआ था और प्यासा था सो उसने शिकारी से एक और चीज़ के लिये प्रार्थना की।

शेर बोला — "भाई तुमने मेरे ऊपर बड़ी दया की जो मुझे इस पेड़ से आजाद कर दिया पर केवल इससे मेरा क्या भला होगा अगर तुम मुझे यहॉ अकेला मरने के लिये छोड़ जाओ। अभी मैं कोई भी शिकार करने के लिये बहुत कमजोर हूॅ क्या तुम मुझे कुछ खाने को

दोगे मुझे बहुत भूख लगी है। मैंने तीन दिन से कुछ खाया नहीं है।"

शिकारी बोला — "मैं तुम्हारे लिये खाना कहाँ ढूँढू?"

शेर बोला — "यह हिरन मेरे लिये काफी है। यह हिरन मुझे दे दो। मुझे तो तुम सच्चे दोस्त लगते हो जिससे मैं अपनी किसी भी मुसीबत में सहायता ले सकता हूँ।

मेहरबानी कर के अभी तुम मेरी सहायता कर दो और जब मैं अपना शिकार करने के लिये थोड़ा ठीक हो जाऊँगा तब मैं तुम्हारी इस दया का बदला जरूर चुका दूँगा।"

शिकारी ने कुछ देर सोचा फिर अपने हिरन को दो हिस्सों में काटा और उसमें से एक हिस्सा शेर को दे दिया और बोला — "ठीक है, इसके लिये तुमको मुझे कुछ देने की जरूरत नहीं है। तुम इसे खाओ और जाओ। अब मैं चलता हूँ।"

शिकारी ने मुश्किल से अपनी बात खत्म ही की थी कि शेर ने एक बार में ही अपने हिस्से का हिरन निगल लिया और उससे और माँस माँगा। शिकारी ने हिरन का दूसरा हिस्सा भी उसको दे दिया।

शेर ने उसको भी तुरन्त ही खा लिया और फिर शिकारी की कमर में बँधे हुए खरगोशों की तरफ देखते हुए खाने के लिये कुछ और माँगा। बेचारे शिकारी ने वे दोनों खरगोश भी उसको दे दिये। उसने उनको भी खा लिया और फिर और खाना माँगा।

शिकारी बोला — "पर अब तो मेरे पास कुछ भी नहीं है। जो कुछ मैंने आज पकड़ा था वह सब तो मैं तुमको दे चुका।"

शेर बोला — "पर मेरा तो अभी पेट नहीं भरा है। मुझे तीन दिन हो गये हैं खाना खाये हुए। मैं क्या करूँ।"

इस बीच शेर की निगाह शिकारी के कुत्ते की तरफ थी।

शिकारी बोला — "नहीं नहीं, मेरा कुत्ता नहीं।"

शेर बोला — "पर मेरा तो अभी पेट नहीं भरा। मुझे अभी और खाना चाहिये।"

शिकारी के पास और कोई चारा नहीं था सो उसने शेर को अपना कुत्ता भी खाने के लिये दे दिया।

कुत्ता खा कर शेर बोला — "मुझे अभी और खाना चाहिये।"

अब शिकारी और शेर दोनों आपस में बहस करने लगे।

शिकारी बोला — "तुम्हारे साथ भलाई करने का क्या यही फल है जो तुम मुझे अपनी जान बचाने के बदले में दे रहे हो? क्या भगवान मुझे तुम्हारे साथ भलाई करने के बदले में यही सजा दे रहा है?"

वे जब आपस में इस तरह की बातें कर ही रहे थे कि तभी उनको एक खरगोश आता दिखायी दिया।

खरगोश बोला — "लगता है यहाँ कुछ गड़बड़ है। क्या बात है तुम लोग आपस में क्या बहस कर रहे हो?"

जैसे शिकारी खरगोश का ही इन्तजार कर रहा हो और जैसे कि वह कोई जज हो शिकारी ने तुरन्त ही अपना मामला खरगोश के

सामने रखा। फिर खरगोश शेर की तरफ देखता हुआ बोला कि वह भी अपनी कहानी बताये।

शेर बोला — "यह ठीक कह रहा है। पर मुझे अभी भी भूख लगी है और मुझे अभी और खाना चाहिये।"

खरगोश ने शेर से पूछा — "पर तुम वहाँ उस पेड़ पर फँसे कैसे?"

इस पर शेर ने उसको बताना शुरू किया कि वह उस पेड़ पर कैसे फँस गया था। पर खरगोश बोला कि उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

वह बोला — "जिस तरीके से तुम यह सब मुझे बता रहे हो न, यह सब बहुत ही गड़बड़ घोटाले वाला मामला है। यह कैसे हो सकता है कि तुम तीन दिन तक वहाँ उस पेड़ पर ही फँसे पड़े रहे?

क्योंकि अगर तुम झूठ बोल रहे होगे तो फिर मेरे पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं है कि मैं शिकारी की तरफ अपना फैसला सुना दूँ।

मुझे यकीन है कि मैं इसे तब ज़्यादा अच्छी तरह समझ पाऊँगा और ज़्यादा अच्छी तरह से फैसला दे पाऊँगा अगर मैं तुमको उस जगह वैसे ही बैठा देख पाऊँ जैसे कि शिकारी ने तुमको वहाँ बैठे देखा था।"

फिर वह शिकारी की तरफ मुड़ा और उससे बोला कि वह शेर को वहीं रख दे जहॉ वह फॅसा हुआ था और जहॉ उसने उसको देखा था ताकि वह देख सके कि वह कहॉ था।

सो शेर मरे जैसा पड़ गया। शिकारी ने उसे उठाया और फिर से उसे उन शाखों के बीच फॅसा दिया। शेर बड़े दर्द के साथ बोला — "मैं यहॉ ऐसे ही फॅसा हुआ था।"

खरगोश बोला — "तो फिर ओ शिकारी। ज़रा यह तो बताओ कि एक टिड्डा जिसको हौर्नबिल[40] ने मारा वह तो बहरा था पर तुम तो आदमी हो और शेर एक जानवर है। तुमने उसको बचाया ही क्यों?

तुमने तो उसे जो कुछ तुम्हारे पास तो वह सब कुछ दे दिया और फिर भी उसको और चाहिये – यानी कि तुम। मार दो इसको।"

यह सुन कर शिकारी ने शेर को मार दिया और उसको अपने घर खाने के लिये ले गया।

उस दिन के बाद उसने कसम खायी कि वह जैसे जैसे उसके सामने चीज़ें आती जायेंगी वैसे वैसे उनको लेता जायेगा।

और तब से वह हमेशा से ही वैसा करता चला आ रहा है खास कर के जब भी वह किसी शेर को देखता है।

[40] Hornbill – a kind of bird with bent beak – see its picture above.

13 चीते हिरन को क्यों ढूँढते रहते हैं[41]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश में कही सुनी जाती है।

यह बहुत साल पुरानी बात है कि एक चीता[42] और एक हिरन बहुत अच्छे दोस्त थे। वे दोनों पड़ोसी थे और अक्सर आपस में ऑख मिचौली खेला करते थे।

चीते के घर के पीछे के ऑगन में एक बकरा रहता था जिसको उसने कई दिन पहले एक कुश्ती के मुकाबले में जीता था। जबकि हिरन एक बहुत अच्छा किसान था। उसके पास काफी बकरे और बकरियॉ थे।

हिरन के बकरे अभी छोटे थे सो जब बकरियों के बच्चे देने का मौसम आया तो वह चीते के पास गया और उससे उसका बकरा उधार मॉगा ताकि उस बकरे से वह अपनी बकरियों के बच्चे पैदा कर सके।

क्योंकि चीता उसका अच्छा दोस्त था वह उसको अपना बकरा देने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गया। हिरन खुश हो कर बोला —

---

[41] Why Leopards Hunt Deer – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa. Adapted from the Book : "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2001. To read this book free of charge in Hindi write on the e-mail address hindifolktales@gmail.com

[42] Translated for the word "Leopard". See its picture above.

"बहुत बहुत धन्यवाद मेरे दोस्त। मैं उसको इससे ज़्यादा खुश और तन्दुरुस्त कर के तुमको इस मौसम के बाद वापस कर दूँगा।

उसके साथ मैं तुम्हें एक बकरी भी दूँगा ताकि तुम भी अपने लिये बकरे बकरियाँ पैदा कर सको।"

चीता बोला — "यह तो बहुत अच्छी बात है। मैं उन सारी बकरियों को इस्तेमाल कर लूँगा जो भी मेरे हाथ लगेंगी।"

सो हिरन चीते का बकरा ले कर अपने घर अपनी बकरियों के पास आया। उसने एक बहुत बड़ा बाड़ा बनाया और अपनी सारी बकरियों को उस बकरे के साथ उस बाड़े में रख दिया।

मौसम के बाद हिरन ने एक छोटी बकरी ली और चीते का बकरा लिया और उनको अपने दोस्त चीते को देने चला।

हिरन ने चीते को नमस्ते की और बोला — "लो यह रहा तुम्हारा बकरा जैसा कि मैंने तुमसे वायदा किया था, ब्याज के साथ, एक बहुत ही तन्दुरुस्त बकरी के साथ। अब तुम भी बकरियों को पैदा कर सकते हो ताकि तुम्हारे पास तुम्हारा अपना बकरे बकरियों का झुंड रहे।"

चीता बोला — "यह तो बड़ी अच्छी बात है पर मैं इनको अभी नहीं ले सकता क्योंकि जैसा कि तुम जानते हो मैंने अभी तक इनको रखने के लिये कोई बाड़ा नहीं बनवाया है।

इसलिये अभी तुम इनको अपने पास ही रखो। जैसे ही मैं अपना बाड़ा बनवा लूँगा मैं इनको लेने के लिये खुद तुम्हारे पास जल्दी ही आ जाऊँगा।"

यह सुन कर हिरन बकरे और बकरी को अपने बाड़े में वापस ले गया। वह उनको खाना खिलाता रहा पानी पिलाता रहा जैसे वह अपनी बकरियों को खिलाता पिलाता था।

जब दूसरा बच्चे पैदा करने का मौसम आ कर भी चला गया तो हिरन फिर से चीते का बकरा और वह बकरी ले कर चीते के पास गया पर चीते ने इस बार भी यह कहते हुए उनको उसे वापस कर दिया कि अभी उसने अपना बाड़ा नहीं बनाया था।

ऐसे कई और बच्चे पैदा करने के मौसम निकल गये और इस बीच में हिरन के बकरे बकरियों ने भी बहुत सारे बच्चे दे दिये।

करीब दस ऐसे मौसम निकलने के बाद हिरन के बाड़े में अब इतने सारे बकरे बकरियाँ हो गये थे जितने कि आसमान में तारे – जैसा कि चीता सोचता था।

एक दिन चीता हिरन के घर आया और उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया। चीता बोला — "हलो हिरन भाई, कैसे हो? अब तो अपने जानवर खूब सारे हो गये हैं। मैं सोचता हूँ कि अब समय आ गया है जब हम इनका बँटवारा कर लें ताकि तुमको अकेले ही इन सबको खिलाना पिलाना न पड़े।"

हिरन आश्चर्य से बोला — "क्या कहा तुमने "अपने जानवर?" और "बॅटवारा कर लें?"।

चीता बोला — "हॉ भाई "अपने जानवर" और "बॅटवारा कर लें"।"

हिरन बोला — "जहॉ तक मैं जानता हूॅ वहॉ तक तो तुम्हारा केवल एक बकरा और एक बकरी ही मेरे बाड़े में है। मैं उन दोनों को अभी तुम्हारे लिये ले आता हूॅ।"

यह सुन कर चीता हिरन पर ज़ोर से हॅसा — "हा हा, हा हा। इतने सालों से तुम मेरे बकरे और बकरी को बच्चे पैदा करने के लिये इस्तेमाल कर रहे हो और तुम कह रहे हो कि मेरे यहॉ केवल दो ही जानवर हैं, उनके बच्चों का क्या हुआ?

मैं तो तुमसे केवल दयालु हो कर ही बॅटवारे के लिये कह रहा हूॅ वरना मुझे तो तुमसे सारे जानवर मॉग लेने चाहिये थे।"

हिरन ने जानवर बॉटने से इनकार कर दिया। वह बोला यह सब जानवर उसके अपने हैं और वह वे दो जानवर उसको दे कर केवल न्याय ही कर रहा था।

क्योंकि बकरा चीते का था इसलिये, और एक बकरी इसलिये क्योंकि उसका उसने उसको देने का वायदा किया था।

हिरन फिर बोला — "मैंने तो तुम्हारा बकरा और बकरी लौटा दी थी पर तुमने ही उनको लेने से मना कर दिया। मुझे चाहिये था

कि मैं उनको तुम्हारे घर के बाहर जंगली जानवरों के खाने के लिये छोड़ आता।

पर मैं उनको न केवल अपने घर ले आया बल्कि तुम्हारे लिये उनको मैंने खाना भी खिलाया और पानी भी पिलाया। तुमको यह दिखाने के लिये कि मैंने उनको ठीक से रखा मैं तुमको तुम्हारा बकरा और बकरी और चार बकरियॉ और दे सकता हूँ।"

पर चीता इस बात पर नहीं माना और हिरन ने भी अपने जानवर बॉटने से इनकार कर दिया तो चीते ने जंगल के राजा शेर की अदालत में मामला पेश किया।

शेर ने तुरन्त ही जानवरों की एक मीटिंग बुलायी और उनको चीते और हिरन का मामला सुलझाने के लिये कहा।

शेर ने अपने दूत के हाथों यह कहते हुए हिरन को एक खास नोटिस भेजा कि चीते ने तुम्हारे ऊपर मुकदमा दायर किया है कि वह तुम्हारे बकरे बकरियों को बराबर बराबर बॉटना चाहता है। इसलिये तुम जंगल के राजा के सामने कल सुबह ही हाजिर हो। तुम्हारी सारी बकरियों पर भी मुकदमा है।

यह सुन कर हिरन तो बहुत दुखी हुआ। वह बेचारा अपने बाड़े के चारों तरफ अपने आपसे बात करते हुए काफी देर तक घूमता रहा। उसकी आवाज भर्रा रही थी और उसको लग रहा था कि वह एक हारी हुई लड़ाई लड़ने जा रहा था।

उसकी ऑखों में ऑसू आ रहे थे। उसने सोचा कि अगर मैं चीते को कुछ और जानवर दे दूँ तो शायद वह अपना मुकदमा वापस ले ले। पर उनको बॉटना? नहीं नहीं। इसका तो सवाल ही पैदा नहीं होता। मैं उससे अपने जानवर नहीं बॉट सकता। वह मुझे अपना दोस्त कैसे कह सकता है?

तभी वहॉ से एक खरगोश जा रहा था। उसने हिरन को बोलते सुना तो उससे बोला — "अरे तुम फिर अपने आपसे बात कर रहे हो हिरन भाई? क्या बात है? कुछ परेशान हो?

अगर तुम्हें अपना दिमाग दिखाना हो तो मैं कछुए को बुलाऊँ वह देवता से पूछ कर तुमको बतायेगा कि तुमको क्या हुआ है। उसके ऊपर मेरा एक एहसान है सो तुम्हें उसको कुछ देना भी नहीं पड़ेगा।"

हिरन बड़ी दुखी आवाज में बोला — "तुम चले जाओ यहॉ से, खरगोश भाई। मुझे किसी पंडित वंडित की जरूरत नहीं है। मैं तो खुद ही बहुत परेशान हूँ।"

खरगोश बोला — "अरे तुम तो रो रहे हो हिरन भाई। तुमको तो वाकई सहायता की जरूरत है। बात क्या है कुछ बोलो तो?"

तब हिरन ने उसे बताया कि क्या बात थी और वह क्यों दुखी था। वह चीते को पॉच बकरियॉ भी देने को तैयार था पर वह तो

बस अपने जानवरों को आधा आधा बॉटने को तैयार नहीं था। और चीता उसके जानवर आधे आधे बॉटना चाहता था।

खरगोश ने उसे विश्वास दिलाया कि उसको अपने जानवर आधे आधे बॉटने की कोई जरूरत थी ही नहीं। वह उसकी परेशानी का हल निकालेगा।

फिर उसने हिरन से कहा — "मै तुम्हारी तरफ से शेर के सामने बोलूँगा और तुमको अपने बकरे बकरियॉ बॉटने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं पड़ेगी। इसकी कीमत होगी केवल .... ।"

हिरन बीच में ही बोला — "इससे पहले कि मैं तुम्हारे साथ कुछ करूँ तुम चले जाओ यहॉ से। मुझे किसी की दिलासा की भी जरूरत नहीं है। मेरा मामला साफ है और मैं अपना मुकदमा जरूर जीतूँगा।"

खरगोश मुस्कुरा कर बोला — "अगर तुम्हारा मुकदमा इतना साफ है तो फिर रो क्यों रहे हो? और उसको चार की बजाय पॉच बकरियॉ देने के लिये भी क्यों तैयार हो?"

हिरन चिल्लाया — "मैंने कहा न तुमसे कि भाग जाओ यहॉ से।"

यह सोचते हुए कि उस समय हिरन अपने आपे में नहीं था खरगोश फुदकता हुआ वहॉ से चला गया।

अगले दिन हिरन ने अपने सब जानवरों को इकट्ठा किया और उन्हें ले कर शेर की अदालत में जा पहुँचा। जब तक वह वहाँ पहुँचा सारे जानवर वहाँ आ चुके थे।

चीता एक तरफ बैठा हुआ था। जब उसने देखा कि हिरन अपने सब जानवरों को ले कर वहाँ आ रहा था तो वह खुशी से मुस्कुरा पड़ा और अपने दाहिने पंजे के नाखूनों को जमीन पर धीरे धीरे मारने लगा।

चीते ने सोचा — "अब मैं देखता हूँ। अगर मैं एक बकरी हर तीसरे दिन भी खाऊँ तो पचास बकरियाँ कितने दिन चलेंगीं? पचास दिन? नहीं नहीं, अस्सी दिन? कोई बात नहीं। मैं तो बस इतना जानता हूँ कि मैं हर तीसरे दिन एक बकरी खाता रहूँगा जब तक वे खत्म होंगी।"

कुछ पल बाद शेर उस मैदान में आया और अपनी जगह पर आ कर बैठ गया। बबून ने चीते से अपना मामला पेश करने के लिये कहा।

जब चीता बोल चुका तो शेर ने हिरन से पूछा — "क्या तुम भी इस मामले को इसी तरह से देखते हो?"

हिरन बोला — "जी हाँ, पर... ।"

इसी बीच वहाँ खरगोश आ गया और बोला — "जंगल का राजा अमर रहे।"

वह कुछ जल्दी में दिखायी दे रहा था क्योंकि उसने शेर के सामने झुकने की भी जरूरत नहीं समझी बल्कि वह खुशी से गाता हुआ इधर उधर कूदता रहा।

शेर ने पूछा — "यह कौन है जो मुझे इतनी दूर से सलाम कर रहा है? और मेरे सामने बिना झुके हुए मेरी अदालत में बीच में दखल दे रहा है?"

शेर की आवाज से किसी को भी गलतफहमी हो सकती थी क्योंकि उससे ऐसा लग रहा था कि खरगोश शेर का बड़ा भरोसे का हीरो था जो अपने राजा को ललकार रहा था। तुरन्त ही शेर के दूत खरगोश के पीछे उसको अदालत में लाने के लिये दौड़े।

शेर दहाड़ा — "बॉध लो इसको और इसको सिखाओ कि यह मेरी अदालत में फिर कभी दखल न दे।"

खरगोश चिल्लाया — "मैंने क्या किया, मैंने क्या किया? मैंने क्या किया है जो मुझे मुजरिम की तरह से बॉधा जा रहा है?"

शेर ने पूछा — "इज़्ज़त? क्या यह शब्द तुम्हारे लिये कुछ मतलब रखता है? पहली बात, तुम मेरे पास से मुझे बिना सिर झुकाये गुजर गये। दूसरे, तुमने मेरी अदालत में सीटी बजा कर दखल दिया। तीसरे, तुमको मेरी अदालत में और लोगों की तरह से आना चाहिये था जो तुम नहीं आये।

यह सब कुछ कम है क्या तुमको अपराधी साबित करने के लिये? या कुछ और भी कहूँ? इससे पहले कि मैं तुम्हारे ऊपर कोई और इलजाम लगाऊँ तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है?"

खरगोश बाला — "हॉ, मेरा मतलब है नहीं। आपके पहले सवाल का जवाब है हॉ, और आपके आखिरी सवाल का जवाब है नहीं।

मैं तो बस इसलिये खुश हूँ कि आज सुबह जब मैं उठा तो मैंने देखा कि मेरे घर के सामने वाले पाम के पेड़ पर पाम के पके हुए बीजों के गुच्छे पाम की पत्तियों से लटके हुए थे।

और मेरे लिये जैसे यही एक आश्चर्य काफी नहीं था, क्योंकि मेरे पिता के बच्चा होने वाला था, और जमीन आसमान पर गिर पड़ी। यह देख कर मैं अपनी मॉ को लड़ाई के मैदान से बुलाने चला गया ताकि वह यह सब अपनी ऑखों से देख ले।"

सारे जानवर एक साथ चिल्लाये — "नामुमकिन। यह सब कैसे हो सकता है? यह खरगोश क्या बक रहा है।"

शेर ने उसको धमकी दी — "खरगोश यह तुम क्या कह रहे हो। अगर तुमने मुझसे एक और झूठ बोला तो मैं तुमको जान से मार दूँगा। पाम के फल पाम की पत्तियों पर नहीं उगते।

क्या तुम्हारे कहने का कहीं यह मतलब तो नहीं कि तुम्हारी मॉ को बच्चा होने वाला था और तुहारे पिता लड़ाई पर थे? और यह तुम क्या कह रहे हो कि जमीन आसमान पर गिर पड़ी? यह सब तुम क्या अनाप शनाप बक रहे हो?"

खरगोश बोला — "नहीं जनाब, मैं अनाप शनाप नहीं बक रहा। मेरा मतलब वही है जो मैंने कहा। और आप सब इसको नामुमकिन क्यों कह रहे हैं?"

हाथी बोला — "क्योंकि ओ बेवकूफ, आदमी बच्चे पैदा नहीं करते इसलिये।"

खरगोश बोला — "तो फिर चीते का लगाया हुआ इलजाम हिरन के ऊपर क्यों?"

तब शेर के दूतों ने शेर को समझाया कि चीता हिरन के खिलाफ क्या मुकदमा ले कर आया था।

शेर बोला — "उसको खोल दो। मुकदमे का फैसला हो गया।"

शेर ने चीते और हिरन से कहा — "चीते, तुम्हारा एक बकरा है जो हिरन को तुमको देना है और हिरन, तुम्हारी पॉच बकरियॉ हैं जो तुमको चीते को देनी हैं।"

चीता और हिरन एक साथ बोले — "जी हुजूर।"

तब शेर ने चीते से कहा — "तुम हिरन से अपना बकरा ले लो और वे पॉच बकरियॉ ले लो जो हिरन तुमको देना चाहता है और अपने घर जाओ। बस फैसला हो गया। जाओ।"

फिर उसने हिरन से कहा — "तुमको अपने जानवर चीते से बॉटने की जरूरत नहीं है क्योंकि बकरे बच्चे नहीं दिया करते।"

इस तरह यह मामला हिरन की तरफ रफा दफा कर दिया गया। पर हिरन को डर था कि चीता कानून अपने हाथ में भी ले सकता था और उसके जानवर जबरदस्ती उससे ले सकता था।

इसलिये चीते को उसका एक बकरा और पॉच बकरियॉ देने के बाद हिरन सीधा अपने सारे जानवरों को कुछ दूर के एक बाजार में ले गया और सबको वहॉ बेच आया।

इस बीच में चीता अपनी सब बकरियों को खा गया और हिरन से अपना बदला लेने का निश्वय किया।

जब चीते ने हिरन के बाड़े में उसकी बकरियॉ लेने के लिये झॉका तो उसको आश्चर्य भी हुआ और गुस्सा भी आया कि वहॉ तो कोई भी बकरी नहीं थी। वहॉ से तो सारी बकरियॉ जा चुकी थीं।

उसने गुस्से में आ कर सारे बाड़े को तोड़ दिया और चिंघाड़ता हुआ अपने घर चला गया।

जब वह अपने घर जा रहा था तो उसने देखा कि हिरन बाजार से वापस आ रहा था सो वह तुरन्त ही उसके पीछे भाग लिया।

चीता बोला — "अगर मैं तुम्हारी बकरियॉ नहीं ले सका तो कम से कम उनके पालने वाले को तो मैं ले ही सकता हूॅ।" पर हिरन तो यह जा और वह जा।

तभी से चीता और हिरन दोनों आपस में एक दूसरे के दुश्मन हैं और आज भी चीता हिरन को खा जाने के लिये उसके पीछे दौड़ता रहता है।

14 खरगोश अक्लमन्द कैसे बना[43]

बच्चो, खरगोश न तो दूसरे जानवरों जैसा बड़ा जानवर होता है और न ही वह बहुत ताकतवर जानवर होता है पर यह खरगोश होता बहुत होशियार है। पर इतना होशियार होने के बावजूद वह और ज़्यादा अक्लमन्द बनना चाहता था।

इतना अक्लमन्द वह बना कैसे? तो पढ़ो यह लोक कथा खरगोश के अक्लमन्द बनने की। खरगोश के अक्लमन्द बनने की यह लोक कथा अफ्रीका के नाइजीरिया देश में कही सुनी जाती है।

एक दिन वह चिल्ला कर बोला — "ओ आसमान के देवता, मेहरबानी कर के मुझे अक्लमन्दी दो और मुझे सारे आदमियों और जानवरों से अक्लमन्द बना दो।"

आसमान के देवता ने उसकी प्रार्थना सुनी तो वह बोला — "ओ छोटे खरगोश, मैं तुमको अक्ल्मन्द ज़रूर बना दूँगा अगर तुम

[43] How Rabbit Got Wisdom? – a folktale from Nigeria, West Africa. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=229
Retold and written by Mike Lockett.
[My Note: Two similar stories are there from Ghana about Anansi Spider. Since long time ago both countries, Ghana and Nigeria, were a larger kindom and many folktales from these countries are similar. Anansi's both folktales may be read in the book "Anansi Makada Africa Mein" written by Sushma Gupta in Hindi language. There the name of the god of Sky is Nyame. Here they have not given any name.]

मेरे तीन काम कर दोगे। पहला काम – तुम मुझे उस बड़ी मछली के ऊपर की ख़ाल[44] ला दो जो गहरे सागर में रहती है।"

आसमान का देवता जानता था कि ख़रगोश तो तैर नहीं सकता था इसलिये उसने सोचा कि यह काम तो उसके लिये बिल्कुल ही नामुमकिन था।

वह आगे बोला — "दूसरा काम – मुझे जंगली गाय का एक बालटी दूध ला कर दो।" आसमान का देवता यह भी जानता था कि दूध दुहने के लिये जंगली गाय बहुत जंगली और तेज़ थी।

वह आगे बोला — "और तीसरा काम यह कि मुझे उस गुस्से वाले चीते[45] का एक दाँत ला कर दो।"

आसमान का देवता यह भी जानता था कि गुस्से वाला चीता इतना भयानक था जो किसी को अपना बाल तक भी छूने नहीं दे सकता था दाँत तो दाँत।

उधर ख़रगोश का यह विश्वास था कि कोई भी काम नामुमकिन नहीं है अगर उसके लिये देर तक और मेहनत कर के कोशिश की जाये तो। सो उसने आसमान के देवता को सिर झुकाया और उसके ये तीनों काम करने चल दिया।

[44] Translated for the words "Fish's scales"

[45] Translated for the word "Angry Leopard". Leopard is a tiger-like animal. See its picture above.

सबसे पहले खरगोश समुद्र के किनारे गया जहाँ वह बड़ी मछली रहती थी जिसकी उसको खाल लानी थी। उसने एक ढोल लिया और उसको एक खास ताल में बजाना शुरू किया।

उस बड़ी मछली ने ढोल की आवाज सुनी तो वह उसको ठीक से सुनने के लिये समुद्र की सतह पर आ गयी और वहाँ से वह रेत पर आ कर अपनी पूँछ पर खड़ी हो गयी।

खरगोश ढोल बजाता रहा और बजाता रहा तो वह मछली ढोल की आवाज पर इतनी मस्त हुई कि उसने नाचना शुरू कर दिया।

वह इतनी ज़ोर से घूम घूम कर नाच रही थी कि उसकी खाल के कुछ टुकड़े उसके शरीर से निकल कर नीचे गिरने लगे। यह देख कर खरगोश ने ढोल बजाना बन्द कर दिया।

ढोल रुक गया तो वह मछली भी समुद्र में कूद गयी। खरगोश ने उसकी खाल के वे टुकड़े उठा लिये और उसका पहला काम खत्म हो गया।

इसके बाद खरगोश जंगली गाय को ढूँढने गया। वह जब उसको मिल गयी तो उससे बोला — "तुम कितनी जंगली और अजीब हो।"

जंगली गाय बोली — "मैं तुमको दिखाती हूँ कि कौन अजीब है, मैं या तुम।" कह कर उसने अपने सींग नीचे किये और खरगोश की तरफ उसको मारने के लिये दौड़ी।

खरगोश दौड़ कर एक पेड़ के पीछे छिप गया तो वह जंगली गाय उस पेड़ से टकरा गयी जिसके पीछे वह छिपा हुआ था और पेड़ से टकराने पर उसके सींग उस पेड़ में अटक गये।

इससे पहले कि गाय अपने सींग उस पेड़ में से निकाल कर वहाँ से भाग पाती, खरगोश पेड़ के पीछे से निकल आया और उसने उसका दूध दुह लिया। इस तरह उसका दूसरा काम भी पूरा हो गया।

अब खरगोश उस रास्ते पर चल दिया जहाँ से वह गुस्से वाला चीता रोज आता जाता था। वह रास्ता पहाड़ी के ऊपर से नीचे की तरफ जाता था।

खरगोश ने पहाड़ी के ऊपर उस रास्ते पर मछली के शरीर का कुछ हिस्सा और जंगली गाय का कुछ दूध गिरा दिया और खुद वह उस रास्ते से नीचे जा कर एक चट्टान के पीछे छिप कर बैठ गया।

जब गुस्से वाला चीता उस रास्ते पर आया तो वह मछली के शरीर के टुकड़ों और जंगली गाय के दूध पर फिसल गया। उन पर से लुढ़कता हुआ वह पहाड़ी के नीचे आ गिरा।

उसका मुँह एक चट्टान पर जा लगा और उसका एक दाँत टूट गया। इस तरह उसका तीसरा काम भी हो गया।

खरगोश तीनों चीज़ें ले कर आसमान के देवता के पास पहुँचा और उससे बोला — "आपके तीनों काम हो गये, ओ आसमान के

देवता। अब आप मुझे अक्लमन्दी दे दें जिसका आपने मुझसे वायदा किया था।"

आसमान के देवता ने अपना वायदा रखा। उन्होंने ख़रगोश को अक्लमन्दी दे दी। अब ख़रगोश पहले से भी ज़्यादा होशियार और अक्लमन्द हो गया था। अब वह इतना अक्लमन्द था कि वह अब कभी बड़ी मछली, जंगली गाय और गुस्से वाले चीते के पास नहीं जाता था।

15 बादलों में मॉ[46]

यह लोक कथा अफ्रीका के पश्चिमी हिस्से में स्थित देश सियरा लियोन देश में कही सुनी जाती है।

एक बार जानवरों के देश में बहुत ही भयानक अकाल पड़ा। बहुत दिनों से बारिश नहीं हुई थी। सारे जानवरों के शरीरों की हड्डियॉ दिखायी देने लगीं थीं।

इस अकाल से बचने के लिये और अपनी जाति को बचाने के लिये सारे जानवरों ने एक मीटिंग की और उसमें अपनी अपनी मॉओं को खाने के लिये देने का निश्चय किया।

उस समय वे सब अकाल से बहुत बुरी तरह से घिरे हुए थे सो बहुत से जानवरों ने तो अपनी मॉओं को खाने के लिये दे भी दिया था।

हालॉकि वे सभी अपनी अपनी मॉओं को बहुत प्यार करते थे फिर भी उनको लगा कि वह अकाल उनके लिये कोई बहुत बड़ी आफत थी जो उनकी मॉओं की बलि मॉग रही थी।

कुछ जानवरों ने अपने इस काम को यह कह कर ठीक बताया कि अकाल की यही इच्छा थी। और यह तो पुरानी रीति है कि बेटा ही मॉ को दफन करता है।

---

[46] The Mother in the Clouds – a folktale from Sierra Leone, West Africa. Taken from the book : "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2001. To read this book free of charge in Hindi write on the e-mail address hindifolktales@gmail.com

खरगोश बोला — "हॉ वह तो ठीक है कि बेटा मॉ को दफन करता है पर उसको खाता तो नहीं न।"

खरगोश अपनी मॉ को बहुत प्यार करता था। वह बहुत जल्दी ही इस बात के खिलाफ हो गया कि मॉओं को खाने के लिये दिया जाये। उसको अपनी मॉ को खाने के लिये देने का विचार कुछ जमा नहीं।

जितना ज़्यादा वह इस बारे में सोचता रहा उतना ही वह उस को बेमतलब लगता रहा। उसने उसी समय यह निश्चय कर लिया कि वह अपनी मॉ को किसी भी कीमत पर बचा कर ही रहेगा। वह उसको किसी को भी खाने नहीं देगा।

एक दिन खरगोश ने अपनी मॉ से कहा — "मॉ, यह तो तुम को मालूम ही है कि बहुत जल्दी तुमको खाने के लिये देने की मेरी भी बारी आने वाली है, मगर मैं ऐसा नहीं करूॅगा।"

उसकी मॉ बोली — "पर बेटा वे मेरे पीछे आयेंगे। तुम मुझे कैसे बचाओगे?"

खरगोश बोला — "हॉ, आयेंगे तो। पर मेरे पास एक तरकीब है। मैं तुमको बादलों में छिपा दूॅगा। जब तक अकाल खत्म होगा तब तक तुम वहीं रहना।

यह रस्सी तुम अपने साथ लेती जाओ। जब मैं तुम्हारे लिये कुछ खाना ले कर आऊॅगा तब मैं एक गाना गाऊॅगा।

उस समय तुम यह रस्सी नीचे फेंक देना और मैं इस रस्सी के सहारे तुम्हारा खाना ले कर ऊपर आ जाऊँगा। जब मैं वहाँ से वापस आ जाऊँ तो तुम यह रस्सी तुरन्त ही ऊपर खींच लेना।"

खरगोश की माँ को उसकी यह तरकीब बहुत अच्छी लगी। उसको इस बात की भी बहुत खुशी हुई कि उसका बेटा उसका कितना ख्याल रखता है और अब उसको मरना नहीं पड़ेगा।

उस दिन काफी रात बीत जाने पर खरगोश अपनी माँ को जंगल में एक अकेली जगह ले गया। वहाँ वे दोनों एक बहुत ही ऊँचे पेड़ पर चढ़े और फिर वहाँ से बादलों में चले गये। वहाँ उसने अपनी माँ को बादलों में छिपा दिया।

फिर दोनों ने मिल कर अपने छिपे हुए इशारों और रस्सी को नीचे गिराने और ऊपर खींचने की रिहर्सल की। जब खरगोश इस सबसे सन्तुष्ट हो गया तो वह नीचे उतर आया। नीचे आ कर उसने वह पेड़ काट दिया और दूसरे जानवरों में जा कर मिल गया।

उस दिन के बाद से जब भी जानवर किसी की माँ को खाते तो खरगोश अपने खाने के हिस्से को दो हिस्सों में बाँटता। एक हिस्से को वह खुद खा लेता और दूसरा हिस्सा बचा कर रख लेता।

जब सारे जानवर चले जाते तो वह बचाया हुआ खाने का दूसरा हिस्सा अपनी माँ के लिये ले जाता। जंगल में जा कर वह उसको यह गाना गा कर पुकारता —

मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी भेजो, रस्सी भेजो,
क्योंकि तुम्हारा बेटा तुम्हारे लिये खाना ले कर आया है,
मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी भेजो, रस्सी भेजो,

यह गाना सुन कर मॉ खरगोश ऊपर से रस्सी नीचे फेंक देती। खरगोश उस रस्सी को ठीक से पकड़ता और जब उसे यकीन हो जाता कि उसने उसे ठीक से पकड़ लिया है तब वह फिर एक गाना गाता —

मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी खींचो, रस्सी खींचो,
क्योंकि तुम्हारा बेटा तुम्हारे लिये खाना ले कर आया है,
मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी खींचो, रस्सी खींचो,

मॉ खरगोश फिर वह रस्सी ऊपर खींच लेती। जब खरगोश बादलों में गायब हो जाता तो वह अपनी मॉ को खाना खिलाता। वह उसको यह भी बताता कि धरती पर क्या हो रहा था और कैसे अकाल खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

फिर वह नीचे उतर आता और उसकी मॉ रस्सी ऊपर खींच लेती। उसके बाद वह फिर जंगल में दूसरे जानवरों के पास चला जाता। यह सब काफी दिनों तक चलता रहा।

क्योंकि यह देखना बन्दर का काम था कि अपनी मॉ को देने की बारी कब किस जानवर की आती है

सो एक दिन उसने खरगोश से कहा — "अपनी मॉ को खाने के लिये देने की कल तुम्हारी बारी है।"

खरगोश आश्चर्य से बोला — "क्या फिर से? तुमको तो मालूम है कि मेरे एक ही मॉ है और हम लोगों ने उसे बहुत पहले ही खा लिया है।"

बन्दर को भी यह सुन कर आश्चर्य हुआ वह बोला — "नहीं तो, हमने तो उसे अभी तक नहीं खाया।"

खरगोश बोला — "हॉ, हमने खाया है। इस बात को क्योंकि काफी दिन हो गये हैं इसलिये शायद तुम उसे भूल गये हो।"

बन्दर को अपने ऊपर पूरा विश्वास था कि खरगोश की मॉ को अब तक नहीं खाया गया है। बन्दर के अलावा किसी और जानवर को भी यह याद नहीं था कि उन्होंने खरगोश की मॉ को खाया था या नहीं।

सो उस समय तो उन्होंने उसको छोड़ दिया और लाइन में जो दूसरा जानवर था उसको उसकी मॉ को लाने को बोल दिया पर उस दिन के बाद से उन सबने खरगोश के ऊपर नजर रखना शुरू कर दिया।

उसी दिन शाम को खरगोश जैसे पहले अपनी मॉ के लिये खाना ले कर जाता था अपना बचा हुआ आधा खाना ले कर अपनी मॉ को खिलाने के लिये चला।

जंगल में पहुँच कर उसने रस्सी नीचे गिराने के लिये गाना गाया और जब वह रस्सी उसने ठीक से पकड़ ली तो फिर उसको ऊपर खींचने के लिये गाना गाया। खरगोश ऊपर चला गया।

इस बीच बहुत सारे जानवर वहीं आस पास झाड़ियों में छिपे हुए उसको देख रहे थे पर बेचारे खरगोश को तो यह सब पता ही नहीं था।

बन्दर बोला — "ओह, अब हमको पता चला कि इसने अपनी माँ को कहाँ छिपा रखा है।जब कोई चालाक आदमी मरता है तो उसको चालाक आदमी के पास ही दफनाया जाता है।"

नर गिलहरी बोला — "उसने हर एक की माँ को तो खाया पर अपनी माँ को खाने के लिये नहीं दिया। अब हमने उसे पकड़ लिया है अब वह अपनी माँ को नहीं बचा सकता। मुझे पूरा यकीन है कि अब तक उसकी माँ खा खा कर खूब मोटी हो गयी होगी और रसीली भी।"

वे सब धीरज से खरगोश के लौटने का इन्तजार करते रहे। थोड़ी ही देर में खरगोश उसी रस्सी के सहारे वापस लौट आया।

जैसे ही वह वहाँ से चला गया बाकी के जानवरों ने निश्चय किया कि वे अगले दिन आ कर उसकी माँ को ले जायेंगे। ऐसा सोच कर उस समय वे भी सब अपने अपने घर चले गये।

अगले दिन बन्दर ने चिपमंक[47] को अपनी मॉ को खाने के लिये देने के लिये बुलाया। यह उसने इसलिये किया था कि जानवर चाहते थे कि सबको थोड़ा थोड़ा खाना ही मिले।

उन्होंने यह भी निश्चय किया कि वे अपना सारा खाना खत्म नहीं करेंगे। यह इसलिये भी था ताकि वे खरगोश को अपनी मॉ के लिये बचा हुआ खाना इकट्ठा करने के लिये कुछ समय दे सकें।

जानवरों ने कुछ कौर खाये और वे सब खरगोश से पहले ही वहॉ चले गये जहॉ से खरगोश अपनी मॉ को बुलाया करता था।

शेर बड़े खरगोश[48] के कान में फुसफुसाया — "तुम पुकारो उसे।"

सो बड़े खरगोश ने गीत गाया —

मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी भेजो, रस्सी भेजो,
क्योंकि तुम्हारा बेटा तुम्हारे लिये खाना ले कर आया है,
मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी भेजो, रस्सी भेजो,

तुरन्त ही बादलों में से एक रस्सी गिरी। सारे जानवरों ने उस रस्सी को पकड़ लिया। शेर सबसे पहले चढ़ा और बाकी के जानवर बाद में चढ़े। और बड़े खरगोश ने फिर गाया —

---

[47] Chipmunk is a type of squirrel with stripes on his back mostly found in North America. See its picture above.

[48] Translated for the word "Hare" – Hare is different from Rabbit in size and look. It is not a domestic animal and live on the ground as opposed to Rabbit who lives in burrows.

मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी खींचो, रस्सी खींचो,
क्योंकि तुम्हारा बेटा तुम्हारे लिये खाना ले कर आया है,
मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी भेजो, रस्सी भेजो,

जैसे ही मॉ खरगोश ने यह गाना सुना उसने वह रस्सी खींचनी शुरू कर दी। अब क्योंकि उस रस्सी पर तो बहुत सारे जानवर लदे हुए थे तो वह रस्सी उसके लिये खींचनी बहुत भारी हो गयी।

उस बेचारी ने यह सोचते हुए बहुत ज़ोर लगा कर वह रस्सी खींची कि शायद उसका बेटा आज उसके लिये बहुत सारा खाना ले कर आया है। उसने अपने नाखून बादलों में गड़ा रखे थे ताकि वह रस्सी कहीं उसके हाथ से छूट न जाये।

पर वह उस रस्सी को खींचने के लिये जितना ज़्यादा ज़ोर लगा रही थी वह रस्सी उसको उतनी ही ज़्यादा भारी लग रही थी।

जैसे ही शेर उसके पास तक पहुँचा क्योंकि सबसे पहले वही चढ़ा था, खरगोश वहॉ आ गया और देखा कि वहॉ क्या हो रहा था। उसने तुरन्त ही एक और गाना गाया —

मॉ खरगोश, मॉ खरगोश, रस्सी काटो, रस्सी काटो
क्योंकि जानवर तुमको मारने आ रहे हैं,
मॉ खरगोश मॉ खरगोश, रस्सी काटो, रस्सी काटो

तुरन्त ही खरगोश की मॉ ने एक तेज़ चाकू से वह रस्सी काट दी और सारे के सारे जानवर बादलों से नीचे गिर पड़े। कुछ की टॉग टूट गयी, कुछ की कमर टूट गयी और कुछ तो मर भी गये।

उसके बाद खरगोश ने अपनी मॉ से फिर से रस्सी फेंकने के लिये कहा। मॉ ने फिर से रस्सी फेंक दी।

खरगोश से जितने मरे हुए जानवर उठाये जा सकते थे उसने उतने जानवर उठाये और उनको ले कर बादलों में चला गया और उसने और उसकी मॉ ने उन सबको तब तक खाया जब तक धरती पर अकाल खत्म नहीं हो गया।

इस तरह अपनी हाशियारी से खरगोश ने अपनी मॉ को भी बचाया और मुसीबत के समय में अकाल का सामना भी किया।

16 बड़ा खरगोश और आत्मा[49]

खरगोश की अक्लमन्दी और दूसरों की सहायता करने वाली यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिण अफ्रीका देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बूढ़ी औरत एक सुबह बहुत जल्दी ही एक पास के गॉव से अपने घर लौट रही थी। वहॉ वह एक शादी की दावत में गयी थी।

क्योंकि अभी सुबह बहुत जल्दी थी। अभी पूरा दिन भी नहीं निकला था कुछ अँधेरा सा ही था सो उसको रास्ते में पड़ा टूटा बर्तन दिखायी नहीं दिया और चलते चलते वह उससे टकरा गयी और गिर पड़ी। उसकी टॉग में भी चोट आ गयी।

इससे उसको इतना गुस्सा आ गया कि उसने उस आदमी को गाली देनी शुरू की जिसने वह टूटा बर्तन रास्ते में छोड़ा था — "सत्यानाश हो उस आदमी का जिसने यह टूटा बर्तन इस तरह रास्ते में छोड़ा जहॉ भले लोग चलते हैं।"

फिर वह उठी और अपने रास्ते चल दी पर अभी उसको तसल्ली नहीं थी। उसने अपनी गाली देनी जारी रखी — "भगवान

[49] The Hare and the Spirit – a Xhosa folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Book : "Nelson Mandela Ki Priya African Lok Kathayen", edited by Nelson Mandela. Retold by Phyllis Savory. To read this book in Hindi write on the e-mail address hindifolktales@gmail.com .

करे उसका सबसे बड़ा बच्चा अभी अभी गूँगा हो जाये और वह तब तक गूँगा रहे जब तक कि उसके ऊपर का यह जादू न टूट जाये।

और यह जादू तभी टूटेगा जब कोई दूसरा आदमी भी ऐसा ही बेवकूफी का काम करेगा जैसा इस आदमी ने यह टूटा बर्तन रास्ते पर डाल कर मुझे तंग करने के लिये किया है।"

और यह कहते कहते वह अपने रास्ते पर चलती रही।

पास में ही एक मेहनती आदमी रहता था जिसका नाम था डोंडो। वह अपनी पत्नी और एक सात साल की बच्ची टैम्बे[50] के साथ रहता था।

इन बूढ़े पति पत्नी ने अपनी बच्ची के सुख को पाने के लिये बहुत दिन दुख सहे थे। उनकी ज़िन्दगी में सब कुछ अच्छा था सिवाय इसके कि उनके यह केवल एक ही बच्चा था, और वह थी यह लड़की।

अब ज़रा उन माता पिता के दुखड़े के बारे में सोचो जब उन्होंने अपनी एकलौती बेटी को उस सुबह गूँगा पाया।

उन्होंने आपस में पूछा — "ऐसा कौन हो सकता है जिसने हमारी इस भोली सी बच्ची के ऊपर यह जादू डाला है। इस बेचारी ने किसी का क्या बिगाड़ा हो सकता है।"

[50] Dondo and Tembe – Dondo was the man and Tembe was his daughter

उन्होंने बेचारों ने उसे कई डाक्टरों को दिखाया पर कोई भी उस बच्ची को ठीक नहीं कर सका। साल पर साल निकलते गये। वह लड़की जैसे जैसे बड़ी होती गयी वह बहुत सुन्दर भी होती गयी।

पर साथ में यह भी साफ होता गया कि उसकी शादी के लिये "लोबोला" धन[51], शादी में जो जानवर मिलते हैं, जो उसके इतने अच्छे और सुन्दर होने की वजह से उसके माता पिता को मिलते उसका अब कोई मौका नहीं था।

इस सबसे उसके माता पिता बहुत ही दुखी थे कि उनकी गूँगी बेटी को लिये कौन लोबोला देगा। उनका यह डर सच भी था क्योंकि अब तक यह खबर दूर पास सब जगह फैल चुकी थी कि टैम्बे गूँगी थी और कोई भी उसका हाथ माँगने नहीं आया था।

लेकिन एक नौजवान था एनथू[52] जो उस लड़की की सुन्दरता के पीछे इतना पागल था कि उसने उसकी सहायता करने का निश्चय कर लिया।

उसने सोचा कि अगर मैं कोई अच्छी सी भेंट पेड़ की आत्माओं[53] को दूँगा तो वह जरूर ही इस लड़की पर दया कर के इसके ऊपर पड़ा हुआ जादू तोड़ देंगी जो उसकी जबान पर पड़ा हुआ है।

[51] Lobola are the animals which the bridegroom gives to bride's father to marry his daughter

[52] Nthu – the name the young man who wanted to marry Tembe

[53] Tree Spirits

सो एनथू ने रात होने का इन्तजार किया ताकि कोई और उसके इरादों के बारे में न जान सके कि वह क्या करने जा रहा है।

रात होने के बाद वह पास में ही उगे हुए एक बड़े से यूफोरबिया[54] के पेड़ के पास गया और वहाँ जा कर उसकी आत्मा से उस लड़की की कहानी कही।

इत्तफाक से एमवूँडला नाम के बड़े खरगोश[55] का घर भी उसी पेड़ की जड़ में था। सो जब एनथू टैम्बे की कहानी उस पेड़ की आत्मा को सुना रहा था तो उस समय वह बड़ा खरगोश अपने घर में सो रहा था।

एनथू के बोलने से उसकी नींद में खलल पड़ा। वह जाग गया और उसने उस लड़की का मामला ध्यान से सुना तो उसने एनथू से कुछ मजा लेने की सोची और साथ में अपना भी भला करने की भी।

उसने अपनी आवाज कुछ भारी की और एनथू की प्रार्थना का जवाब दिया — "तुम जो मुझसे इस समय यह पूछने आये हो इसको पूरा करने के बदले में तुम मुझे क्या दोगे?"

एनथू पेड़ की आत्मा की आवाज सुन कर बहुत खुश हुआ और कुछ रुक कर बोला — "ओ अच्छी आत्मा, माँगो जो माँगना चाहती

[54] Euphorbia tree

[55] Mvundla hare – name of the hare – hare is a large size rabbit. See its picture above – he is sitting under the tree.

हो मैं तुमको खुशी से दूँगा क्योंकि मेरा दिल इस सुन्दर लड़की के लिये बहुत दुखता है।"

खरगोश यह बहाना करते हुए कि वह इस मामले को काफी जरूरी समझ रहा था बोला — "तुम मुझे रोज बहुत सारे ताजा हरे पत्ते और स्वादिष्ट बैरी ला कर दोगे और उनको मेरे कदमों में ला कर यहाँ रखोगे तब मैं तुम्हारी प्रार्थना पर गौर करूँगा।"

सो अगले दिन से एनथू पेड़ की आत्मा के लिये ताजा हरे पत्ते और बैरी लाने लगा और उनको पेड़ की जड़ के पास रखने लगा और वह बड़ा खरगोश भी अब रोज बढ़िया मुफ्त का खाना खाने लगा।

पर एक दिन उस बड़े खरगोश की आत्मा उसे कचोटने लगी क्योंकि वह कोई बुरा खरगोश नहीं था। वह सचमुच ही उस लड़की और नौजवान की सहायता करना चाहता था।

उसने उस बीमार लड़की से जान पहचान करनी चाही और उसके गूँगेपन का इलाज करना चाहा क्योंकि उसको अपनी होशियारी पर पूरा भरोसा था।

सो अगली सुबह वह डोंडो के बाजरे के खेत पर गया जिसे वह बहुत अच्छी तरह जानता था क्योंकि उस खेत पर तो वह पहले भी कई बार चोरी कर चुका था।

वह जब वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि टैम्बे अपने खेत में बाजरे की पौद लगा रही थी। जब उसने टैम्बे से कहा कि क्या वह उसकी कुछ सहायता कर सकता है तो उसने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और अपना काम करती रही।

तभी बड़े खरगोश के दिमाग में एक विचार आया। उसने वहीं पड़े पौद के ढेर से थोड़ी सी बाजरे की पौद उठायी और उसके पीछे पीछे अपनी एक नयी कतार लगाता हुआ चल पड़ा।

पर वह उस पौद को उलटा लगा रहा था यानी उसकी जड़ ऊपर रख रहा था और उसके पत्ते नीचे जमीन में गाड़ रहा था। उसको लगा कि अगर वह ऐसा करेगा तो शायद वह उसकी तरफ देखेगी।

जब टैम्बे अपनी लगायी हुई कतार के आखीर में पहुँची तो वह अपनी कमर सीधी करने के लिये खड़ी हुई और नयी कतार बोने के लिये घूमी तब उसने देखा कि उस बड़े खरगोश ने क्या किया था।

उसने उसको घूँसा दिखाया और चिल्लायी — "अरे ओ बेवकूफ, यह तुम क्या कर रहे हो?"

यह बोलते ही टैम्बे को लगा कि उसकी तो आवाज लौट आयी थी। यह देख कर उसके चेहरे पर आश्चर्य की लहर दौड़ गयी। उसने अपना खोदने वाला औजार तो वहीं छोड़ा और वह हँसती हुई और चिल्लाती हुई अपने माता पिता को ढूँढने भागी।

बड़ा खरगोश बोला — "सो दूसरे आदमियों की तरह इसने भी मुझे कोई धन्यवाद नहीं दिया कि मैंने उसको ठीक कर दिया? पर एनथू बेचारा भी मुझे कब तक मुफ्त खाना देता रहता?"

17 बद्दुआ वाली बद्दुआ[56]

यह लोक कथा भी अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिण अफ्रीका देश में कही सुनी जाती है। यह इससे पहली कहानी जैसी ही है बस इसका टाइटिल और कुछ छोटी छोटी बातें ही उस कहानी से अलग है।

एक बार एक बुढ़िया सुबह सुबह एक शादी के घर से अपने घर लौट रही थी तो भी उसका दिमाग पड़ोस के गॉव में होने वाली शादी में ही लगा हुआ था।

इसलिये उसने रास्ते में पड़ा टूटा हुआ बर्तन देखा ही नहीं और वह उससे ठोकर खा कर गिर पड़ी। इससे उसकी टॉग जख्मी हो गयी और उसके हाथ में जो कुछ था वह भी बिखर गया।

वह चिल्ला पड़ी — "वह कौन बेवकूफ है जो अपना कूड़ा यहॉ रास्ते में छोड़ गया है जहॉ भले लोग चलते हैं। उस बेवकूफ को मेरी बद्दुआ लगे।

उसका पहला बच्चा अभी इसी समय गूँगा हो जाये और वह तब तक गूँगा रहे जब तक कोई दूसरा सड़क पर टूटे बर्तन डालने वाले से भी ज़्यादा बेवकूफी का काम न करे।"

जब उसका गुस्सा खूब अच्छी तरह से निकल गया तो उसने अपना बिखरा हुआ सामान उठाया और अपने घर को चल दी।

---

[56] Cursed Curse - a folktale from South Africa. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/south_africa/south_africa_potch_tale.html
Collected and retold by Phillip Martin

वहीं पास में ही एक पहाड़ी के पास एक लड़की टैम्बे अपने माता पिता के साथ रहती थी।

उसी समय उसकी मॉ घर में पानी भर कर लाने के लिये पानी का बर्तन ढूँढ रही थी। जब उसको वह नहीं मिला तो उसने अपने पति से पूछा — "मुझे पानी का बर्तन नहीं दिखायी दे रहा, क्या तुमने पानी का बर्तन देखा है? ऐसा तो नहीं कि तुम उसको बागीचे में ले गये हो और फिर वहीं छोड़ आये हो?"

पति बोला — "हॉ मैं उसे वहॉ ले तो गया था पर मुझे याद नहीं पड़ता कि घर लौटने से पहले मैंने उसको अपनी गाड़ी के पीछे रखा था या नहीं।"

पत्नी बोली — "ठीक है, अगर तुमने नहीं रखा तो टैम्बे ने देखा होगा। मैं टैम्बे से पूछती हूँ। अरी ओ टैम्बे, क्या तूने पानी का बर्तन देखा है?" पर छोटी टैम्बे की तरफ से कोई जवाब नहीं था।

वह तो आश्चर्यजनक रूप से गूँगी हो चुकी थी। उस खोये हुए पानी के बर्तन के बारे में उसके सारे विचार भी गायब हो चुके थे।

उसकी मॉ चिल्लायी — "लगता है किसी ने इसके ऊपर जादू कर दिया है जो इसकी बोलती बन्द हो गयी है। पर किसी को हमारी टैम्बे के ऊपर जादू करने की जरूरत ही क्या है?"

टैम्बे के माता पिता टैम्बे के इलाज के लिये उसको कई डाक्टरों के पास ले गये पर कोई भी उस छोटी बच्ची की सहायता न कर सका।

इस तरह साल पर साल बीतते गये और टैम्बे चुप ही रही। वह बड़ी होती गयी और बड़ी हो कर एक बहुत ही सुन्दर लड़की बन गयी थी पर इससे तो उसके माता पिता का काम चलता नहीं था।

उनकी समझ में यही नहीं आ रहा था कि उनकी इतनी सुन्दर बेटी पर कोई जादू क्यों डाल सकता था।

उसके माता पिता का चिन्तित होना ठीक भी था। बहुत जल्दी ही यह बात चारों तरफ फैल गयी कि एक गॉव में एक सुन्दर जवान लड़की थी जो गूँगी थी।

जैसे जैसे उसके माता पिता अपनी बेटी को बड़ा होता देख रहे थे वैसे वैसे वे अपने पड़ोसियों की ऑखों में एक अजीब सी उत्सुकता भी देख रहे थे। कभी कभी उनको उनकी बेरहम किस्म की फुसफुसाहट भी सुनायी पड़ जाती।

पर किस्मत से वहॉ एक नौजवान भी था और वह था ऐनथू[57] जो इस बद्दुआ के उस पार देख सकता था और वह थी सुन्दर सी दयावान टैम्बे जो कि वह थी। एनथू ने निश्चय कर लिया कि वह इस लड़की के लिये जो कुछ भी कर सकता था करेगा।

[57] Nthu – a name of a South African man

ऐनथू ने सोचा कि वह पेड़ की आत्मा के पास जायेगा शायद वह उसके लिये कुछ कर सके। हो सकता है कि वह टैम्बे की जबान पर इतने सालों से पड़ा हुआ जादू निकाल फेंके।

और यही उस नौजवान ने किया। जब अँधेरा हो गया और कोई उसको नहीं देख सकता था कि वह क्या कर रहा था ऐनथू अपने गॉव से निकला और एक बड़े से पवित्र पेड़ के नीचे आ गया।

वहॉ वह उस पेड़ की आत्मा के सामने जमीन पर लेट गया और उससे अपने दिल का हाल कह दिया। उसने उसको उस लड़की के बारे में भी बता दिया।

पर ऐनथू को यह नहीं मालूम था कि कोई बड़ा खरगोश उस पेड़ में अपना घर बना कर रहता था। उस समय जब एनथू उस पेड़ से अपनी कहानी कह रहा था तो वह बड़ा खरगोश वहीं सो रहा था।

जैसे ही एनथू ने पेड़ की आत्मा से अपनी बात कही वह बड़ा खरगोश जाग गया।

बड़ा खरगोश इस बात पर बिल्कुल भी गुस्सा नहीं था कि एनथू ने उसको जगा दिया था क्योंकि उसकी कहानी बहुत ही मजेदार थी। वह मुस्कुराया और उसने कुछ अपनी सहायता करने का और कुछ आनन्द लेने का निश्चय किया।

सो वह एक दो बार खॉसा, अपना गला साफ किया और अपनी आवाज भारी कर के बोला — "ऐनथू, मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी। अगर मैंने इस लड़की के बारे में तुम्हारी सहायता की तो यह बताओ कि तुम मुझे क्या दोगे?"

एन्थू खुश हो कर बोला — "ओ पेड़ की आत्मा, तुम जो चाहे मुझ से मॉग लो। मैं टैम्बे की खुशी के लिये कुछ भी कर सकता हूॅ।" बड़े खरगोश को इसी जवाब की आशा थी।

बड़े खरगोश ने कुछ सोचा जैसे कि वह कोई बहुत बड़ा प्लान सोच रहा हो फिर बोला — "तुमको मुझे रोज ताजा हरे पत्ते और रसीली बैरी[58] जंगल से ला कर देनी होंगी। यह सब तुम मेरे लिये सुबह सुबह ला कर मेरे पैरों में रख देना।

अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हारी प्रार्थना पर विचार करूॅगा कि मैं उस लड़की की किस तरह सहायता कर सकता हूॅ।"

ऐनथू बड़े उत्साह से बोला — "आप विश्वास रखें मैं ऐसा ही करूॅगा।" वह अपनी बात का पक्का था सो वह रोज उस पेड़ की आत्मा को ताजा हरे पत्ते और बैरी ला कर देता रहा और खरगोश घर बैठे अपने खाने का आनन्द लेता रहा।

[58] Berries are small fruits grown on bushes. There are many kinds o berries, such as Raspberries, Strawberries, Blue Berries, Black Berries. We don't have all these berries in India but we have Phaalasaa and Ber and Jharberee Ke Ber etc kind of berries. See their picture above.

पर कुछ दिन घर बैठे बैठे खाते खाते बड़े खरगोश को कुछ बुरा सा लगने लगा कि वह ऐनथू के लिये कुछ नहीं कर पा रहा है और बस घर बैठ कर केवल उसका लाया खाना खा पी रहा है।

यह सोच कर उसने उस लड़की से मिलने का निश्चय किया। बड़ा खरगोश एक बहुत ही होशियार जानवर था सो उसने सोचा कि शायद वह उसके लिये कुछ कर सके। वह टैम्बे से मिलने चल दिया।

उसको टैम्बे का खेत ढूँढने में कोई परेशानी नहीं हुई। उसको मालूम था कि वह कहाँ था क्योंकि उसने वहाँ उस खेत से कई बार सब्जियाँ चुरायीं थीं।

जब वह वहाँ पहुँचा तो टैम्बे अपने पिता के खेत पर काम कर रही थी। वह अपने काम में इतनी मग्न थी कि उसने बड़े खरगोश को देखा ही नहीं। बड़े खरगोश को यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा कि कोई उसकी तरफ ध्यान न दे।

सो बड़े खरगोश को टैम्बे के पास खुद ही पूछने के लिये जाना पड़ा — "क्या मैं तुम्हारे इन पौधों को लगाने में कुछ सहायता करा सकता हूँ?" पर टैम्बे ने कोई जवाब नहीं दिया। शायद उसने उसकी कोई बात सुनी ही नहीं।

बड़े खरगोश ने सोचा कि अगर उसका काम यही पौधे लगाना है तो अगर मैं ऐसा करूँ तो तब तो वह मुझे जरूर ही देखेगी। सो

उसने कुछ पौधे लिये और टैम्बे के पीछे पीछे उनको जमीन में लगाता हुआ चला।

उसने उसका ध्यान खींचने के लिये उनको उलटा लगाना शुरू कर दिया यानी उनकी जड़ें ऊपर की तरफ थीं और पत्ते जमीन के नीचे की तरफ।

पर टैम्बे ने अभी भी बड़े खरगोश को नहीं देखा था। जब उसने अपनी पौद की लाइन खत्म करली और वह मुड़ने के लिये खड़ी हुई तब टैम्बे ने देखा कि बड़े खरगोश ने क्या किया था।

उसने उसको घूर कर देखा और उसकी तरफ अपनी मुट्ठी हिला कर बोली — "ओ बेवकूफ यह तुमने क्या किया? तुम क्या सोचते हो कि मेरे पौधों के साथ यह तुम क्या कर रहे हो?"

यह कहने के साथ ही टैम्बे के चेहरे पर आश्चर्य की एक लहर दौड़ गयी। वह तो बोल रही थी। उसने अपना हल छोड़ दिया और अपने घर भागी। हॅसती हुई, चिल्लाती हुई और गाती हुई – अब उसको अपना ऐनथू ढूँढना था।

बड़े खरगोश ने सोचा — "यह क्या आदमियों जैसा बर्ताव नहीं था कि मेरी इतनी कोशिश के लिये मुझे कोई धन्यवाद भी नहीं?

खैर मैं उन पौधों को अब ठीक से लगा देता हूँ। अब मुझे कोई भी मुफ्त का खाना मेरे घर के दरवाजे पर देने नहीं आयेगा।"

18 बड़े खरगोश की गन्दी चालें[59]

यहाँ बड़े खरगोश[60] की गन्दी चालों की पाँच लोक कथाऐं दी जाती है जो दक्षिणी अफ्रीका की टौंगा जाति के लोगों में कही सुनी जाती हैं। टौंगा जाति के लोग दक्षिणी अफ्रीका के कई देशों में रहते हैं इसलिये ये कथाऐं किसी एक देश की नहीं हैं बल्कि उन देशों में रहने वाले लोगों की एक पूरी जाति की हैं।

1 बड़ा खरगोश और हिरनी

एक दिन बड़े खरगोश ने अपनी दोस्त हिरनी[61] को सलाह दी कि तुम मेरे साथ साझेदारी कर लो। वह बोला — "क्या तुम मेरे साथ खेतों पर काम करना पसन्द करोगी? हम लोग बीन्स बोयेंगे।"

हिरनी तैयार हो गयी और दोनों ने खेत पर साथ साथ काम करना शुरू कर दिया।

---

[59] Hare's Dirty Tricks – a folktale from Thonga people, Southern Africa.
Adapted from the book "African Folktales" by A Ceni. English Edition in 1998. To read this book in Hindi write on the e-mail address hindifolktales@gmail.com
Tonga, Thonga or Tsonga people and languages span most of Southern Africa, notable countries being South Africa, Swaziland, Mozambique, Malawi, Zambia and Zimbabwe.

[60] Translated for the word "Hare". Hare is a bit bigger than an ordinary Rabbit. See its picture above.

[61] Translated for the word "Antelope". Antelope is of same species as the deer but with a different kind of look. See its picture above.

अगर थोड़े में कहा जाये तो बड़े खरगोश ने हिरनी की बीन्स चुरायीं और हिरनी ने बड़े खरगोश की बीन्स चुरायीं। यह एक बहुत ही बढ़िया साझेदारी थी।

पर एक दिन बड़े खरगोश ने खेत में एक जाल बिछाया और रात को जब हिरनी अपने रोज के समय पर खेत में आयी तो उसकी टॉग उस जाल में फॅस गयी।

सुबह को यह दिखाते हुए जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं बड़ा खरगोश खेत में आया और हिरनी को वहॉ फॅसा पाया। वह बोला — "यह सब जो कुछ तुमने किया है मुझे तो अब उसके लिये जंगल के राजा के पास जाना पड़ेगा।"

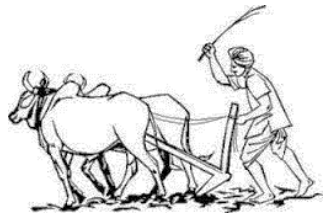

"नहीं नहीं, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूॅ कि तुम मुझे जंगल के राजा के पास मत ले जाओ। तुम मुझे छोड़ दो तो मैं तुम्हें अपनी सारी बीन्स दे दूॅगी और साथ में तुमको एक नया हल भी दे दूॅगी।"

बड़ा खरगोश इस बात पर राजी हो गया। उसने उससे उसकी बीन्स भी ले लीं और उससे एक नया हल भी ले लिया और चला गया।

2 बड़ा खरगोश और नर छिपकली

कुछ समय बाद उसको एक बहुत बड़ा नर छिपकली वारन[62] मिला जो एक गड्ढे के पास पैर फैला कर आराम से लेटा हुआ धूप खा रहा था। बड़े खरगोश ने उससे पूछा — "अरे तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

नर छिपकली बोला — "मैं यहाँ राजा के पानी की चौकीदारी कर रहा हूँ ताकि लोग इसे गन्दा न करें।"

बड़े खरगोश ने उसको सलाह दी — "और तुम यहाँ बस इसी काम के लिये इतनी कड़ी धूप में लेटे हुए हो? मेरी बात सुनो। जबकि तुम यहाँ इस तरह से लेटे हुए बेवकूफ की तरह से अपना समय बर्बाद कर रहे हो तो तुम्हारे अपने खेत भी तो बर्बाद हो रहे हैं।

इससे अच्छा तो यह है कि चलो चल कर तुम्हारे खेतों में हल चलाते हैं। अगर तुम चाहो तो मैं इस काम में तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।"

वारन नर छिपकली बोला — "हल? यह मैं कैसे कर सकता हूँ? अगर मैं अपने अगले वाले पैरों से हल पकड़ना चाहूँ भी तो मैं तो अपने पीछे वाले पैरों पर सीधा खड़ा भी नहीं हो सकता।"

[62] Varan – name of the big lizard the Hare met

"तुम तो बहुत ही बेवकूफ हो। यह काम तो बहुत आसान है। मैं हल को तुम्हारी पूँछ से बाँध दूँगा फिर तुम हल को जितनी देर चाहे उतनी देर तक खींचते रहना। आओ न।"

वारन थोड़ी देर तक कुछ हिचकिचाता रहा तो बड़े खरगोश ने उसकी इस हिचकिचाहट का फायदा उठाते हुए उसकी पूँछ में हल बाँध ही दिया। बेचारा नर छिपकली वारन तो उसको अपनी पूँछ में बाँध कर हिल भी न सका।

बड़ा खरगोश तुरन्त ही गड्ढे के पास गया और वहाँ जा कर पेट भर कर पानी पिया और फिर उसको सारा गन्दा कर आया। इतने पर भी वह सन्तुष्ट नहीं हुआ तो वह वारन के खेतों में चला गया और वहाँ जा कर उसकी सारी मूँगफलियाँ खा आया।

सूरज अब तक आसमान में बहुत ऊपर चढ़ आया था और उसकी गर्मी अब तक बहुत बढ़ गयी थी। बड़ा खरगोश अब तक अपना खाना खा कर वापस आ गया था।

वह वारन से बोला — "वारन, वारन। यह तो बहुत अच्छा हुआ कि तुम यहीं ठहरे रहे। तुम्हें मालूम है टिड्डों के एक बहुत बड़े दल ने सारे शहर पर हमला बोल दिया है। और जब वे गड्ढा पार कर रहे थे तो उन्होंने उसका सारा पानी भी गन्दा कर दिया।

मुझे अभी अभी पता चला है कि उन्होंने तुम्हारा मूँगफलियों का खेत भी सारा बर्बाद कर दिया है। यह तो बस चमत्कार ही हो गया समझो कि मैं साबुत बचा हुआ हूँ।"

वारन बोला — "हे भगवान। जल्दी करो मुझे इस हल से खोलो नहीं तो मैं तो हिल भी नहीं पाऊँगा।"

"हॉ हॉ। तुम चिन्ता न करो। पर तुम मुझसे गुस्सा तो नहीं हो न? या हो?"

"पर इन सब बातों के बारे में तुमसे कहा किसने?"

बड़े खरगोश ने चालाकी से जवाब दिया — "एक था जो जल्दी में भागा जा रहा था उसी ने मुझे बताया। पर अगर तुम चाहते हो कि मैं तुमको जल्दी से खोल दूँ तो तुम मुझसे बहुत सारे सवाल मत पूछो।"

"ठीक है ठीक है नहीं पूछता पर तुम मुझे जल्दी से खोलो तो सही। मैं तो इस हल से तंग आ गया हूँ।"

"इतनी भी जल्दी क्या है? क्या तुम्हें पूरा यकीन है कि तुम्हें पीने के लिये पहले थोड़ा पानी नहीं चाहिये? यहॉ धूप में तो बहुत गर्म हो रहा है।"

वारन जल्दी से बोला — "नहीं नहीं। मैं ऐसे ही ठीक हूँ बस तुम मुझे जल्दी से खोल दो और किसी और बात की चिन्ता मत करो।"

बड़ा खरगोश बोला — "पर अगर तुम पानी नहीं पियोगे तो मैं तुम्हें नहीं खोलूँगा।"

"तुम तो इस पानी की बात का बतंगड़ बना रहे हो। ठीक है ठीक है मुझे बहुत प्यास लगी है लाओ मुझे पानी ला कर दो। पर जल्दी करो।"

सो बड़ा खरगोश वारन के घर दौड़ा गया। वहाँ से उसका एक लकड़ी का प्याला लिया, उसमें गड्ढे में से थोड़ा पानी भरा, गड्ढे के पानी को ज़ोर से हिलाया और उसे उस नर छिपकली के पीने के लिये ले आया।

आ कर उससे बोला — "ध्यान रखना, अगर कोई आये और तुमसे पूछे कि गड्ढे का पानी किसने गन्दा किया तो कहना कि टिड्डों ने किया है।"

वारन ज़ोर से चिल्लाया — "ठीक है ठीक है। पर अब तुम मुझे खोलो तो।"

पर बजाय उसे खोलने के बड़ा खरगोश जंगल के राजा और वहाँ के दूसरे बड़े बड़े जानवरों को बुलाने के लिये दौड़ गया जैसे शेर हाथी जिराफ और और दूसरे जानवरों को भी।

बड़ा खरगोश उन सबको वारन के पास ले आया और जब वे सब उस नर छिपकली के चारों तरफ इकट्ठा हो गये तो उन्होंने उससे पूछा — "राजा के इस गड्ढे में से पानी किसने पिया और इसको गन्दा किसने किया?"

वारन बोला — "टिड्डों के झुंड ने।"

इससे पहले कि कोई और कुछ बोलता बड़ा खरगोश बोला — "यह झूठ बोल रहा है। ज़रा इसके प्याले की तरफ तो देखो।

बजाय इसके कि यह उस गड्ढे की रखवाली करता मैंने इसको उस गड्ढे में से खीरे की तरह ठंडा पानी पीते हुए पकड़ा तो मैंने इसको इस हल से बॉध दिया ताकि यह उस गड्ढे से दूर रहे और फिर आप सबको बुलाने के लिये दौड़ गया।"

राजा और दूसरे जानवर बोले — "इस बात पर कौन विश्वास करेगा कि वारन ने ऐसा किया। शाबाश, बड़े खरगोश शाबाश। अच्छा किया जो तुमने इसकी पोल खोल दी जो हमारा पानी गन्दा कर रहा था।"

किसी ने नर गिलहरी की बात ही नहीं सुनी। उसको तुरन्त ही लोहे की जेल में डाल दिया गया और उसकी चौकीदारी के लिये कई भयानक मगर तैनात कर दिये गये।

कहानी का अन्त यही नहीं है। बड़े खरगोश ने सबको विदा कहा, अपना हल अपने कन्धे पर रखा और फिर से हिरनी को ढूढने चल दिया।

3 बड़ा खरगोश और हिरनी

वह हिरनी को ढूँढता हुआ तब तक घूमता रहा जब तक उसको वह मिल नहीं गयी। इत्तफाक से वह भी इस समय एक बड़े गड्ढे के

पानी की रखवाली कर रही थी। अब पानी तो बहुत कीमती होता है। उसकी तो दिन रात रखवाली करनी ही होती है।

हिरनी ने जैसे ही बड़े खरगोश को देखा तो वह वहीं से बोली — "ओ बड़े खरगोश, क्या तुम यहाँ इसलिये आये हो कि तुम मेरे हल से खुश नहीं हो? या फिर मेरे बीन्स के खेत उस नुकसान के लिये काफी नहीं थे जो तुमने मेरी वजह से सहा?"

चालाक बड़े खरगोश ने कहा — "नहीं नहीं, यह बात नहीं है। मैं तो बस ज़रा ऐसे ही घूमने के लिये निकला था और तुम? तुम यहाँ इस गड्ढे को देखती हुई क्या कर रही हो? तुम कहीं पागल तो नहीं हो गयी हो?"

"मैं यहाँ इसलिये खड़ी हूँ ताकि कोई इस पानी को गन्दा न कर सके।"

बड़ा खरगोश बोला — "यह तो बड़ा अच्छा काम है। जबकि सारे लोग अपने अपने खेतों में काम कर रहे हैं और तुम यहाँ यह पानी देख रही हो। और जब अकाल पड़ेगा तब तुम क्या खाओगी? इस गड्ढे का पानी शायद?"

हिरनी बोली — "अरे, मैंने तो इस बारे में कभी सोचा ही नहीं था। तुमने मेरी बीन्स ले लीं और तुमने मेरा हल भी ले लिया। अब मैं क्या करूँ।"

बड़ा खरगोश तुरन्त बोला — "अरी ओ बेवकूफ, मैंने तुमको उस सबके लिये तो माफ भी कर दिया। वह सब अब पुरानी बात हो गयी, छोड़ो उसको। लो यह हल लो और आओ मेरे साथ। चलो मैं तुम्हारी तुम्हारा नया खेत बनाने में सहायता करता हूँ।"

"अगर ऐसा है तो चलो ऐसा ही सही। मेरे दिमाग में एक बहुत ही अच्छा खेत है।" और वे दोनों उस खेत पर चल दिये।

अभी उस खेत को जोतते हुए उन्हें कुछ ही देर हुई थी कि हिरनी ने कहा — "मैं अपने पिछले पैरों पर खड़ी हो कर आगे वाले पैरों से हल को नहीं पकड़ सकती इसी लिये बजाय खेत को जोतने के मैं तुम्हारी बीन्स चुरा रही थी।"

बड़ा खरगोश बोला — "तुम अपना दिल मत छोटा करो हिरनी रानी। मैं इस हल को एक पल में तुम्हारे आगे वाले पैरों में बाँध दूँगा और फिर तुम इस खेत को बड़े अच्छे तरीके से जोत सकोगी।"

पर यह सब तो कुछ ठीक से काम नहीं किया।

बड़ा खरगोश बोला — "लगता है कि यह हल भारी है शायद इससे हल्का हल काम कर जाये। बस ज़रा सा इन्तजार करो मैं अभी गाँव जा कर एक दूसरा हल्का वाला हल ले कर आता हूँ।"

हिरनी जब तक उसका जवाब दे तब तक तो वह बड़ा खरगोश वहाँ से गाँव की तरफ भाग गया। पर वह गाँव जाने की बजाय उस गड्ढे की तरफ गया जहाँ वह हिरनी पहरा दे रही थी। वहाँ जा कर

उसने पेट भर कर पानी पिया और बाकी पानी को हिला कर गन्दा कर दिया।

उसके बाद वह एक पीले रंग के लोटे में पानी भर कर हिरनी के पास वापस आ गया और उस लोटे को हिरनी के पास ही छिपा दिया।

बड़े खरगोश को वापस आया देख कर हिरनी ने उससे पूछा — "क्या तुमको कोई हल्का हल मिला?"

बड़े खरगोश ने शर्मा कर जवाब दिया — "अफसोस, मुझे कोई हल्का हल तो नहीं मिला। उन्होंने मुझसे कहा कि गॉव में बैलों का एक झुंड घुस आया था उसने उनको बर्बाद कर दिया।

और उन्होंने उस गड्ढे का पानी भी गन्दा कर दिया है जिसके पानी की रखवाली तुम कर रही थीं। यह तो बहुत ही बुरा हुआ। है न?"

हिरनी दुखी होते हुए बोली — "हॉ यह तो बहुत ही बुरा हुआ। ओह, उस गड्ढे का पानी भी उन्होंने गन्दा कर दिया? अब मैं क्या करूॅ। ओ बड़े खरगोश, मुझे जल्दी से खोलो।"

"मैं तुम्हें खोल दूॅगा, मैं तुम्हें खोल दूॅगा पर पहले तुम ज़रा यह ताजा पानी तो पीलो। तुमको यह पानी पी कर अच्छा लगेगा।" और उसने उसको पानी का वह लोटा दे दिया जो वह गड्ढे में से भर कर लाया था।

हिरनी ने बिना कुछ सोचे समझे वह पानी पी लिया।

उधर बड़ा खरगोश जंगल के राजा और दूसरे बड़े जानवरों को लाने के लिये दौड़ गया। जब वे वहॉ आ गये तो उन्होंने हिरनी के पैरों के पास एक लोटा पड़ा देखा तो उससे पूछा — "तुम्हारे पास यह पानी कहॉ से आया?"

हिरनी बोली — "बड़े खरगोश ने दिया।"

बड़ा खरगोश छूटते ही बोला — "झूठी। यह पानी तुमने अपने आप लिया और तुमने अपने आप ही पानी गन्दा किया। और मैंने तो तुमको यहॉ हल से बॉध कर इसलिये रखा ताकि तुम यह सब कर के यहॉ से भाग न जाओ।"

हिरनी गुस्से से बोली — "क्या मतलब है तुम्हारा? वह तो बैलों के एक झुंड ने गॉव को बर्बाद किया और गड्ढे का पानी गन्दा किया।"

राजा और दूसरे जानवर बोले — "यह सब क्या बकवास है? और बैलों का झुंड? यहॉ तो कोई भी नहीं आया यह बैलों का झुंड कहॉ से आ गया। तुम झूठ बोल रही हो तुमको इसकी सजा भुगतनी पड़ेगी।"

और उस हिरनी को भी राजा ने मगरों की निगरानी में जेल में डाल दिया।

सो देखो न बच्चों यह बड़ा खरगोश कितना नीच था। उसके लिये सारी चीज़ें कितनी आसानी से हो जाती थीं। या फिर उसको अपने से ज़्यादा अक्लमन्द शायद कोई मिला ही नहीं।

4 बड़ा खरगोश और मादा कछुआ

एक दिन उस बड़े खरगोश को एक मादा कछुआ मिली। इत्तफाक से वह भी पानी की निगरानी कर रही थी।

"ओह तो तुम यहाँ हो। बेवकूफों की तरह इस गड्ढे के किनारे खेल रही हो। चलो मेरे साथ चलो और चल कर हमारे खेत जोतो। जब अकाल पड़ेगा तब तुम्हारी कौन सहायता करेगा?

राजा और सब जानवर तो तुम्हारे इस भलाई के काम को बहुत जल्दी ही भूल जायेंगे और उस समय वे तुमको भूखा मरने के लिये छोड़ देंगे। फिर तुम क्या करोगी?"

मादा कछुआ बोली — "मान लिया कि तुम ठीक कह रहे हो पर क्या तुम मुझे यह बता सकते हो कि मैं अपनी इन छोटी छोटी टाँगों से हल कैसे चला सकती हूँ?"

बड़ा खरगोश बोला — "ओह उसकी तुम चिन्ता न करो। यह तो बहुत ही आसान काम है लाओ तुम अपनी टाँग दो...।"

पर मादा कछुए ने उसको यह नहीं करने दिया क्योंकि वह उसकी यह चाल जानती थी। वह बोली — "तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। पर यह कहानी तो मैंने सुनी हुई है।"

बड़ा खरगोश आश्चर्य प्रगट करते हुए बोला — "तो क्या तुम सोच रही हो कि मैं तुम्हारे साथ कोई धोखा कर रहा हूँ? तुम्हारी जैसी इच्छा हो वैसा करो पर जब समय आये और तुमको भूख लगे तो रोती हुई मेरे पास मत आना।"

और यह कह कर वह वहाँ से चला गया।

और फिर हुआ कुछ ऐसा कि कुछ घंटे बाद ही मादा कछुए को बहुत ज़ोर की भूख लगने लगी और उसको अब पता नहीं था कि वह अब क्या करे कि उसी समय बड़ा खरगोश वापस आ गया।

उसने मादा कछुए से पूछा — "सब कुछ ठीक चल रहा है न?"

मादा कछुआ बोली — "हाँ ठीक तो चल रहा है पर मुझे यह मानना ही पड़ेगा कि तुम बिल्कुल ठीक कह रहे थे। मुझे बहुत भूख लगी है और मुझे नहीं पता कि मैं क्या करूँ?"

बड़ा खरगोश तुरन्त बोला — "इसी लिये तो मैं यहाँ आया हूँ, मेरी दोस्त। चलो सूअर के खेत में चलते हैं और वहाँ जा कर उसके खेत की शकरकन्दी[63] खाते हैं।

मादा कछुआ कुछ हिचकिचा रही थी क्योंकि उसको चोरी करने में अच्छा नहीं लग रहा था पर उसको बहुत ज़ोर की भूख लगी थी सो वह बड़े खरगोश के साथ सूअर के खेत पर शकरकन्दी खाने चली गयी।

[63] Translated for the word "Sweet Potatoes" – Sweet Potato is a root vegetable and can be eaten by boiling or roasting it. It is a very common vegetable in many parts of the world. See its picture above.

उन्होंने सूअर के खेत से खूब सारी शकरकन्दियॉ चुरायीं और उनको दूर जंगल में ले जा कर आग में भून लिया।

कुछ देर बाद बड़ा खरगोश बोला — "क्या तुम ज़रा जा कर देखोगी कि कहीं सूअर हमारे पीछे पीछे तो नहीं आ रहा?"

यह सुन कर मादा कछुआ को बड़े खरगोश पर फिर कुछ शक हुआ पर फिर भी वह बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं। पर जैसा कि तुम जानते हो कि चार ऑखें दो ऑखों से ज़्यादा अच्छी होती हैं तुम भी मेरे साथ चलो न। मैं इस तरफ जाती हूँ तुम उस तरफ जा सकते हो।"

अब बड़ा खरगोश इस बात को मना नहीं कर सका सो वे दोनों सूअर देखने चले – एक दॉये हाथ को दूसरा बॉये हाथ को।

पर जैसे ही मादा कछुआ बड़े खरगोश की ऑखों से ओझल हुई वह वापस लौट आयी और आ कर बड़े खरगोश के थैले में छिप कर बैठ गयी।

कुछ देर बाद ही बड़ा खरगोश भी वापस आ गया। उसने देखा कि मादा कछुआ तो वहॉ अभी भी नहीं लौटी थी सो उसने जल्दी से सारी शकरकन्दियॉ अपने थैले में भरीं, थैला अपने कन्धे पर डाला और अपनी ऊँची आवाज में गाता हुआ चल दिया।

वह चिल्लाता जा रहा था — "ओ मादा कछुआ, जल्दी भागो। सूअर आ रहा है। और वह तो सचमुच में बहुत गुस्सा है। बस

जल्दी भाग जाओ।" पर थैले के अन्दर मादा कछुआ तो शान्ति से बैठी शकरकन्दी खा रही थी।

सो जबकि बड़ा खरगोश भाग रहा था मादा कछुआ थैले के अन्दर आराम से बैठी हुई बड़ी बड़ी स्वाददार मीठी शकरकन्दियॉ खा रही थी।

कुछ देर बाद बड़े खरगोश को भूख भी लग आयी और वह चलते चलते थक भी गया। उसने जब देखा कि वह अब मादा कछुए से सुरक्षित है तो वह सॉस लेने के लिये एक पेड़ के नीचे रुक गया।

वह खुशी खुशी बोला — "ओह अब ये सारी शकरकन्दियॉ मेरी हैं।"

उसने शकरकन्दी का थैला खोला और उसके अन्दर अपना पंजा डाल कर उसमें से कोई अच्छी सी शकरकन्दी ढूँढने लगा तो मादा कछुए ने उसके पंजे में एक छोटी सूखी पतली शकरकन्दी थमा दी।

बड़े खरगोश ने उसको देखा तो बोला — "ओह यह वाली शकरकन्दी नहीं। यह तो बहुत ही छोटी है।"

सो उसने फिर से उस थैले में अपना पंजा डाला और उसमें से फिर से कोई अच्छी सी शकरकन्दी ढूँढने लगा। मादा कछुए ने फिर से उसको वैसी है एक छोटी पतली सूखी हुई शकरकन्दी पकड़ा दी।

वह फिर बुड़बुड़ाया "ओह यह भी पहले वाली से कोई ज़्यादा बड़ी नहीं है। यह तो बिल्कुल ही हैज़लनट[64] के बराबर है।" कह कर उसने तीसरी बार उस थैले में अपना पंजा डाला।

इस बार उसने कुछ बड़ी सी चीज़ महसूस की तो उसको पकड़ लिया। "आखिर मैंने उसको पकड़ ही लिया।" कह कर उसने उसको बाहर निकाल लिया और खाने के लिये अपने मुँह की तरफ ले गया।

ज़रा सोचो कि बड़े खरगोश का चेहरा तब कैसा दिखायी दिया होगा जब उसने मादा कछुए के मुँह को अपने मुँह के सामने देखा होगा।

मादा कछुआ बोली — "हम जो बोते हैं वही काटते हैं।"[65]

बड़े खरगोश ने मादा कछुए को जमीन पर रख दिया और वह धीरे धीरे चली गयी।

बड़ा खरगोश दुखी हो कर फिर बुड़बुड़ाया "और मैं इसको सारे समय अपनी पीठ पर लाद कर लाता रहा।" वह भी दुखी हो कर अपने घर वापस चला गया।

तुम सोच रहे होगे कि अब तो बड़े खरगोश ने कुछ सीख लिया होगा और तबसे अपने तरीकों में कुछ सुधार ले आया होगा पर ऐसा

[64] Hazelnut is a kind of nut. See its picture above.

[65] What we sow what we reap

नहीं था। तुम गलत सोच रहे हो क्योंकि बड़ा खरगोश तो किसी भी तरह सुधरने वाला नहीं था।

एक बार तो उसने शेर की टॉग खींचने की कोशिश की – क्या तुम ऐसा सोच सकते हो कि वह राजा की टॉग खींचने की हिम्मत कर सके? पर ऐसा ही हुआ। तो लो पढ़ो कहानी उसकी भी —

5 बड़ा खरगोश और शेर

एक दिन मैजेस्टी ने सोचा कि वह सारे जानवरों को जंगल में बुलाये और उनमें से एक जानवर ऐसा चुने जो उसके मूँगफली के खेत की ठीक से रखवाली कर सके।

सो सब जानवर जमा हुए और हर एक जानवर को जॉचा गया। तो अब तुमको यह भी विश्वास नहीं होगा कि शेर ने किस जानवर को चुना – बड़े खरगोश को।

राजा ने अपने इस चुनाव की वजह बतायी कि क्योंकि बड़ा खरगोश देखने में चोर और चालाक लगता था और उसको बहुत सारी चालाकियॉ आती थीं इसी लिये उसने उसको अपने मूँगफली के खेत की रखवाली करने के लिये चुना।

ऐसे जानवर से भला अच्छा और कौन जानवर होगा जो चोर को पकड़ सकेगा? एक चोर को एक चोर ही पकड़ सकता है।

सो राजा ने उसको अपने खेत का चौकीदार चुन कर अपने मूँगफली के खेतों पर भेज दिया। कुछ समय तक तो सब कुछ ठीक चलता रहा पर यह सब बहुत दिनों तक नहीं चल सका।

बड़े खरगोश को वहाँ पर बहुत अच्छी अच्छी चीज़ें देखने को मिलीं तो फिर भला वह कब तक रुकता। पर इस बार मामला ज़रा खतरे वाला था।

क्योंकि राजा कोई ऐसा वैसा जानवर तो था नहीं जिसको वह जल्दी से बेवकूफ बना सकता पर फिर भी उसने काफी सोच विचार कर एक प्लान बनाया।

एक सुबह बड़ा खरगोश शेर के पास गया और उससे खेत पर आ कर यह देखने के लिये कहा कि वह वहाँ खेत पर यह देखे कि उसकी चौकीदारी कैसी चल रही थी।

शेर राजी हो गया ओर वह बड़े खरगोश के पीछे पीछे चल दिया।

कुछ देर बाद बड़े खरगोश बोला — "योर मैजेस्टी, आपके राज्य में कुछ चोर हैं। हैं न? अगर मैं झूठ बोलूँ तो शैतान मुझे उठा ले जाये।"

शेर ने कुछ नाराज होते हुए पूछा — "ऐसा तुम कैसे कह सकते हो?"

बड़ा खरगोश शेर को तसल्ली देते हुए बोला — "आप परेशान न हों, योर मैजेस्टी। आइये मैं आपको उस हर एक के पैरों के

निशान दिखाता हूँ जिसने भी आपकी मूँगफली चुराने की कोशिश की। मैं उन सबके पैरों के निशान पहचानता हूँ और आज मैं आपको उन सबके नाम भी बताता हूँ।"

यह सुन कर राजा की उत्सुकता बढ़ गयी। वह बोला — "ठीक है देखते हैं कि तुम ठीक बोल रहे हो या नही।"

बड़ा खरगोश उसको एक केले के पेड़ के नीचे ले गया और उसको कई सारे पैरों के निशान दिखाये और उनको पहले एक जानवर के पैरों के निशान बताये फिर दूसरे जानवर के पैरों के निशान बताये।

बड़ा खरगोश आगे बोला — "और केवल यही सब नहीं है। अगर आप इस पेड़ के पीछे खड़े हो जायें तो आप अपनी ऑखों से चोर को देख भी पायेंगे।"

शेर बड़े खरगोश की इस बात से बड़ा खुश हुआ कि वह उसको चोर को दिखायेगा भी सो वह उस पेड़ के नीचे लेट गया और चोरों के आने का इन्तजार करने लगा।

इस बीच बड़े खरगोश ने कुछ शाखाओं को आपस में बुन कर रस्सी बनायी और पेड़ के तने से बॉध दी और बोला — "अब जब हम चोर का इन्तजार कर रहे हैं तो मैं आपके लिये केले के इन सुन्दर मुलायम पत्तों का एक ताज बनाता हूँ।"

राजा बड़े खरगोश की इस होशियारी की तारीफ करते हुए बोला — "धन्यवाद धन्यवाद। तुम्हारा यह विचार तो बहुत अच्छा है।"

"पर पहले मैं आपके सिर के बालों में कंघी कर दूँ वरना वह ताज अपके सिर पर ठीक से रखा नहीं जायेगा। टेढ़ा मेढ़ा हो जायेगा।"

"हॉ यह तो ठीक है। कर दो।"

खरगोश ने तुरन्त ही शेर के सिर के बालों में कंघी करना शुरू कर दिया। उसने उसके बालों की एक लम्बी पोनीटेल बनायी और उसको उस रस्सी से बॉध दिया जो उसने पेड़ से बॉधी थी।

इस बीच शेर को कोई चोर आता दिखायी नहीं दिया।

जब बड़े खरगोश ने यह सब कर लिया तो वह एक तरफ को इशारा कर के चिल्लाया — "देखिये योर मैजेस्टी, उधर देखिये। जल्दी दौड़िये। वह रहा आपका एक चोर। वह आपकी मूँगफलियॉ निकाल रहा है।"

यह सुन कर शेर ने उठ कर खड़ा होना चाहा पर अपने बाल बॅधे होने की वजह से उसके सिर में बहुत ज़ोर से दर्द होने लगा और वह वहीं रुक गया। वह उठ ही नहीं सका बल्कि वह तो अपने पैरों पर भी खड़ा नहीं हो सका।

उसी समय बड़े खरगोश ने दूसरे जानवरों को आवाज लगानी शुरू की — "आओ आओ तुम भी देखो, आज मैंने एक अजीब चीज़ देखी। यह तो राजा शेर खुद ही अपने खेतों की मूँगफलियाँ चुरा रहा है और तुम लोगों का नाम लगा रहा है।"

बड़े खरगोश ने थोड़ी सी मूँगफलियाँ शेर के पैरों के पास फेंकते हुए कहा — "देखो, मैंने इस चोर को आज पकड़ लिया है। यह तुम सबका झूठा नाम लगा कर तुम्हारे ऊपर अपना और ज़्यादा शासन जमाना चाहता है।"

शेर तो उसकी ये बेकार की बातें सुन कर इतने ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गया कि वह तो एक शब्द भी नहीं बोल सका। दूसरे जानवर जो बड़े खरगोश की आवाज सुन कर इकट्ठा हो गये थे उन्होंने शेर की चुप्पी को हाँ समझा। उन्होंने कुछ डंडियाँ उठायीं और उस बेचारे शेर को मारना शुरू कर दिया।

इसके बाद उन्होंने बड़े खरगोश को जंगल का राजा घोषित कर दिया और उसको शाही कुर्सी पर बिठा दिया। बड़ा खरगोश अपने नये ओहदे के अनुसार काम करने लगा।

उसको देख कर तो ऐसा लगता था जैसे वह अपने जन्म से ही राजा रहा हो। वह सबको राजा के ही ढंग से हुक्म देता था और वह सारे जानवरों पर राज करता था।

पर जब खास मामलों की बात होती तो सब कुछ गड़बड़ हो जाता। जानवरों ने जल्दी ही पहचान लिया कि यह काम उसके बस

का नहीं था – खास कर के जज का और राजा का। सो उन्होंने उसको राजा के पद से हटा दिया।

बड़ा खरगोश इसके खिलाफ बिल्कुल भी नहीं बोला। बजाय शान से छोड़ने के उसने सोचा कि वह राजा का सारा खजाना अपने साथ ले जायेगा।

पर अब उसकी किस्मत का पहिया पलट रहा था। जब जानवरों ने देखा कि वह राजा का पद छोड़ कर जा रहा है तो उन्होंने उसका पीछा करने का विचार किया।

बड़ा खरगोश भागता गया और भागता गया। किसी तरह से वह जा कर एक बिल में छिप गया। उसको लगा कि वहाँ वह सुरक्षित रहेगा।

पर अपनी सूँघने की खास ताकत से एक चींटी खाने वाले[66] जानवर ने बड़े खरगोश की इस छिपी हुए जगह को ढूँढ लिया और शोर मचा दिया।

जानवरों ने एक लम्बी मुड़ी हुई डंडी से उसको बाहर निकालने की कोशिश की। कुछ बार कोशिश करने के बाद उन्होंने उस डंडी में उसका एक पंजा फॉस लिया।

[66] Translated for the word “Anteater”. See its picture above.

पर बड़े खरगोश ने भी हिम्मत नहीं हारी और चालाकी की एक चाल चलते हुए चिल्लाया — "खींचो, और खींचो। तुमने तो पेड़ की जड़ को पकड़ रखा है।"

यह सुन कर जानवरों ने उसका पंजा छोड़ दिया और फिर से कोशिश करनी शुरू की पर इस बार उन्होंने वाकई पेड़ की जड़ पकड़ ली थी।

एक बार फिर बड़े खरगोश ने चाल खेली और चिल्लाया — "आउ आउ। ज़रा धीरे से। तुम लोग तो मेरा पंजा ही तोड़ दोगे।"

यह सुन कर बिल के बाहर के जानवरों ने उसे और ज़ोर से खींचना शुरू कर दिया। वह जड़ टूट गयी। तुरन्त ही बड़ा खरगोश बहुत ज़ोर से चीखा जैसे कि उसको बहुत ज़ोर की चोट लगी हो। जानवरों ने सोचा कि इस बार उन्होंने बड़े खरगोश को ठीक से सजा दे दी।

सो वे बोले — "अब रुक जाओ। बस अब बहुत हो गया। हम लोगों ने उसको काफी सीख दे दी है और अब वह हमको और तंग नहीं करेगा।"

कह कर उन्होंने उस बिल को उसके सामने एक बड़ी झाड़ी लगा कर बन्द किया और चले गये।

बड़े खरगोश ने सोचा कि उसने उनको एक बार फिर से बेवकूफ बना दिया है पर तभी एक तेज हवा को झोंके ने उस बड़ी

झाड़ी को बिल के अन्दर घुसा दिया जिससे वह बिल एक जाल की तरह से बन्द हो गया।

खरगोश चिल्लाया — "उफ, तुम लोग तो मेरी सॉस घोट कर ही दम लोगे।" कह कर उसने उस झाड़ी को बिल के दरवाजे से पीछे की तरफ धकेलने की आखिरी कोशिश की और वह उसको हटा कर बाहर भाग गया।

बाहर तो कोई था नहीं पर वह खुद इतना डरा हुआ था कि बस वहॉ से वह जितना जल्दी भाग सकता था भाग गया और फिर उस जगह कभी दिखायी नहीं दिया।

19 बादल की राजकुमारी[67]

खरगोश की अक्लमन्दी की यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के स्वाज़ीलैंड देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

इस खरगोश के पास ऐसे दो मौके आये जब यह अपने देश के सरदार के कुत्तों के मारे जाने से बचा। असल में यह देश जिसमें वह रहता था उस सरदार का था और खरगोश उस सरदार के खेत में अक्सर चोरी करता रहता था। उसको डर था कि एक दिन वह सरदार उसको जरूर पकड़ लेगा।

भागते भागते वह हॉफने लगा था सो वह एक झाड़ी में आ कर लेट गया। जब उसके दम में दम आया तो वह अपने आपसे कहने लगा कि अब मुझे अपनी फसल उगानी चाहिये ऐसे मैं कब तक दूसरों के खेतों में चोरी करता रहूँगा।

वह अभी भी सरदार के बहुत तेज़ भागते हुए कुत्तों से पीछा छुड़ा कर किसी तरह यहॉ तक पहुँचा था इसलिये वह बहुत परेशान था।

सो अगली सुबह उसने अपना हल उठाया और जंगल की तरफ चल दिया। वहॉ उसने ठीक से छिपी हुई उपजाऊ जमीन का एक

---

[67] Cloud Princess – a folktale from Swaziland, Southern Africa.
Translated from the Book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com . Retold by Phyllis Savory.

टुकड़ा देखा। वह जमीन का टुकड़ा उसको बहुत अच्छा लगा सो उसने अपनी खेती वहीं करने की सोची।

उसने वहॉ की घास साफ की, फिर वहॉ की मिट्टी खोदी और उसको जोता। जब शाम हुई तो वह अपनी छोटी सी झोंपड़ी में आ गया। वह बहुत थक गया था पर अपने काम से बहुत सन्तुष्ट था।

शाम को वह अपनी मक्का का आखिरी भुट्टा पका रहा था जो उसने उस सरदार के खेत से पिछली बार चुराया था सो उसने सोचा कि कल मैं अपने मक्का के और काशीफल के बीज वहॉ लगाऊॅगा नहीं तो फिर एक दिन वे तेज़ कुत्ते मुझे पकड़ ही लेंगे।

उस रात वह बड़े आराम से सोया। अगले दिन घर की बनी हुई बीयर[68] के साथ अपना नाश्ता करने के बाद वह अपने खेत की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने जैसा सोचा था उसी तरह से अपना खेत बोया।

जब वह यह सब अपने मन के अनुसार खेत बना चुका तब उसने कुछ डंडियॉ काटीं और उनको अपने खेत के चारों तरफ बाड़ की तरह लगा दिया ताकि वह हिरनों से बचा रह सके।

मौसम के बारे में वह बहुत खुशकिस्मत रहा इसलिये उसकी खेती खूब अच्छी तरह से हुई और बढ़ी। अब उसको काटने का

[68] Beer is a kind of very light liquor.

समय आ रहा था। उसके मक्का के भुट्टे बहुत ज़ोर से महक रहे थे और काशीफल भी बड़े हो कर खूब गोल गोल हो गये थे।

उसने अपनी मेहनत के पहले फल तोड़े। जब वह आग के पास अपने रसीले भुट्टे भूनने के लिये बैठा तो उसे लगा कि वह कितना बेवकूफ था कि वह अपने सरदार के खेत पर जा कर उसकी चीज़ें चुरा चुरा कर अपनी ज़िन्दगी में खतरे में डाल रहा था। वह तो खुद ही कितनी अच्छी फसल उगा रहा था।

पर एक दिन उसको यह देख कर बहुत गुस्सा आया कि रात में उसके भुट्टों में से किसी ने कुछ दाने निकाल लिये हैं। अजीब से चिड़ियों के जैसे पंजे के निशानों से पता चलता था कि उनको किसी ने चोरी किया है। वैसे पंजों के निशान उसने पहले कभी नहीं देखे थे।

उसने सोचा कि वह इन चिड़ियॉ डाकुओं के लिये एक जाल बिछायेगा हालॉकि यह बड़ी अजीब सी बात थी कि वे चिड़ियॉ रात को ही आतीं थीं क्योंकि रात को तो सारी चिड़ियें सोने चली जाती हैं। फिर यह कौन सी चिड़िया थी जो रात को आती थी।

वह घास के मैदानों पर गया जहॉ सरदार के जानवर चरते थे और तब तक इन्तजार किया जब तक कि उनको चराने वाले सो नहीं गये। फिर उसने एक गाय की पूँछ के कुछ काले बाल तोड़ लिये।

वे बाल ले कर वह अपने खेत पर आया। उसने उनकी कुछ सरकने वाली गॉठें बनायीं और उनको उन डंडों से बॉध दिया जो जमीन में मजबूती से गड़े हुए थे। फिर उसने थोड़ी सी मिट्टी उन बालों के ऊपर डाल दी ताकि वे दिखायी न दे सकें।

अपने जाल की तैयारी पूरी कर के वह अपने घर चला गया। उसको पूरी आशा थी कि इस तरह वह अपना चोर जरूर पकड़ लेगा।

अगली सुबह वह जल्दी जल्दी उठा और अपने खेत पर जा पहुॅचा। वहॉ उसको कुछ चिड़ियों के पंखों की फड़फड़ाहट सुन कर बहुत खुशी हुई। उसने अपनी बाड़ के उस पार देखा तो वाकई एक चिड़िया उसके जाल में फॅसी हुई थी और वैसी कई और चिड़ियें उसके दुख में ऊपर आसमान में चक्कर काट रहीं थीं।

उसने इतनी सुन्दर चिड़िया पहले कभी नहीं देखी थी। उसके पंखों के रंग इन्द्रधनुषी थे पर उन पंखों के एक तरफ एक काले रंग का लम्बा सा पंख लगा हुआ था।

छूटने के लिये उस फड़फड़ाती हुई चिड़िया को पकड़ते हुए खरगोश बोला — "तो तुम मेरे बगीचे में चोरी कर रहीं थीं। आज मैं तुमको पका कर अपने लिये बहुत बढ़िया खाना बनाऊॅगा।"

उसने वह गॉठ खोली जिस गॉठ में वह चिड़िया पकड़ी गयी थी और अपने उस कैदी को अपने घर ले गया जबकि उसकी साथी चिड़ियें ऊपर आसमान में ही चक्कर काटती रहीं।

घर ला कर वह उस चिड़िया को मारने ही वाला था कि उसने सोचा कि मारने से पहले वह उसका वह काला पंख निकाल लेता है। वह उस पंख को अपनी झोंपड़ी के ऊपर लगा लेगा ताकि दूसरी चिड़ियें उधर चोरी करने के लिये न आ सकें।

जैसे ही उसने वह पंख निकाला तो वह चिड़िया तो गायब हो गयी और उसकी जगह एक बहुत ही सुन्दर लड़की उसके सामने खड़ी थी।

वह ऑखों में ऑसू भर कर बोली — "मेहरबानी कर के मेरा वह जादुई पंख वापस दे दो।"

खरगोश बोला — "नहीं, तुम तो बहुत सुन्दर हो मैं तुमको भागने नहीं दूँगा। अगर मैं तुम्हारा पंख तुमको वापस कर दूँगा तो तुम फिर चिड़िया में बदल जाओगी और अपने साथियों के पास चली जाओगी। तुम्हारा घर कहॉ है?"

उस सुन्दर लड़की ने जवाब दिया — "मेरा घर बादलों के उस पार है जहॉ मेरे पिता राज करते हैं। मैं उनका अकेला बच्चा हूँ और वे जो तुम्हारी झोंपड़ी के ऊपर चारों तरफ चक्कर काट रहीं हैं वे सब मेरी चिड़ियॉ सहेलियॉ हैं। वे मेरे बिना मेरे माता पिता के

पास वापस जाने से डर रहीं हैं इसलिये मेहरबानी कर के मुझे जाने दो।"

खरगोश उसकी प्रार्थना सुनने के मूड में बिल्कुल भी नहीं था सो उसने उसका वह काला पंख अपनी झोंपड़ी की छत में छिपा दिया।

अब उस बादल की राजकुमारी के पास खरगोश के पास रहने के अलावा और कोई चारा नहीं था। खरगोश अपने इतने सुन्दर कैदी के साथ बहुत ही मेहरबान था। वह राजकुमारी भी खरगोश की मेहरबानी के बदले में उसकी झोंपड़ी साफ करती और उसके घर का सारा काम करती।

कुछ समय बाद उन दोनों की ज़िन्दगी ठीक से चलने लगी। हफ्ते पर हफ्ते गुजरते गये और अब वह बादल की राजकुमारी भी अपने पकड़ने वाले को चाहने लगी थी।

एक दिन उस बादल की राजकुमारी ने खरगोश से कहा कि अगर वह उसका जादुई पंख उसको वापस कर देगा तो वह उसको भी अपनी तरह से एक आदमी में बदल देगी।

पहले तो खरगोश को राजकुमारी पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा कि शायद वह उसके साथ कोई चाल खेलना चाहती है और काला पंख मिलने के बाद वह फिर से चिड़िया बन कर हमेशा के लिये उड़ जायेगी।

पर फिर राजकुमारी ने उसको विश्वास दिलाया कि वह उसको बहुत प्यार करती थी और उसके बिना बादल में अपने घर जाने की

सोच भी नहीं सकती थी। सो खरगोश ने उसका काला पंख उसको वापस कर दिया।

जैसे ही उसने अपने हाथ में वह पंख पकड़ा उसने उस पंख से खरगोश को छुआ। खरगोश तुरन्त ही एक बहुत ही सुन्दर राजकुमार के रूप में बदल गया। राजकुमार बनते ही उसने उस बादल की राजकुमारी से शादी करने की इच्छा प्रगट की।

राजकुमारी ने भी तुरन्त ही उसको हॉ कर दी पर एक शर्त पर कि वह उनकी शादी को अभी राज़ ही रखेगा किसी को बतायेगा नहीं।

क्योंकि अगर उसकी उन चिड़ियों सहेलियों को इस शादी का पता चल गया जो अक्सर खरगोश की झोंपड़ी के ऊपर चक्कर काटतीं थीं तो वे उसके पिता को जा कर बता देंगी कि उनकी बेटी ने धरती के एक आदमी से शादी कर ली है। और फिर उसका पिता उसको अपने बादलों वाले घर से बाहर निकाल देगा।

इसी लिये वे पति पत्नी बन गये और अपनी छोटी सी झोंपड़ी में ही रहते रहे।

जब बादल के राजा को अपनी बेटी के बारे में पता चला तो उसने अपनी बेटी को लाने के लिये उन चिड़ियों सहेलियों के हाथों कई सन्देश भेजे पर राजकुमारी ने आने से मना कर दिया। इस पर राजा ने उस आदमी को मारने का निश्चय किया जिसको उसकी बेटी प्यार करती थी।

इस काम को करने के लिये उसने उसकी चिड़ियों सहेलियों को पहले एक कठफोड़वा[69] और एक चूहे से दोस्ती करने की सलाह दी।

उसने फिर कहा कि जब वे यह कर लें तो वे कठफोड़वे से जंगल से जहर इकट्ठा करने के लिये कहें और चूहा जो खरगोश की झोंपड़ी में अन्दर जा सकता है उससे उस आदमी की झोंपड़ी में छिप कर अन्दर जाने के लिये कहें।

झोंपड़ी में जा कर वह चूहा उस जहर को उसकी बेटी के प्रेमी के खाने में मिला देगा और इस तरह उसका वह प्रेमी मर जायेगा।

वे दोनों छोटे जानवर इस काम को करने पर राजी हो गये और राजकुमार और राजकुमारी का विश्वास पाने के चक्कर में झोंपड़ी के आस पास चक्कर काटने लगे।

पर जल्दी ही वे राजकुमार और राजकुमारी से इतना प्यार करने लगे कि जब उनको मारने का समय आया तो उन्होंने राजा का हुक्म मानने से साफ मना कर दिया।

हालॉकि बादल की राजकुमारी अपने पति से बहुत खुश थी पर फिर भी वह अपने घर और अपने आदमियों को एक बार देखना चाहती थी।

[69] Translated for the word “Woodpecker”. Woodpecker is a bird who normally always scratches the wood (from trees). See its picture above.

सो उसने अपने पति से फिर अपना जादुई पंख माँगा ताकि वे दोनों बादलों के उस पार उसके घर के लोगों से मिलने जा सकें।

राजकुमारी ने खरगोश से कहा कि शायद तुम्हें देखने के बाद वे लोग हमारी शादी के लिये तैयार हो जायें और मेरे पिता तुम्हें अपना दामाद बनाने पर राजी हो जायें।

खरगोश उसकी यह प्रार्थना ठुकरा नहीं सका क्योंकि वह जान गया था कि वह राजकुमारी एक बहुत अच्छी पत्नी है और वह उस पर अब विश्वास भी करने लगा था कि वह उसको छोड़ कर भागेगी नहीं।

सो उसने उसका वह काला पंख अपनी छिपी हुई जगह से निकाला और राजकुमारी को दे दिया। राजकुमारी ने उसे जमीन में गाड़ दिया। तुरन्त ही वह पंख ऊपर बढ़ता गया और बादलों के ऊपर तक पहुँच गया।

राजकुमार और राजकुमारी दोनों ने अपने दोस्तों कठफोड़वा और चूहे को बुलाया और सब उस पंख पर चढ़ कर बादल के उस पार जाने लगे। सबसे आगे राजकुमार था, उसके पीछे राजकुमारी थी, उसके पीछे थी कठफोड़वा और सबसे पीछे था चूहा।

जब उन्होंने बादलों को पार कर लिया तो उनको एक बहुत बड़ी दीवार मिली। जहाँ उस पंख की नोक थी वहाँ पर एक सुरंग का मुँह था पर उनका रास्ता कुछ चट्टानों ने रोक रखा था जो आपस

में ऐसे जुड़ी हुई थीं कि कहीं उनका जोड़ ही दिखायी नहीं दे रहा था।

राजकुमारी बोली — "अब हमारी मुश्किलें शुरू होती हैं क्योंकि मेरी केवल एक विश्वास वाली लड़की ही इस चट्टान को हटाने का रास्ता जानती है जिसने मेरे पिता के राज्य का रास्ता रोक रखा है।"

चूहा बोला कोई दरार इतनी छोटी नहीं हो सकती जिसे मैं न पा सकूँ। मैं इस चट्टान के चारों तरफ घूमता हूँ और अपना रास्ता खोजता हूँ।

सो वह उस सुरंग के चारों तरफ कोई ऐसी दरार ढूँढने के लिये बहुत घूमा जिससे उसको अन्दर जाने का रास्ता मिल जाये। पर वे चट्टानें तो सब इतनी अच्छी तरह से चिपकी हुई थीं कि उसको वहाँ कोई भी ऐसी जगह नहीं मिल सकी जहाँ वह अपने तेज़ दाँत घुसा सकता।

कठफोड़वा बोली — "अब मैं कोशिश करती हूँ क्योंकि मेरी तो सारी ज़िन्दगी पेड़ों के तनों पर अपनी चोंच मारते मारते गुजर गयी। मेरे कान तुरन्त ही उस आवाज को पहचान लेंगे जहाँ भी कहीं कुछ खोखला है और जहाँ भी इस दीवार को हटाने का राज़ छिपा है।"

"टैप टैप टैप।" उस कठफोड़वा ने उस दीवार के चारों तरफ अपनी चोंच मारनी शुरू कर दी। उसने उस दीवार का कोई हिस्सा बिना अपनी चोंच मारे नहीं छोड़ा।

"ओह मुझे लगता है कि यहाँ इस जगह के पीछे कोई खोखली जगह है।" कह कर उसने बड़ी सँभाल कर उस जगह को खुरचना शुरू किया और फिर अपनी तेज़ चोंच से उसे कुरेदा।

इससे उसने एक ऐसे रंग के पत्थर को पा लिया जो दीवार के ही रंग का था। उसको साधारण आँखों से देख पाना नामुमकिन था। सँभाल कर उसने उसे उठाया और बाहर की तरफ खींच लिया।

जब उसने उस पत्थर को बाहर खींच कर फेंका तो चट्टान में दरवाजा खुल गया। वहाँ से उनको बहुत ही सुन्दर जमीन दिखायी दी जहाँ हरे हरे पेड़ लगे हुए थे, चमकीले पानी के नाले बह रहे थे और सन्तुष्ट जानवर घास चर रहे थे।

राजकुमारी बोली — "आओ मेरे पिता के राज्य में तुम्हारा स्वागत है।" कहती हुई वह उस प्यारी सी जगह में उन सबको ले कर आगे आगे चली। जल्दी ही वे एक बड़े गाँव में आ गये जहाँ सुन्दर सुन्दर झोंपड़ियाँ बनी हुई थीं और जानवरों के घर बने हुए थे।

बादल राज्य के लोग भी अपनी राजकुमारी के अचानक लौट आने पर बहुत खुश थे। राजकुमारी अपने पिता के पास पहुँची और उनको नमस्ते की तो उसके पिता ने पूछा — "यह कौन है जिसको तुम अपने साथ ले कर आयी हो?"

राजकुमारी बोली — "यह मेरा धरती का दोस्त है जिससे मैंने प्यार करना सीखा है और मैं चाहती हूँ कि यही मेरा पति बने।"

यह सुन कर तो बादल का राजा बहुत गुस्सा हो गया। वह बोला — "यह तुम क्या कह रही हो? बादल राज्य के लोगों ने कभी भी धरती के लोगों से शादी नहीं की। इस आदमी को तुरन्त ही अपने घर लौट जाना चाहिये।"

राजकुमारी ने अपने पिता की बात सुनने के लिये मना कर दिया। उसने कहा कि अगर वह उसके प्रेमी को बादल राज्य से निकालेगा तो वह खुद भी वहाँ से हमेशा के लिये चली जायेगी।

उसने अपने पिता से फिर कहा — "यह तो धरती के दूसरे लोगों से भी बहुत ज़्यादा अक्लमन्द है आपको इसे अपना दामाद बना लेना चाहिये।"

राजा ने जब देखा कि उसकी बेटी अपने इरादों में पक्की है तो वह बोला — "ठीक है हम उसे यहाँ कुछ दिन रहने का मौका देंगे फिर देखते हैं।"

पर उसके दिमाग में कुछ और ही था। वह सोच रहा था कि इस बीच में वह कुछ ऐसा सोच लेगा जिससे वह उस धरती के आदमी को इस तरह मार देगा कि उसकी मौत एक ऐक्सीडैंट लगे।

उसके बाद उसने उन सबके आने की खुशी में एक दावत दी। चूहा अच्छे खाने का बहुत शौकीन था सो जब रसोई में खाना बन रहा था तो उसकी खुशबू सूँघता सूँघता वह उधर ही चला गया।

वह वहाँ सबकी आँख बचा कर उन बढ़िया खानों के टुकड़े उठाने चला गया था जो फर्श पर बिखर गये थे।

वह वहाँ खाना खा तो जरूर रहा था पर उसके कान और आँख बहुत तेज़ थे। उसने बड़े रसोइये को राजा के हुक्म के बारे में बात करते हुए सुना। वह कह रहा था कि धरती के आदमी को जहर देना है।

वह वहाँ सब ध्यान से देख रहा था। जब सारे अच्छे खानों की प्लेटें लग गयीं तो उसने देखा कि एक प्लेट अलग रखी हुई थी। उसी समय राजा का बड़ा जादूगर वहाँ आया और उस प्लेट पर एक सफेद सा पाउडर छिड़क कर चला गया।

चूहा बिना समय गँवाये राजकुमार के पास भागा गया। उसके कन्धे पर बैठ कर वह उसके कान में फुसफुसाया — "तुम्हारी ज़िन्दगी खतरे में है इसलिये आज तुम यहाँ खाना मत खाना।"

फिर उसने उसको वह सब बता दिया जो कुछ उसने रसोई में देखा और सुना था। इस तरह उस दिन राजकुमार बच गया।

राजा यह सब देख कर बहुत गुस्सा हुआ क्योंकि उसका यह प्लान बेकार हो चुका था। उसने अपने बड़े जादूगर को फिर बुलाया।

कोई दूसरा उसके इस बुरे प्लान को न सुन ले इसलिये उन्होंने इस प्लान के बारे में एक पेड़ के नीचे बात की जिसके नीचे वे लोग अपनी मीटिंग किया करते थे।

राजा ने कहा — "इस बार तुम उस मैदान में एक बहुत ही भयानक तूफान ले कर आओ जो मेरे राज्य और मेरे पड़ोसी राज्यों के बीच में है। मैं राजकुमारी के प्रेमी को वहॉ भेजूँगा और वह बर्फीला तूफान उसको मार देगा।"

राजा को तो पता ही नहीं था पर कठफोड़वा फिर उसी पेड़ के ऊपर की शाखों पर बैठी हुई थी। उसके तेज़ कानों ने वह सारी बातें सुन लीं जो राजा और उसके जादूगर के बीच में हुई थीं। उसने अपना कुछ प्लान बनाने की सोची।

अगली सुबह राजा ने राजकुमार को बुलाया और उससे कहा — "मैं तुम्हारे हाथ अपने एक पड़ोसी को एक सन्देश भेजना चाहता हूँ। हमारा यह पड़ोसी इस मैदान के उस पार रहता है जो हमारे राज्य को उसके राज्य की हद से अलग करता है।

अगर तुमको हमारे साथ रहना है तो तुम्हें हमारे आस पास के लोगों को जानना जरूरी है इसलिये तुम उस पड़ोसी से मिल कर आओ।"

सो अगली सुबह राजकुमार अपनी यात्रा पर चल दिया पर जब वह उस मैदान के आधे रास्ते तक पहुँचा तो अचानक ही आसमान में काले बादल उमड़ने लगे, भयानक बिजली चमकने लगी और बादल गरजने लगे।

भारी तूफान आ गया था पर वहॉ आस पास में कोई छिपने की जगह भी नहीं थी।

राजकुमार सोचने लगा कि अगर यह तूफान ऐसे ही रहा तो इस तरह से तो मैं मारा भी जा सकता हूँ। तभी बड़े बड़े ओले भी पड़ने लगे।

पर इससे पहले कि वे ओले उसके सिर को छूते भी कठफोड़वा ने अपने जादुई पंख से उसको ढक लिया और कहा कि वह लेट जाये। कठफोड़वा उसका छिपे रूप से पीछा करती चली आ रही थी और इस तरह से उसने राजकुमार को उस तूफान से बचा लिया।

जब तूफान खत्म हो गया तो वह सोते से जागा सा खड़ा हो गया। वहाँ उसको कुछ दिखायी ही नहीं दे रहा था सिवाय अकेलेपन के। हालाँकि ओले जमीन पर पड़े हुए थे पर फिर भी राजकुमार को कोई नुकसान नहीं पहुँचा था।

सो जब राजकुमार अपनी यात्रा से सही सलामत वापस लौट आया तो राजा अपने प्लान के बेकार हो जाने पर फिर से बहुत गुस्सा था।

अबकी बार उसने अपने सारे जादूगरों को बुला भेजा और उनसे सलाह की। अबकी बार सबने यह निश्चय किया कि इस राजकुमार के आदर में हमें एक शिकार खेलने का इन्तजाम करना चाहिये। बहुत सारे शिकारी अपने अपने तीर कमानों के साथ होंगे तो किसको क्या पता चलेगा कि किसका तीर उसको लगा।

इस बार भी कठफोड़वा उस पेड़ की ऊपरी शाखों पर बैठी थी और इस प्लान के बारे में सुन रही थी। वह तुरन्त ही जादूगरों के

सरदार के घर की तरफ उड़ गयी। वहॉ जा कर उसने एक जादुई तलिस्मा बनाया और उसको ले कर राजकुमार के पास आयी।

वह तलिस्मा उसने राजकुमार को दिया और कहा कि वह उसे अपने गले में इस तरह पहन ले कि वह दिखायी न दे। उसने राजकुमार से यह भी कहा कि यह तलिस्मा हर तीर को उसके शरीर से दूर रखेगा।

सो शिकार वाले दिन कई शिकारियों ने राजा का इनाम पाने की कोशिश में राजकुमार को मारने की कोशिश की पर किसी का कोई भी तीर उसको छू तक न सका मारना तो दूर।

हालॉकि उन सब शिकारियों के निशाने ठीक थे पर फिर भी कठफोड़वा के तलिस्मा की वजह से वे सारे तीर उस राजकुमार के पास जा कर जमीन पर गिर जाते थे। कोई तीर उसको छू तक नहीं पाता था और राजकुमार सही सलामत रहता था।

इस तरह राजकुमार वहॉ से भी सही सलामत वापस आ गया। उस रात उसने बादल की राजकुमारी से कहा — "प्रिये, मुझे लगता है कि तुम्हारे पिता को तब तक चैन नहीं मिलेगा जब तक वह मुझे मार नहीं लेंगे इसलिये अब हमको धरती पर वापस लौट जाना चाहिये।"

राजकुमारी राजकुमार को बहुत प्यार करती थी। वह बोली — "प्रिये, मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती। मैं तुम्हारे साथ ही चलूॅगी।"

सो रात के अँधेरे में जब सब गहरी नींद सो रहे थे राजकुमार, राजकुमारी, कठफोड़वा और चूहा सब बिना आवाज किये उस दरवाजे की तरफ चल पड़े जो बादलों में खुलता था।

राजकुमारी ने अपना जादू का पंख नीचे धरती पर फेंका तो वह राजकुमार की छोटी सी झोंपड़ी के दरवाजे के पास जा कर गिरा। वे सब बादल राज्य को हमेशा के लिये छोड़ कर धरती पर आ गये।

कठफोड़वा बोली — "ओ राजकुमार, तुमको जब भी कुछ चाहिये अपने जादू के तलिस्मा से माँग लेना वह तुम्हें सब कुछ दे देगा।"

राजकुमार बोला — "मेरी सबसे बड़ी इच्छा तो अभी यही है कि मुझे अपनी पत्नी के लायक एक घर चाहिये।"

तुरन्त ही उनके सामने एक बहुत ही सुन्दर गाँव प्रगट हो गया जिसमें बहुत सारे लोग भी थे। उन्होंने राजकुमार को अपना राजा मान कर सलाम किया।

उस गाँव में कुछ जानवर घुटनों तक ऊँची ऊँची घास में चर रहे थे और एक दयावान बूढ़ी स्त्री लड़कियों के एक झुंड के साथ राजकुमारी को उसके महल तक ले कर आ रही थी।

राजकुमार की दूसरी इच्छा था कि कठफोड़वा और चूहा भी आदमी बन जायें सो वे भी पलक झपकते आदमियों में बदल गये।

उसके बाद राजकुमार और राजकुमारी की शादी की खुशी में एक बहुत ही बड़ी और बढ़िया दावत का इन्तजाम हुआ।

चूहा राजकुमार का खास मन्त्री बना और चारों दोस्त बहुत सालों तक अपने राज्य में खुशी से राज करते रहे।

20 शेर हयीना और खरगोश[70]

खरगोश की चालाकी की यह लोक कथा अफ्रीका के तनज़ानिया देश के ज़ंज़ीबार द्वीप समूह में कही सुनने वाली लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि सिम्बा शेर, फीसी हयीना और कीटीटी खरगोश[71] ने मिल कर यह फैसला किया कि वे सब मिल कर खेती करेंगे।

सो वे तीनों एक खुले मैदान में चले गये और वहाँ जा कर एक बागीचा बनाया और उसमें उन्होंने कई किस्म के बीज लगाये। बीज बो कर वे सब घर वापस आ गये और फिर कुछ दिन तक इन्तजार किया।

कुछ दिनों के बाद जब उनकी फसल तैयार हो गयी और उसको काटने का समय आया तो तीनों ने अपने खेत पर जाने का विचार किया। सो एक सुबह वे सब जल्दी उठे और अपने बागीचे की तरफ चल दिये। बागीचा थोड़ी दूरी पर था।

---

[70] The Lion, and Hyena and the Rabbit – a folktale from Zanzibar. Taken from the Book "Zanzibar Tales :… " by George W Bateman. 1901. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com .

[71] Simba Lion, Fissi Hyena, and Kititi Rabbit. Hyena is a tiger like animal. See its picture above the picture of rabbit.

कीटीटी खरगोश बोला — "जब हम लोग अपने बगीचे की तरफ जा रहे होंगे तो हम सड़क पर बिल्कुल नहीं रुकेंगे। अगर कोई रुकता है तो कोई भी उसको खा सकता है। ठीक?"

अब कीटीटी खरगोश के साथी तो इतने चालाक नहीं थे जितना कि वह खुद, और उनको यह भी यकीन था कि वे उससे ज़्यादा चल सकते थे सो वे सब उसकी बात मान गये।

तीनों चल दिये। पर वे अभी कुछ ही दूर गये थे कि कीटीटी खरगोश रुक गया। फीसी हयीना बोला — "देखो यह खरगोश रुक गया। अब हम इसको खा लेते हैं।"

सिम्बा शेर बोला — "हॉ यही तो तय हुआ था।

कीटीटी खरगोश बोला — "मैं सोच रहा था।"

सिम्बा शेर और फीसी हयीना एक साथ बोले — "तुम क्या सोच रहे थे खरगोश भाई?"

कीटीटी खरगोश दो पत्थरों की तरफ इशारा कर के बोला — "मैं उन दो पत्थरों के बारे में सोच रहा था जो वहॉ पड़े हैं। छोटा वाला पत्थर ऊपर नहीं जा सकता और बड़ा वाला पत्थर नीचे नहीं आ सकता।"

सिम्बा शेर और फीसी हयीना भी उन पत्थरों को देखने के लिये रुक गये और बस इतना ही कह सके "हॉ यह तो तुम ठीक कह रहे हो।"

इतनी देर मे कीटीटी खरगोश सुस्ता चुका था सो वे सब फिर आगे बढ़े।

वे लोग थोड़ी दूर ही और चले थे कि कीटीटी खरगोश फिर रुक गया। फीसी हयीना फिर बोला — "यह कीटीटी खरगोश तो फिर रुक गया। अबकी बार हमें इसको जरूर खा लेना चाहिये।"

सिम्बा शेर बोला — "यह तो तुम ठीक कह रहे हो।"

कीटीटी खरगोश फिर बोला — "मैं फिर कुछ सोच रहा था।"

उसके साथी एक बार फिर उत्सुकता से बोले — "अबकी बार तुम क्या सोच रहे थे खरगोश भाई?"

कीटीटी खरगोश बोला — "मैं सोच रहा था कि हम जैसे लोग जब अपना कोट बदलते हैं तो हमारा वह पुराना वाला कोट कहाँ जाता है।"

सिम्बा शेर और फीसी हयीना ने तो इस बारे में कभी सोचा ही नहीं था। पर बाद में वे यह भी सोचने लगे कि हालाँकि खरगोश रास्ते में रुक गया था फिर भी दोनों में से कोई भी कीटीटी खरगोश को नहीं खा सका।

इतनी देर में कीटीटी खरगोश फिर थोड़ा सुस्ता लिया था सो फिर तीनों आगे बढ़े।

थोड़ी देर बाद फीसी हयीना ने भी अपने कुछ विचार रखने चाहे सो वह भी रुक गया। उसको रुकता देख कर सिम्बा शेर चिल्लाया

— "यह नहीं हो सकता। फीसी हयीना इस बार हमें तुमको खाना ही होगा।"

फीसी हयीना बोला — "नहीं नहीं, मैं सोच रहा था।"

"क्या सोच रहे थे तुम?"

फीसी हयीना अपने आपको चतुर दिखाते हुए बोला — "अरे मैं तो कुछ भी नहीं सोच रहा था।"

कीटीटी खरगोश बोला — "तुम इस तरीके से हमें बेवकूफ नहीं बना सकते।"

और सिम्बा शेर फीसी हयीना के ऊपर कूद पड़ा और उसे मार डाला। कीटीटी खरगोश और सिम्बा शेर दोनों ने मिल कर फीसी हयीना को खा लिया। इसके बाद कीटीटी खरगोश और सिम्बा शेर फिर आगे बढ़े।

चलते चलते वे एक गुफा के पास आये। वहॉ आ कर कीटीटी खरगोश फिर रुक गया। इस बार सिम्बा शेर बोला — "हालॉकि मुझे अब भूख नहीं है पर तुमको खाने के लिये मुझे अपने पेट में कुछ जगह तो बनानी ही पड़ेगी, ओ छोटे कीटीटी।"

कीटीटी खरगोश बोला — "मेरा ख्याल है कि नहीं, इसकी जरूरत नहीं है क्योंकि मैं फिर कुछ सोच रहा हूॅ।"

सिम्बा शेर बोला — "इस बार तुम क्या सोच रहे हो?"

कीटीटी खरगोश सामने की गुफा की तरफ इशारा करते हुए बोला — "इस बार मैं इस गुफा के बारे में सोच रहा हूॅ। पुराने

जमाने में हमारे बड़े लोग इधर से जाया करते थे और उधर को निकल जाया करते थे। मैं सोच रहा हूँ कि मैं भी कुछ ऐसा ही करूँ।"

सो वह उस गुफा के अन्दर एक तरफ से गया और दूसरी तरफ से निकल आया। ऐसा उसने कई बार किया।

फिर उसने सिम्बा शेर से कहा— "देखते हैं कि तुम ऐसा कर सकते हो या नहीं।"

शेर उस गुफा के अन्दर घुसा पर बहुत जल्दी ही वह बीच में फँस गया। अब न तो वह आगे ही जा सका और न पीछे ही आ सका।

बस पल भर में ही कीटीटी खरगोश सिम्बा शेर की पीठ पर था और उसे खा रहा था। थोड़ी ही देर में सिम्बा शेर चिल्लाया — "तुम मुझे पीछे से ही खाते रहोगे या आगे से भी खाओगे?"

पर कीटीटी खरगोश भी इतना बेवकूफ नहीं था। वह बोला — "मैं तुम्हारे सामने नहीं आ सकता क्योंकि मुझे तुम्हारा चेहरा देखने में शर्म आती है।"

कीटीटी खरगोश से उस शेर को जितना खाया गया उसने उसे उतना खाया और फिर अपने बागीचे की तरफ चला गया। अब वह उस बगीचे का अकेला मालिक था।

तो देखी तुमने खरगोश की चालाकी?

21 बन्दर, शार्क और धोबी की गधी[72]

चालाक खरगोश की अफ्रीका के तनज़ानिया देश की लोक कथाओं से ली गयी एक और लोक कथा।

एक बार की बात है कि कीमा बन्दर[73] और पापा शार्क बहुत गहरे दोस्त बन गये। बन्दर तो एक बहुत बड़े कूयू[74] के पेड़ पर रहता था जो समुद्र के किनार ही उगा हुआ था। उसकी कुछ शाखें जमीन की तरफ थीं और कुछ शाखें समुद्र के ऊपर थीं और पापा शार्क समुद्र में रहता था।

हर सुबह जब बन्दर कूयू पेड़ की गिरी का नाश्ता कर रहा होता तो पापा शार्क किनारे पर पेड़ के नीचे आता और आवाज लगाता — "मुझे थोड़ी सी गिरी दो न कीमा भाई।" और बन्दर उसके लिये कई सारी गिरी नीचे फेंक देता।

यह सिलसिला कई महीनों तक चलता रहा कि एक दिन पापा शार्क ने बन्दर से कहा — "कीमा भाई, तुमने मेरे ऊपर बहुत

---

[72] The Monkey, the Shark and the Washerman's Donkey – a folktale from Zanzibar. Taken from the Book "Zanzibar Tales :… " by George W Bateman. 1901. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com .
[Surprisingly this story has been told and heard in different flavors in several other countries too such as India, Ethiopia etc. Read other stories in the book "Crocodile and Monkey Like Stories", by Sushma Gupta in Hindi.]

[73] Keema Monkey

[74] Mkooyoo tree

मेहरबानियॉ की हैं। मैं चाहता हूँ कि एक दिन तुम मेरे घर चलो ताकि मैं तुम्हारी उन मेहरबानियों का कुछ बदला चुका सकूँ।"

बन्दर बोला — "मैं तुम्हारे साथ कैसे जा सकता हूँ पापा शार्क। हम जमीन पर रहने वाले लोग हैं पानी में नहीं जा सकते।"

शार्क बोला — "तुम उसकी चिन्ता मत करो। मैं तुमको पानी में ले भी जाऊँगा और एक बूँद पानी भी तुमको नहीं छू पायेगा।"

बन्दर बोला — "तब ठीक है। चलो चलते हैं।"

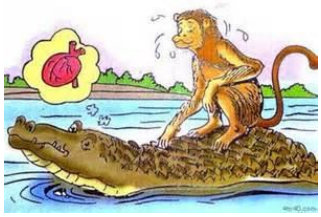

सो पापा शार्क ने कीमा बन्दर को अपनी पीठ पर बिठाया और नदी में तैर गया। जब वे लोग बीच पानी में पहुँच गये तो शार्क बोला — "तुम मेरे दोस्त हो इसलिये मैं तुमको सच सच बताता हूँ।"

बन्दर यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया और बोला — "क्या बात है पापा शार्क क्या बात है? वह क्या सच है जो तुम मुझे बताना चाहते हो?"

पापा शार्क बोला — "सच तो यह है बन्दर भाई कि हमारा राजा बहुत बीमार है और हमारे डाक्टर ने हमें बताया है कि उसकी दवा केवल बन्दर के कलेजे से ही बन सकती है।"

कीमा बन्दर एक पल सोच कर बोला — "तुम तो बहुत ही बेवकूफ हो पापा शार्क। तुमने यह बात मुझे चलने से पहले क्यों नहीं बतायी?"

पापा शार्क ने पूछा — "पर वह क्यों?"

कीमा बन्दर थोड़ी देर तो चुप रहा उसने कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि वह अपने बचाव का कोई तरीका सोच रहा था।

कीमा बन्दर को चुप देख कर पापा शार्क ने पूछा — "अरे तुम बोलते क्यों नहीं?"

कीमा बन्दर बोला — "अब मैं क्या बोलूँ क्योंकि अब तो बहुत देर हो गयी पापा शार्क। अगर तुमने यह बात मुझे चलने से पहले बतायी होती तो मैं अपना कलेजा अपने साथ ले कर आता।"

पापा शार्क ने आश्चर्य से पूछा — "क्या मतलब? क्या तुम्हारा कलेजा तुम्हारे पास नहीं है?"

कीमा बन्दर बोला — "ओह तो तुम हमारे बारे में कुछ भी नहीं जानते क्या? हम बन्दर लोग जब बाहर जाते हैं तो अपना कलेजा पेड़ पर ही छोड़ आते हैं और बिना कलेजे के ही इधर उधर घूमते रहते हैं। तुमको मेरा विश्वास नहीं हो रहा? तुम समझ रहे हो कि मैं डर रहा हूँ?

तो फिर चलो, हम तुम्हारे घर ही चलते हैं। वहाँ तुम मुझे मार सकते हो और मेरा कलेजा ढूँढ सकते हो पर वह सब बेकार ही रहेगा क्योंकि वह तो वहाँ है ही नहीं तो वह तुमको मिलेगा कहाँ से।"

बन्दर शार्क का दोस्त था सो शार्क को बन्दर पर विश्वास हो गया। वह बोला — "अगर ऐसा है तो चलो फिर वापस तुम्हारे घर ही चलते है तुम्हारा कलेजा लाने।"

कीमा बोला — "नहीं नहीं, पहले अब हम तुम्हारे घर ही चलते हैं।"

लेकिन शार्क बोला — "नहीं नहीं, पहले तुम्हारे घर चलते हैं तुम्हारा कलेजा लाने के लिये।"

आखिर बन्दर ऊपर से अपने घर जाने के लिये अनमनापन दिखाते हुए अपने घर ही चलने को तैयार हो गया और शार्क बन्दर के घर की तरफ वापस लौट पड़ा।

शार्क के किनारे पहुँचते ही बन्दर जमीन पर कूद गया और जल्दी से पेड़ पर चढ़ गया। वहाँ से वह बोला — "शार्क पापा, मेरा इन्तजार करो। मैं ज़रा अपना कलेजा ले लूँ फिर चलते हैं।"

जब वह पेड़ पर काफी ऊँची टहनियों पर पहुँच गया तो वहाँ जा कर वह चुपचाप शान्ति से बैठ गया। शार्क बेचारा काफी देर तक इन्तजार करता रहा फिर बोला — "कीमा भाई, आओ चलें।"

पर कीमा बन्दर चुपचाप वहीं बैठा रहा। शार्क ने फिर कीमा को आवाज लगायी पर इस बार बन्दर बोला "कहाँ?"

"मेरे घर।"

कीमा बन्दर चिल्लाया — "क्या तुम पागल हो?"

शार्क ने पूछा — "क्यों, मैं पागल क्यों हूँ?"

बन्दर बोला — "क्या तुमने मुझे धोबी की गधी समझ रखा है?"

शार्क ने पूछा — "धोबी की गधी में क्या खास बात है भाई?"

बन्दर बोला — "उसकी खासियत यह है कि न तो उसके कलेजा होता है और न ही उसके कान होते हैं।"

अब शार्क अपनी उत्सुकता नहीं रोक पाया उसने बन्दर से उस धोबी की गधी की कहानी सुनाने के लिये कहा जिसके न तो कलेजा था और न कान थे। बन्दर ने शार्क को धोबी की गधी की कहानी कुछ ऐसे सुनायी —

धोबी की गधी की कहानी

एक धोबी के पास एक गधी थी। उसका नाम पूँडा[75] था। वह धोबी अपनी गधी को बहुत प्यार करता था पर किसी वजह से वह गधी घर से भाग गयी और जंगल चली गयी।

वहाँ जा कर कोई काम न होने की वजह से वह सुस्ती की ज़िन्दगी बिताने लगी और सुस्ती की ज़िन्दगी बिताने की वजह से वह बहुत मोटी भी हो गयी।

[75] Poonda was the name of the she-donkey.

एक दिन सूँगूरा[76] नाम का बड़ा खरगोश जंगल में घूमते घूमते पूँडा गधी के पास से गुजरा। अब बड़ा खरगोश तो बहुत ही चालाक जानवर होता है। अगर तुम ध्यान से देखो तो उसका मुँह हमेशा चलता ही रहता है। ऐसा लगता है जैसे वह हमेशा अपने आपसे हर तरीके की बातें करता रहता है।

सो जब सूँगूरा बड़े खरगोश ने पूँडा गधी को देखा तो सोचा "ओह यह गधी तो बहुत मोटी है। इसमें से तो हमको बहुत सारा मॉस मिलेगा।"

तो अब वह खुद तो गधी को मार नहीं सकता था सो वह तुरन्त ही सिम्बा शेर[77] के पास गया।

सिम्बा शेर काफी बीमार था और बेचारा अभी पूरी तरह से ठीक भी नहीं हो पाया था सो काफी कमजोर भी था। वह शिकार के लिये भी नहीं जा सकता था और वह भूखा भी बहुत था।

सूँगूरा बड़ा खरगोश उससे बोला — "मैं कल तुम्हारे लिये काफी मॉस ला सकता हूँ जो हम दोनों के लिये काफी से भी ज़्यादा होगा पर तुमको उस शिकार को मारना पड़ेगा।"

सिम्बा शेर बोला — "दोस्त यह तो बड़ी अच्छी बात है। ठीक है, तुम उसे ले कर आओ फिर मैं देखता हूँ।"

---

[76] Soongooraa hare – in Eastern and Southern African countries hare's name is Soongooraa. Poondaa is the she-donkey. Hare is like a rabbit but is bigger than the rabbit. See its picture above.

[77] Simba lion – in Eastern and Southern African countries lion's name is Simba

यह सुन कर सूँगूरा बड़ा खरगोश तुरन्त ही जंगल में भाग गया। वह गधी के पास पहुँचा और उससे बोला — "ओ मिस पूँडा, मुझे तुम्हारा हाथ माँगने के लिये तुम्हारे पास भेजा गया है।"

पूँडा गधी ने पूछा — "किसने भेजा है तुम्हें? किसने माँगा है मेरा हाथ?"

"सिम्बा शेर ने।"

यह सुन कर तो गधी बहुत ही खुश हो गयी। वह बोली — "ओह यह तो बहुत ही अच्छा रिश्ता है चलो जल्दी चलें।"

सो दोनों शेर के घर आ पहुँचे। शेर ने उनको प्रेम से अन्दर बुलाया और बैठाया। सूँगूरा बड़े खरगोश ने सिम्बा शेर को यह बताने के लिये अपनी भौंहों से इशारा किया कि यही है वह शिकार जिसकी मैं कल बात कर रहा था। मैं बाहर जाता हूँ और मैं वहीं इन्तजार करता हूँ।

फिर उसने पूँडा से कहा — "मिस पूँडा, मुझे थोड़ा काम है, वह काम कर के मैं अभी वापस आता हूँ। तब तक तुम अपने होने वाले पति के पास बैठ कर गपशप करो।" और यह कह कर वह बड़ा खरगोश वहाँ से बाहर भाग गया।

जैसे ही बड़ा खरगोश बाहर गया शेर गधी के ऊपर कूद पड़ा। दोनों में बहुत ज़ोर की लड़ाई हुई। गधी ने शेर को बहुत ज़ोर से मारा। शेर उस समय बहुत कमजोर था। काफी कोशिशों के बाद

भी शेर गधी को न मार सका और वह गधी शेर को नीचे पटक कर जंगल में अपने घर भाग गयी।

थोड़ी ही देर में बाहर से बड़ा खरगोश आ गया और शेर से पूछा — "सिम्बा शेर जी क्या हुआ? क्या तुमने उस गधी को मार दिया?"

शेर बोला — "नहीं, मैं उसको नहीं मार सका। बल्कि वह मुझे ठोकर मार कर चली गयी। हालॉकि मैं अभी ज़्यादा ताकतवर नहीं हूँ फिर भी मैंने भी उसकी खूब धुनाई की।"

बड़ा खरगोश बोला — "कोई बात नहीं। इस बात के लिये तुम अपने आपको दोष मत दो। मैं फिर देखूँगा।"

फिर खरगोश काफी दिनों तक इन्तजार करता रहा जब तक कि शेर और गधी दोनों ही ठीक नहीं हो गये।

एक दिन खरगोश ने फिर पूछा — "क्या कहते हो सिम्बा शेर? अब ले आऊँ उस गधी को?"

शेर बोला — "हॉ अब ले आओ तुम उसको। अबकी बार मैं उसको फाड़ कर रख दूँगा।"

सुन कर खरगोश फिर जंगल की तरफ चला गया।

गधी ने खरगोश को अपने घर में बुलाया और उससे जंगल की खबर पूछी। खरगोश बोला — "तुम्हारे प्रेमी ने तुमको फिर बुलाया है, चलो।"

पूँडा बोली — "उस दिन तुम मुझे उसके पास ले गये थे न। उसने मुझे बहुत खरोंचा। अब तो मुझे उसके पास जाते में भी डर लगता है।"

खरगोश बोला — "श श श। वह तो उसके तुमको सहलाने का एक ढंग था। वह तो तुमको बहुत प्यार करता है।"

गधी बोली — "अच्छा? तो चलो मैं फिर से चल कर देखती हूँ।"

सो वे दोनों फिर शेर के पास चले। जैसे ही शेर ने उनको आते देखा तो वह गधी के ऊपर उछला और अबकी बार उसने उस गधी के दो टुकड़े कर दिये।

फिर शेर ने खरगोश से कहा — "यह मॉस ले जाओ और इसे भून कर ले आओ। और देखो, मुझे तो केवल इसका कलेजा और कान चाहिये।"

खरगोश बोला "ठीक है" और गधी को ले कर चला गया।

उसने मॉस को एक ऐसी जगह ले जा कर भूना जहॉ शेर उसको देख नहीं सकता था।

उसने गधी का कलेजा और कान निकाल कर एक तरफ रख दिये। बचे हुए मॉस में से उसने पेट भर कर मॉस खाया और फिर उसमें से भी जो बचा वह उठा कर रख दिया। इतने में ही शेर आ गया और उसने गधी का कलेजा और कान मॉगे।

खरगोश बोला — "कलेजा और कान? वे कहॉ हैं?"

शेर गुर्राया — "क्या मतलब?"

खरगोश हँसा और बोला — "मैंने तुम्हें बताया तो था कि वह धोबी की गधी थी।"

शेर बोला — "तो इससे क्या होता है। क्या धोबी की गधी के कलेजा और कान नहीं होते?"

खरगोश अपने सिर पर हाथ मार कर बोला — "तुम इतने बड़े हो गये सिम्बा और तुमको अभी तक यह पता नहीं चला कि अगर इसके कलेजा और कान होते तो क्या यह दोबारा तुम्हारे पास आती?"

यह तो शेर ने कभी सोचा ही नहीं था। शेर को खरगोश पर विश्वास हो गया कि इस धोबी की गधी के कलेजा और कान तो थे ही नहीं।

सो कीमा बन्दर ने शार्क से कहा — "क्या तुम मुझे धोबी की गधी समझते हो? जाओ जाओ और अपने घर चले जाओ। अब तुम मुझे कभी नहीं पा सकते और हमारी तुम्हारी दोस्ती भी खत्म।"

22 खरगोश और शेर[78]

चालाक खरगोश की एक और लोक कथा अफ्रीका के तनज़ानिया देश के ज़ंज़ीबार द्वीप समूह पर कही सुनी जाने वाली।

एक दिन सूँगूरा[79] बड़ा खरगोश खाने की खोज में जंगल में इधर उधर घूम रहा था कि उसने कैलेबाश[80] के एक पेड़ की बड़ी बड़ी डालियों के बीच में से पेड़ के तने के ऊपरी हिस्से में एक बहुत बड़ा छेद देखा। उस छेद में मधुमक्खियाँ रह रही थीं।

यह देख कर वह तुरन्त ही शहर भागा गया ताकि वह किसी को वहाँ से ला सके जो उसको उन मधुमक्खियों के शहद के छत्ते से शहद निकालने में सहायता कर सके।

जब वह बूकू[81] चूहे के पास से गुजरा तो बूकू चूहे ने उसे अपने घर बुलाया। सूँगूरा बड़ा खरगोश उसके घर चला गया और बैठ गया।

---

[78] The Hare and the Lion – a folktale from Zanzibar. Taken from Taken from the Book "Zanzibar Tales" by George W Bateman. 1901. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com .

[79] Soongoora Hare – in Eastern and Southern African countries Hare's name is Soongooraa. Hare is a rabbit like animal but is bigger than it.

[80] Calabash is a dried outer cover of a pumpkin like fruit which can be used to keep dry or wet things. See the picture of such a tree above.

[81] Bookoo Rat

बातों बातों में उसने बूकू चूहे को बताया कि मेरे पिता चल बसे हैं और मेरे लिये एक छत्ते में शहद छोड़ गये हैं। मैं यह चाहता हूँ कि तुम उसको खाने में मेरी सहायता करो।"

बूकू चूहा तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया और तुरन्त ही वह बड़े खरगोश के साथ शहद खाने के लिये चलने के लिये तैयार हो गया सो दोनों शहद खाने चल दिये।

वे लोग जब उस बड़े कैलेबाश के पेड़ के पास पहुँचे तो सूँगूरा बड़े खरगोश ने बूकू चूहे को मधुमक्खी के छत्ते को दिखा कर उसकी तरफ इशारा किया और उससे कहा "देखो वह रहा शहद। चलो पेड़ पर चढ़ते हैं।"

दोनों ने कुछ भूसा लिया और उस छत्ते की तरफ चढ़ने लगे। छत्ते के पास पहुँच कर उन्होंने वह भूसा जलाया। उसके धुँए से वे मधुमक्खियाँ भाग गयीं। उन्होंने फिर आग बुझा दी और शहद खाने बैठे।

जब वे शहद खा रहे थे तो ज़रा सोचो वहाँ कौन आ गया? सिम्बा शेर[82]। और भला कौन आ सकता था? क्योंकि वह पेड़ और उसमें लगा शहद तो सिम्बा शेर का ही था न। सिम्बा शेर ने ऊपर देखा और उनको कुछ खाते देखा तो पूछा — "तुम कौन हो?"

सूँगूरा बड़ा खरगोश बूकू चूहे के कान में फुसफुसाया — "चुप रहना। यह बूढ़ा बहुत ही खब्ती है।"

[82] Simba Lion – in Eastern and Southern African countries lion's name is Simba

सिम्बा शेर को जब कुछ देर तक कोई जवाब नहीं मिला तो वह फिर चिल्लाया — "तुम कौन हो भाई बोलते क्यों नहीं? मैं कहता हूँ बोलते क्यों नहीं कि तुम कौन हो?"

यह सब सुन कर बूकू चूहा तो बहुत डर गया सो वह बोल पड़ा — "यहाँ केवल हम हैं।"

सूँगूरा बड़ा खरगोश बूकू चूहे से बोला — "अब जब तुम बोल ही पड़े हो तो पहले तुम मुझे यहाँ इस भूसे में छिपा दो और फिर शेर को बोलो कि मैं भूसा नीचे फेंक रहा हूँ वह यहाँ से हट जाये। फिर तुम मुझे नीचे फेंक देना तब देखना कि क्या होता है।"

सो बूकू चूहे ने सूँगूरा बड़े खरगोश को तो भूसे में छिपा दिया और फिर सिम्बा शेर से बोला — "यहाँ से हट जाओ मैं यह भूसा नीचे फेंक रहा हूँ। और फिर मैं खुद भी नीचे आता हूँ।"

सो सिम्बा शेर एक तरफ को हट गया और बूकू चूहे ने वह भूसा नीचे फेंक दिया। इस बीच सिम्बा शेर ऊपर ही देखता रहा और खरगोश भूसे के ढेर में से निकल कर भाग गया।

एक दो मिनट तक तो सिम्बा ने इन्तजार किया पर जब बूकू चूहा पेड़ पर से नहीं उतरा तो वह फिर चिल्लाया — "अच्छा अब तुम नीचे आओ।"

चूहे के पास अब कोई ऐसा आदमी नहीं था जिससे वह कुछ सहायता ले सकता सो वह नीचे उतर आया।

जैसे ही चूहा शेर की पहुँच में आया तो शेर ने उसको पकड़ लिया और पूछा — "तुम्हारे साथ ऊपर कौन था?"

बूकू चूहा काँपते हुए बोला — "क्या बात है? मेरे साथ सूँगूरा बड़ा खरगोश था। जब मैंने उसको नीचे फेंका था तब तुमने उसको नहीं देखा था क्या?"

सिम्बा शेर बोला — "नहीं तो।" और फिर वह तुरन्त ही उस चूहे को खा गया।

चूहे को खा कर सिम्बा शेर ने सूँगूरा बड़े खरगोश को इधर उधर ढूँढने की बहुत कोशिश की पर वह तो उसको कहीं दिखायी ही नहीं दिया सो वह वहाँ से चला गया।

तीन दिन बाद सूँगूरा बड़ा खरगोश कोबे[83] कछुए के पास गया और उससे बोला — "चलो थोड़ा शहद खा कर आते हैं।"

कोबे कछुए ने पूछा किसका शहद है?

सूँगूरा बड़ा खरगोश बोला मेरे पिता का है।

कोबे कछुआ बोला तब तो ठीक है मैं जरूर खाऊँगा और दोनों शहद खाने चल दिये।

जब वे उस कैलेबाश के पेड़ के पास पहुँचे तो अपना अपना भूसा ले कर वे ऊपर चढ़े। भूसे में आग लगायी और उसके धुँए से जब मक्खियाँ भाग गयीं तो वे दोनों शहद खाने बैठे।

[83] Kobay Tortoise

तभी सिम्बा शेर वहॉ आ गया और नीचे से चिल्लाया — "ऊपर कौन है?"

सूँगूरा बड़े खरगोश ने कोबे कछुए से कहा — "चुपचाप बैठे रहना बोलना नहीं।"

पर जब सिम्बा शेर दोबारा चिल्लाया तो कोबे कछुए को कुछ शक हुआ वह बोला — "मैं तो बोलूँगा। तुमने कहा था कि शहद तुम्हारा है पर मेरा शक सही निकला कि यह शहद तुम्हारा नहीं है यह शहद तो सिम्बा शेर का लगता है।"

सो जब सिम्बा शेर ने दोबारा पूछा कि तुम कौन हो तो कोबे कछुए ने जवाब दिया — "यहॉ तो केवल हम हैं।"

शेर बोला — "तो नीचे आओ।"

कोबे कछुआ बोला — "आते हैं।"

जिस दिन से सिम्बा शेर ने बूकू चूहे को पकड़ा था और उसके हाथ से सूँगूरा बड़ा खरगोश निकल कर भाग गया था उस दिन से वह उसी की तलाश में था। उसको आज भी यही शक था कि कोबे कछुए के साथ वह खरगोश भी होगा सो उसने अपने आपसे कहा "आहा, आज मैंने उसे पकड़ लिया।"

अपने आपको पकड़ा जाता देख कर सूँगूरा बड़े खरगोश ने कोबे कछुए से कहा — "तुम मुझे भूसे में लपेट दो और शेर को रास्ते में से हट जाने को बोलो। जब वह रास्ते में से हट जाये तो

तुम मुझे नीचे फेंक देना। मैं नीचे तुम्हारा इन्तजार करूँगा। वह तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता यह तुम जानते हो।"

कोबे कछुआ बोला ठीक है। पर जब वह खरगोश को भूसे में लपेट रहा था तो उसने सोचा कि लगता है इस तरीके से यह भाग जाना चाहता है और मुझे शेर का गुस्सा सहन करने के लिये यहाँ छोड़ जाना चाहता है। मैं कुछ ऐसा करता हूँ कि पहले यह पकड़ा जाये।"

कोबे कछुए ने सूँगूरा बड़े खरगोश की एक गठरी बनायी और वह उसे नीचे फेंकते फेंकते बोला — "ओ सिम्बा शेर, लो यह सूँगूरा बड़ा खरगोश आ रहा है।" और यह कहते हुए वह गठरी उसने नीचे फेंक दी।

सिम्बा शेर तो पहले से ही सूँगूरा बड़े खरगोश की तलाश में था सो जैसे ही सूँगूरा बड़ा खरगोश नीचे गिरा सिम्बा शेर ने उसको अपने पंजे में पकड़ लिया और बोला — "अब बताओ मैं तुम्हारा क्या करूँ?"

सूँगूरा बड़ा खरगोश बोला — "देखो सिम्बा शेर, तुम मुझे ऐसे ही खाने की कोशिश मत करना क्योंकि मैं बहुत सख्त हूँ।"

सिम्बा शेर बोला — "तब बताओ मैं तुम्हारा क्या करूँ?"

सूँगूरा बड़ा खरगोश बोला — "मेरे ख्याल में तुमको पहले मुझे मेरी पूँछ से पकड़ कर पहले घुमाना चाहिये और फिर जमीन पर पटकना चाहिये तभी तुम मुझे खा सकोगे।"

शेर उसकी बातों में आ गया। उसने सूँगूरा बड़े खरगोश को उसकी पूँछ से पकड़ा, हवा में घुमाया और उसको जमीन पर मारने ही वाला था कि खरगोश उसके हाथ से फिसल गया और भाग गया। और इस तरह बेचारे सिम्बा शेर ने उसे फिर से खो दिया।

गुस्से और नाउम्मीदी से वह फिर पेड़ की तरफ आया और कोबे कछुए से बोला — "अब तुम नीचे आ जाओ।"

कोबे कछुआ बेचारा नीचे उतर आया। शेर ने जब कोबे कछुए को देखा तो बोला — "तुम तो बहुत ही सख्त हो। मैं तुमको खाने के लायक बनाने के लिये क्या करूँ।"

कोबे कछुआ हँसा और बोला — "यह तो बहुत आसान है। तुम मुझे कीचड़ में रख दो और अपने पंजे से मेरी पीठ रगड़ते रहो जब तक कि मेरा यह सख्त खोल निकल न जाये। बस फिर मेरा मुलायम हिस्सा रह जायेगा तब तुम उसको आसानी से खा सकते हो।"

यह सुनते ही सिम्बा शेर कोबे कछुए को पानी के पास ले गया और उसको कीचड़ में रख दिया। जैसा कि उसको कहा गया था उसने अपने पंजे से कोबे की पीठ सहलानी शुरू की।

पर कुछ ही देर में कोबे कछुआ तो पानी में खिसक गया और सिम्बा शेर अपने पंजों से एक पत्थर के टुकड़े को ही सहलाता रह गया जब तक कि उसके पंजे सपाट नहीं हो गये।

कुछ ही देर में उसने देखा कि उसके पंजों से तो खून निकल रहा था। सो इस बार सिम्बा शेर कछुए से भी मात खा गया।

उसने सोचा कि जो कुछ भी सूँगूरा बड़े खरगोश ने आज उसके साथ किया है वह उसका उसको मजा चखा कर ही रहेगा चाहे कुछ हो जाये। फिर वह अपने शिकार के लिये निकल पड़ा।

सिम्बा शेर तुरन्त ही सूँगूरा बड़े खरगोश की तलाश में निकल पड़ा। जैसे जैसे वह आगे बढ़ता जाता वह हर एक से सूँगूरा बड़े खरगोश के बारे में पूछता जाता था — "सूँगूरा बड़े खरगोश का घर कहाँ है? सूँगूरा बड़े खरगोश का घर कहाँ है?"

पर जिससे भी उसने पूछा उसी ने उसको यह जवाब दिया कि उसको नहीं पता कि सूँगूरा बड़े खरगोश का घर कहाँ है।

ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि सूँगूरा बड़े खरगोश ने अपनी पत्नी समेत वह घर छोड़ दिया था जिसमें वह रहता था और वह कहीं और चला गया था और उसका नया घर किसी को पता नहीं था। सो कोई नहीं जानता था कि सूँगूरा खरगोश वहाँ से कहाँ चला गया।

पर आज सिम्बा शेर भी उसको छोड़ने वाला नहीं था सो उसने भी हार नहीं मानी। वह तब तक लोगों से पूछता गया पूछता गया जब तक एक आदमी ने यह नहीं कहा — "वह रहा सूँगूरा बड़े खरगोश का घर, उस पहाड़ी के ऊपर।"

बस फिर क्या था सिम्बा शेर चढ़ गया पहाड़ी के ऊपर। तो वहाँ एक मकान तो था पर उस मकान के अन्दर कोई नहीं था। पर इससे भी उसको कोई परेशानी नहीं हुई।

उसने सोचा "मैं यहीं इस मकान के अन्दर छिपता हूँ और सूँगूरा बड़े खरगोश और उसकी पत्नी का इन्तजार करता हूँ। वे जब यहाँ आयेंगे तब मैं उन दोनों को खा लूँगा।" और यह सोच कर वह वहीं उसके घर में छिप कर बैठ गया और उनका इन्तजार करने लगा।

जल्दी ही सूँगूरा खरगोश और उसकी पत्नी अपने घर वापस लौटे। उन्होंने सोचा ही नहीं था कि वहाँ कोई खतरा हो सकता है मगर खरगोश तो बहुत चालाक होता है। उसने अपने घर के आस पास शेर के पंजों के निशान देख लिये।

उसने अपनी पत्नी से कहा — "प्रिये, तुम यहाँ से वापस चली जाओ। मैंने अपने घर के आस पास शेर के पंजों के निशान देखे हैं। ऐसा लगता है कि वह मुझे ढूँढ रहा है।"

पर खरगोश की पत्नी बोली — 'प्रिय, मैं तुमको इस कठिनाई के समय में अकेला छोड़ कर नहीं जा सकती। मैं तुम्हारे साथ ही रहूँगी।"

हालाँकि अपनी पत्नी के ये प्यार भरे शब्द सुन कर सूँगूरा बड़ा खरगोश बहुत ही खुश हुआ लेकिन फिर भी वह उससे बोला — "नहीं प्रिये, तुम जाओ। तुम्हारे दोस्त हैं तुम उनके पास चली

जाओ। मैं उस शेर के बच्चे को धोखा दे कर अभी आता हूँ।" सो उसने पीछे पड़ कर अपनी पत्नी को वहाँ से वापस भेज दिया।

उसके जाने के बाद सूँगूरा बड़ा खरगोश सिम्बा शेर के पंजों के निशानों को देखता आगे चला तो उसको पता चला कि वे निशान तो उसके मकान तक जा रहे हैं। उसने सोचा तो शेर जी मेरे मकान में छिपे बैठे हैं।

उसने एक तरकीब लगायी। वह कुछ दूर पीछे हटा और ज़ोर से चिल्लाया — "ओ मेरे घर, तुम कैसे हो?"

सिम्बा शेर ने सोचा कि अरे घर भी कहीं बोलता है क्या, लगता है कि यह बड़ा खरगोश तो पागल हो गया है। सो वह चुपचाप बैठा रहा।

जब सूगूँरा बड़ा खरगोश का घर कुछ देर तक नहीं बोला तो वह फिर ज़ोर से चिल्लाया — "यह बड़ी अजीब बात हे कि रोज मैं तुमसे अन्दर आने से पहले पूछता हूँ कि ओ मेरे घर तुम कैसे हो और तुम जवाब देते हो कि तुम कैसे हो पर आज तुम नहीं बोले। ऐसा क्यों? ऐसा लगता है कि अन्दर कोई है।"

जब सिम्बा शेर ने यह सब सुना तो सोचा कि शायद इसका घर बोलता होगा सो अबकी बार वह बोला — "तुम कैसे हो?"

यह सुन कर तो सूँगूरा खरगोश बहुत ज़ोर से हँस पड़ा और बोला — "ओह तो सिम्बा शेर तुम हो मेरे घर में? और मैं यह

यकीन के साथ कह सकता हूँ कि यहाँ तुम मुझे खाने आये हो पर पहले तुम मुझे यह तो बताओ कि तुमने कहीं किसी घर को बोलते सुना है?"

सिम्बा शेर ने देखा कि वह तो सूगूँरा बड़े खरगोश के हाथों एक बार फिर बेवकूफ बन चुका है। पर फिर भी वह गुस्से में भर कर बोला — "तुम बस तब तक अपनी खैर मनाओ जब तक मैं तुमको पकड़ नहीं लेता।"

सूगूँरा खरगोश बोला — "मुझे लगता है कि यह इन्तजार तो तुमको बहुत दिनों तक करना ही पड़ेगा।" और यह कह कर वह वहाँ से भाग लिया। शेर उसके पीछे पीछे भागा।

पर इससे कोई फायदा नहीं था क्योंकि सिम्बा शेर सूँगूरा खरगोश से थक चुका था। वह उसके पीछे बहुत देर तक नहीं भाग सका। सो वह अपने घर अपने कैलेबाश के पेड़ के नीचे आ गया और आ कर लेट गया। वह बहुत थक गया था सो लेटते ही सो गया।

23 खरगोश का बदला[84]

खरगोश की यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के ज़ाम्बिया देश में कही सुनी जाती है।

एक बार वसन्त के मौसम में एक भैंसा अपनी सालाना हाजिरी लगाने के लिये अपने सरदार शेर के पास जा रहा था। यह वहाँ के देश का कानून था कि वसन्त के मौसम में सब जानवर अपने सरदार के दरबार में हाजिरी लगाने जाया करते थे।

तो उस दिन रास्ते में सड़क के किनारे उसको बड़ा खरगोश[85] घूमता हुआ मिल गया। उसने बड़े खरगोश से कहा — "चलो बड़े खरगोश भाई, शेर को मिलने चलते हैं।"

बड़े खरगोश ने जवाब दिया — "नहीं भैंसे भाई, मुझे शेर पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं है। वह बहुत ही बड़ा और भयानक जीव है और मुझे डर है कि वह मुझे खा जायेगा। नहीं नहीं, मैं तुम्हारे साथ उसके यहाँ नहीं जा सकता।

भैंसा बोला — "पर खरगोश भाई, राजा शेर मेरा तो बहुत ही अच्छा दोस्त है और वह मेरी सुनेगा भी। मैं तुमसे वायदा करता हूँ

---

[84] The Hare's Revenge – a folktale from Zambia, Southern Africa.
Adapted from the Book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com . Retold by Phyllis Savory

[85] Translated for the word "Hare". It is a little bigger than the ordinary rabbit. See its picture above.

कि वह तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा। तुम चलो तो मेरे साथ।"

बड़े खरगोश ने पूछा — "भैंसे भाई, पर तुम मुझे अपने साथ क्यों ले जाना चाहते हो?"

भैंसा बोला — "बात यह है कि मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी यह सोने वाली चटाई ले चलो। यह ठीक नहीं है कि मुझ जैसा बड़ा जानवर अपनी सोने वाली चटाई भी अपने आप ही ले कर जाये। तुम चिन्ता न करो मैं तुमको इसका भरपूर इनाम दूँगा।"

बड़ा खरगोश बोला — "तब ठीक है भैंसे भाई, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। अपनी सोने वाली चटाई मुझे दे दो मैं उसको ले चलता हूँ।"

भैंसे ने अपनी सोने वाली चटाई बड़े खरगोश के कन्धों पर रख दी और वे दोनों शेर के गॉव की तरफ चल दिये।

सूरज बहुत गर्म था और भैंसे की सोने वाली चटाई बहुत भारी थी सो बड़ा खरगोश उस सोने वाली चटाई को ले जाते ले जाते थक गया।

वह बोला — "ओ मेरे दोस्त, इस बोझे को ले जाने में सहायता करो। मै बहुत ही छोटा हूँ और तुम्हारी यह चटाई तो बहुत ही भारी है।"

"शिकायत करना छोड़ो खरगोश। तुम बहुत ही आलसी आदमी हो।" भैंसा इतनी ज़ोर से गुर्राया कि बड़ा खरगोश तो इतना डर

गया कि इसके आगे वह कुछ और बोल ही नहीं सका। वह चुपचाप भैंसे के पीछे पीछे चलता रहा।

दोपहर को भैंसा आराम करने के लिये एक पेड़ की छाया में लेट गया तो बड़े खरगोश ने भी अपना बोझा नीचे रख दिया। सूरज बहुत ही तेज़ चमक रहा था।

जब बड़ा खरगोश आराम कर रहा था तो एक हनी चिड़िया[86] उनके रास्ते से उड़ कर गयी और एक मधुमक्खी के छत्ते को लूटने के लिये उनको बुलाने लगी जो वहाँ पास में ही लगा हुआ था।

बड़े खरगोश को शहद बहुत अच्छा लगता था सो पैरों में दर्द होने के बावजूद वह उस चिड़िया के पास चला गया। वह छत्ता जमीन के ऊपर उस पेड़ के नीचे की तरफ लगा हुआ था।

उसने वह छेद खोल लिया और उसमें से जितना शहद हो सकता था खा लिया और उसके बाद वह अपने उसी पेड़ के नीचे अपनी आगे की यात्रा शुरू करने के लिये लौट आया।

लेकिन तभी भैंसे की आँख खुल गयी और उसने अपनी सोने वाली भारी चटाई फिर से बड़े खरगोश के कन्धों पर रख दी। वह बोला — "हमें जल्दी करनी चाहिये वरना हम अँधेरा होने से पहले शेर के गाँव तक नहीं पहुँच पायेंगे।"

---

[86] Honey bird whose most species are found in Africa. See the picture of its one species above. Honey birds fly automatically towards the beehives.

जब वे जा रहे थे तो बड़े खरगोश के दिमाग में एक विचार आया। वह मधुमक्खी के छत्ते की तरफ लौट पड़ा।

भैंसा बोला — "अरे तुम कहाँ जा रहे हो?"

बड़ा खरगोश बोला — "मैंने सोचा कि मैं यह छोटा सा कैलेबाश[87] शहद से भर लूँ ताकि हम इसको रास्ते में खा कर अपनी ताकत बढ़ा सकें। तुम चलो दोस्त, मैं आता हूँ।"

सो भैंसा अपने रास्ते पर चल पड़ा और बड़ा खरगोश अपने रास्ते पर। पर बड़ा खरगोश भैंसे के इस बर्ताव से और ज़्यादा से ज़्यादा होशियार होता जा रहा था। उसने भैंसे को सजा देने की तरकीब सोच ली थी।

उसने अपना वह छोटा सा कैलेबाश शहद से भर लिया और वह सोने वाली चटाई खोल ली। उसमें उसने बहुत सारी मधुमक्खियाँ भर लीं और फिर उस चटाई को लपेट लिया।

इसके बाद वह भैंसे के पीछे दौड़ गया और तुरन्त ही उसको पकड़ लिया और वे दोनों फिर पहले की तरह आगे बढ़ते रहे।

जब तक वे शेर के गाँव पहुँचे चटाई उठाये उठाये बड़े खरगोश के कन्धे दुखने लगे थे और उनमें ज़ख्म भी हो गये थे पर उसने कुछ कहा नहीं। शेर ने भी उन दोनों की बड़े प्रेम से आवभगत की।

---

[87] Calabash is the dried outer cover of fruit like pumpkin which can be used to keep wet or dry things. It is very popularly used in African countries. See its picture above.

उसने उन दोनों को खाना खिलाया और फिर एक झोंपड़ी दिखा दी जहाँ वे अपनी रात गुजार सकते थे। बड़ा खरगोश बोला कि वह बाहर घास पर सोना ज़्यादा पसन्द करेगा क्योंकि उस दिन अन्दर बहुत गर्मी थी।

भैंसा बोला — "ठीक है जैसे तुमको अच्छा लगे। मैं तो आराम से झोंपड़ी में ही सोऊँगा। हाँ जब तुम बाहर जाओ तो दरवाजा ठीक से बन्द करते जाना।"

यह सुन कर बड़ा खरगोश बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी रोक सका। जाते समय उसने उस झोंपड़ी के दरवाजे को इतनी ज़ोर से बन्द कर दिया था कि भैंसे जैसे ताकतवर जानवर को भी उसको खोलने में बहुत देर लगती।

उसके बाद बड़ा खरगोश अपनी तरकीब को कामयाब होते देखने के लिये एक पेड़ के पीछे छिप कर लेट गया।

कुछ ही देर में झोंपड़ी के अन्दर से चिल्लाने की आवाजें आने लगीं। भैंसा चिल्ला रहा था — मधुमक्खियाँ, मधुमक्खियाँ।

और फिर दरवाजे को ज़ोर ज़ोर से पीटने की आवाज भी सुनायी दी — "मुझे बाहर निकालो। ओह ये मधुमक्खियाँ।"

क्योंकि जैसे ही भैंसे ने अपना सोने की चटाई खोली कि उस चटाई में भरी मधुमक्खियाँ गुस्से से उसके ऊपर बैठ गयीं और उसके सिर और शरीर पर काटने लगीं।

आखिर शेर ने भी भैंसे की चिल्लाहट सुनी। जैसे ही उसने अपने दोस्त को बचाने के लिये उस झोंपड़ी का दरवाजा तोड़ा तो भैंसा उसमें से निकल कर भागा और उसके पीछे पीछे भागीं मधुमक्खियॉ। उन मक्खियों ने रात में शेर के ऊपर भी हमला कर दिया।

जब मक्खियों का ज़ोर कुछ कम हुआ तो शेर ने भैंसे से पूछा — "क्या हुआ मेरे दोस्त?"

भैंसा भुनभुनाया — "यह सब उस खरगोश की करामात है। उस बदमाश ने मेरी सोने की चटाई में मधुमक्खियॉ भर दीं। मैं उसको इसकी सजा जरूर दूँगा। कहॉ है वह?"

पर तब तक तो खरगोश यह जा और वह जा। उसके बाद भी वह भैंसे को और अच्छे सबक सिखाता रहा।

24 बड़े खरगोश की कहानी[88]

एक बार की बात है कि जानवरों ने एक बार अपना एक क्राल[89] बनाया और उसमें कुछ चर्बी रख दी। उन्होंने यह तय किया कि उनमें से एक जानवर उसकी रखवाली के लिये उसके फाटक पर खड़ा रहेगा।

पहला जानवर जो उन्होंने वहॉ का पहरेदार रखा वह था कोनी[90] यानी खरगोश। वह वहॉ की पहरेदारी के लिये राजी हो गया सो वह तो वहॉ पहरा देने लगा और बाकी जानवर वहॉ से चले गये।

कुछ देर तक तो खरगोश ने पहरा दिया पर फिर उसे नींद आ गयी सो वह गहरी नींद सो गया। उसी समय एक बहुत बड़ा सा भेड़िया[91] वहॉ आया और जानवरों का सारी चर्बी जो उन्होंने वहॉ इकट्ठी कर के रखी थी वह सब खा गया। चर्बी खाने के बाद उसने खरगोश पर एक छोटा सा पत्थर फेंका।

---

[88] The Story of Hare – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft24.htm
[My Note : This story seems to be one of the very popular South Africa's folktales as it is given on other Web Sites also : http://www.gateway-africa.com/stories/Inkalimeva_and_the_Hare.html]

[89] Kraal is small village of a few huts surrounded by a wall – see its picture above. It is very common in South Africa in Zulu Tribe.

[90] Coney means rabbit.

[91] Translated for the word "Inkalimeva" – it is a mythical folktale animal in South African folktales (Xhosa Mythology) pronounced as "Inkalimve", mostly depicted as a wolf.

तो खरगोश चौंक कर जाग गया और चिल्लाया — "सारे जानवरों की जमा की गयी चर्बी तो यह भेड़िया ही खा गया।" ऐसा वह कई बार चिल्लाया और बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाया।

जानवर कुछ दूरी पर थे। उन्होंने जब खरगोश का चिल्लाना सुना तो वे काल की तरफ भागे और जब उन्होंने देखा कि उनकी सारी चर्बी चली गयी है तो उन्होंने खरगोश को मार दिया।

उन्होंने दूसरी बार चर्बी काल में रखी और फिर एक और जानवर को वहॉ का पहरेदार रखा। वह जानवर भी पहरेदारी के लिये तैयार हो गया सो बाकी जानवर उसको वहॉ छोड़ कर अपने अपने घर चले गये।

कुछ देर बाद वह भेड़िया फिर उस काल में आया। इस बार वह अपने साथ शहद भी लाया था। उसने काल के फाटक के पहरेदार को शहद खाने के लिये बुलाया और जब वह जानवर शहद खाने का आनन्द ले रहा था तो वह अन्दर गया और जानवरों की सारी चर्बी चुरा ली।

उसने फिर से उस पहरेदार जानवर पर एक छोटा सा पत्थर फेंका तो उसने अपना सिर उठा कर देखा तो वह पहरेदार भी चिल्लाया — "सारे जानवरों की जमा की गयी चर्बी तो यह भेड़िया ही खा गया।" ऐसा वह कई बार चिल्लाया और बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाया।

उसकी चिल्लाना सुन कर सारे जानवर फिर से वहॉ दौड़े आये और उन्होंने उस पहरेदार जानवर को भी मार डाला।

उन्होंने चर्बी फिर तीसरी बार काल में रखी और अबकी बार तीसरे जानवर को उसका पहरा सौंपा। उसने भी पहरा देना स्वीकार किया और दूसरे जानवर उसको वहॉ छोड़ कर चले गये।

कुछ देर बाद फिर से भेड़िया आया और उसने उस पहरेदार जानवर से कहा कि वे लुका छिपी का खेल खेलेंगे। पहरेदार तैयार हो गया तो भेड़िया तो छिप गया और पहरेदार जानवर उसको ढूँढता फिरा पर वह उसको कहीं मिला ही नहीं।

यहॉ तक कि वह उसको ढूँढते ढूँढते थक गया। जब वह थक गया तो वह लेट गया और सो गया। जब वह पहरेदार जानवर सो गया तो भेड़िये ने जानवरों की सारी चर्बी खा ली। पहले की तरह से फिर उसने एक छोटा सा पत्थर पहरेदार जानवर को फेंक कर मारा जिससे उसकी ऑख खुल गयी।

वह पहरेदार भी चिल्लाया — "सारे जानवरों की जमा की गयी चर्बी तो यह भेड़िया ही खा गया।" ऐसा वह कई बार चिल्लाया और बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाया।

उसकी चिल्लाना सुन कर सारे जानवर फिर वहॉ दौड़े आये और उन्होंने उस पहरेदार जानवर को भी मार डाला।

उन्होंने चौथे दिन फिर से चर्बी अपने काल में रखी और अबकी बार नीले हिरन[92] को उसकी पहरेदारी सौंपी। नीले हिरन ने भी यह पहरेदारी स्वीकार की सो वह तो चर्बी की पहरेदारी करने लगा और बाकी जानवर अपने अपने घर चले गये।

जब सारे जानवर चले गये तब भेड़िया फिर से वहाँ आया और नीले हिरन से बोला — "तुम यहाँ अकेले अकेले क्या कर रहे हो?"

तो नीला हिरन बोला — "मैं यहा जानवरों की रखी चर्बी पर पहरा दे रहा हूँ।"

भेड़िया बोला — "तो चलो मैं तुम्हारा साथ देता हूँ। हम दोनों एक दूसरे का सिर खुजाते हैं।"

नीला हिरन इस बात पर राजी हो गया सो दोनों वहाँ बैठ कर एक दूसरे का सिर खुजाने लगे जब तक कि नीला हिरन सो नहीं गया। उसके सोते ही भेड़िया उठा उसने वहाँ रखी सारी चर्बी खा ली। चर्बी खा कर उसने पहले की तरह से नीले हिरन को भी एक छोटा सा पत्थर मारा और चला गया।

पत्थर की मार से नीला हिरन भी जाग गया और चिल्लाया — "सारे जानवरों की जमा की गयी चर्बी तो यह भेड़िया ही खा गया।" ऐसा वह कई बार चिल्लाया और बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाया।

[92] Translated for the word "Bluebuck"

उसकी चिल्लाना सुन कर सारे जानवर वहॉ दौड़े आये और उन्होंने उस नीले हिरन को भी मार डाला।

उन्होंने पॉचवें दिन फिर से चर्बी अपने काल में रखी और अबकी बार उसकी पहरेदारी की जिम्मेदारी उन्होंने साही[93] को सौंपी। साही ने भी यह पहरेदारी स्वीकार की सो वह तो चर्बी की पहरेदारी करने लगा और बाकी जानवर अपने अपने घर चले गये।

जब सारे जानवर चले गये तब भेड़िया फिर से वहॉ आया और साही से बोला — "चलो हम लोग एक दौड़ दौड़ते हैं।"

दोनों ने एक दौड़ दौड़ी और भेड़िये ने साही को अपने आपको हरा देने दिया।

भेड़िया बोला — "मुझे नहीं लगता कि तुम काफी तेज़ दौड़ लेते हो पर चलो एक बार और दौड़ते हैं।"

सो वे दोनों दोबारा दौड़े और भेड़िये ने फिर से साही को जिता दिया। इस तरह वे दौड़ते ही रहे जब तक साही थक कर चूर नहीं हो गया।

आखिर साही बोला — "अब थोड़ा आराम करते हैं।"

सो दोनों थोड़ा आराम करने के लिये बैठ गये। साही काफी थका हुआ था सो वह तुरन्त ही सो गया। तब भेड़िया उठा और जानवरों की सारी चर्बी खा गया।

---

[93] Translated for the word "Porcupine". See its picture above.

चर्बी खा कर उसने पहले की तरह से फिर से पत्थर का एक छोटा सा टुकड़ा उठाया और साही को उससे मारा तो उसकी मार से वह जाग गया और चिल्लाया — "सारे जानवरों की जमा की गयी चर्बी तो यह भेड़िया ही खा गया।" ऐसा वह कई बार चिल्लाया और बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाया।

उसकी चिल्लाना सुन कर सारे जानवर फिर से वहाँ दौड़े आये और उन्होंने साही को भी मार डाला।

छठे दिन उन्होंने फिर से चर्बी अपने क़ाल में रखी और अबकी बार उसकी पहरेदारी की जिम्मेदारी उन्होंने बड़े खरगोश[94] को सौंपी।

पहले तो बड़े खरगोश ने यह पहरेदारी स्वीकार नहीं की। वह बोला — "खरगोश मर गया। दूसरा जानवर भी मर गया तीसरा जानवर भी मर गया नीला हिरन भी मर गया साही भी मर गया। तुम लोग क्या मुझे भी मारना चाहते हो?"

उन्होंने उससे वायदा किया कि वह उनकी पहरेदारी कर दे वे उसको नहीं मारेंगे। काफी न नुकुर के बाद वह चर्बी की पहरेदारी करने के लिये तैयार हो गया। सो वह तो चर्बी की पहरेदारी करने लगा और बाकी जानवर अपने अपने घर चले गये।

[94] Translated for the word "Hare" – see its picture above. Hare is rabbit-like animal but a little bigger than it.

जब सारे जानवर चले गये तब बड़ा खरगोश छिप कर लेट गया और सोने का बहाना करने लगा।

जल्दी ही भेड़िया फिर से वहाँ आया और अन्दर जा कर चर्बी खाने लगा तो तुरन्त ही बड़ा खरगोश चिल्लाया — "रुक जाओ। चर्बी को छोड़ दो।"

भेड़िया बोला — "बस मुझे बहुत थोड़ी सी खाने दो।"

बड़े खरगोश ने उसकी नकल बनाते हुए कहा — "बस मुझे बहुत थोड़ी सी खाने दो।"

उसके बाद वे दोनों साथी बन गये। बड़े खरगोश ने कहा — "चलो हम लोग एक दूसरे की पूँछ बाँध देते हैं। भेड़िया राजी हो गया। भड़िये ने बड़े खरगोश की पूँछ पहले बाँधी तो बड़ा खरगोश बोला — "मेरी पूँछ बहुत कस कर मत बाँधना।"

उसके बाद बड़े खरगोश ने भेड़िये की पूँछ बाँधी तो भेड़िया भी बोला — "मेरी पूँछ बहुत कस कर मत बाँधना।"

पर बड़े खरगोश ने उसकी इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। भेड़िये की पूँछ काफी कस कर बाँधने के बाद बड़े खरगोश ने अपना डंडा उठाया और उससे उसे मार दिया।

उसे मार कर बड़े खरगोश ने उसकी पूँछ खा ली पर उसका एक छोटा सा टुकड़ा दीवार के पीछे रख दिया। फिर वह चिल्लाया — "सारे जानवरों की जमा की गयी चर्बी तो यह भेड़िया ही खा

गया।" यह सुन कर सारे जानवर दौड़े दौड़े वहॉ आये और जब उन्होंने देखा कि भेड़िया तो वहॉ मरा पड़ा है तो वे बहुत खुश हुए।

उन्होंने बड़े खरगोश से उसकी पूँछ मॉगी ताकि वह उसे अपने सरदार को दिखा सकें तो बड़े खरगोश ने उनसे कहा कि जो भेड़िया उसने मारा था उसके कोई पूँछ नहीं थी।

वे बोले — "यह कैसे हो सकता है कि भेड़िये के कोई पूँछ ही न हो।"

सो उन्होंने उसकी पूँछ को आस पास में ढूँढना शुरू किया तो उनको उसकी पूँछ का एक छोटा सा टुकड़ा दीवार के पीछे छिपा हुआ मिल गया। उन्होंने अपने सरदार से जा कर कहा कि भेड़िये की पूँछ तो बड़े खरगोश ने खा ली।

सरदार ने कहा "उसको मेरे पास ले कर आओ।"

सारे जानवर बड़े खरगोश को पकड़ने के लिये दौड़े पर वह तो भाग गया था। वे उसको पकड़ ही नहीं सके। बड़ा खरगोश एक बिल में जा कर घुस गया था तो जानवरों ने उसको पकड़ने के लिये वहॉ एक जाल बिछा दिया और वहॉ से चले गये।

बड़ा खरगोश उस बिल में बहुत दिन तक रहा पर फिर किसी तरह से बिना जाल में फॅसे वह अपने बिल से बाहर निकल आया। वहॉ से निकल कर वह एक ऐसी जगह गया जहॉ एक नीला हिरन अपने लिये एक झोंपड़ी बना रहा था। वहीं उसके पास ही मॉस आग पर उबल रहा था।

उसने नीले हिरन से पूछा — "क्या मैं मॉस का एक छोटा सा टुकड़ा ले सकता हूँ?"

नीला हिरन बोला — "नहीं तुम ऐसा नहीं कर सकते।"

पर उसने उस बर्तन में से सारा मॉस निकाल लिया और खा लिया। फिर उसने एक खास तरीके से सीटी बजायी जिससे वहाँ ओलों की बारिश हो गयी जिसने नीले हिरन को मार दिया।

उसने नीले हिरन की खाल निकाल ली और अपने लिये उसकी खाल का एक शाल बना लिया।

उसके बाद वह लड़ने के लिये कुछ हथियार ढूँढने जंगल चला गया। जब वह एक डंडी काट रहा था तो कुछ बन्दरों ने उसके ऊपर पत्तियाँ फेंक दीं। उसने उनको नीचे आ कर उसे पीटने के लिये कहा। वे नीचे आये तो उसने उन सबको अपने हथियारों से मार दिया।

List of Stories of “Cunning Rabbit in Africa”

1. The Cunning Rabbit
2. Rabbit and the Grain House
3. Lion's Minister of State
4. The Gone Forever Tree
5. Mmutla and Phiri
6. Monkey and Rabbit Together
7. Guinea Fowl and Rabbit Get Justice
8. The Greatest Warrior of All
9. The Lion, the Hare and the Hyena
10. Sultan Sule
11. Tortoise and Hare
12. The Hunter and the Lion
13. Why Leopards Hunt Deer
14. How Rabbit Got Wisdom
15. The Mother in the clouds
16. The Hare and the Spirit
17. Cursed Curse
18. Hare's Dirty Tricks
19. Princess
20. The Lion, Hyena and the Rabbit
21. The Monkey, the Shark and the Washerman's Donkey
22. The Hare and the Lion
23. Hare's Revenge
24. The Story of Hare

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2020

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022